नवीन शिक्षा पद्धति पर आधारित एवं एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा
निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार

हिन्दी

भाग 4

लेखक :
अभिषेक अग्रवाल

- शिक्षाप्रद-कहानियाँ
- शब्दार्थ
- मौखिक एवं लिखित प्रश्न
- अभ्यास के लिए प्रश्न-पत्र

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

संशोधनकर्त्ता

डॉ0 राम कुमार

पी-एच0 डी0, एम0 ए0 (हिंदी)

विशाल जैन

एम0 ए0 (हिंदी)

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

हिन्दी

राष्ट्रभाषा हिंदी की पाठ्य-पुस्तक

वर्तमान में सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक व प्रयोगात्मक शिक्षा की सुदृढ़ता पर भी जोर दिया जा रहा है जिससे विकास के प्रत्येक क्षेत्र को स्थायित्व प्रदान किया जा सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) को प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को सबल बनाने और 'स्वयं करके सीखने' की अवधारणा को साकार करने पर जोर दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख अवयव

रचनात्मक और नवीनता (Creativity and Innovativeness)
नए विचारों को उत्पन्न करने तथा उन रचनात्मक विचारों को चरितार्थ करने में सहायता करना।

निरंतर समीक्षा (Continuous Review)
नियमित समीक्षा के द्वारा समझ को परखना तथा सीखी गई अवधारणा को सुदृढ़ करना।

संप्रेषण (Communication)
प्रभावी रूप से संप्रेषण करने योग्य बनाना

डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy)
शिक्षक-शिक्षार्थियों के बीच ऑनलाइन सहयोग को बढ़ाना

समस्या-समाधान और आलोचनात्मक सोच (Problem Solving and Critical Thinking)
मस्तिष्क को तेज करना तथा स्मरण शक्ति में वृद्धि करना।

अंतर-विषयक अधिगम (Inter-disciplinary Learning)
अध्ययन के विभिन्न विषयों को जोड़ना अथवा शामिल करना।

कला एकीकरण (Art Integration)
'कला के माध्यम' से और 'कला के साथ' सीखने हेतु छात्रों को प्रोत्साहित करना।

संगणनात्मक सोच (Computational Thinking)
तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ाना

जीवन-कौशल और मूल्य (Life skills and Values)
आत्म-विश्वास और नैतिक मूल्यों का समुचित विकास करना।

अनुभावनात्मक अधिगम (Experiential Learning)
'स्वयं करके सीखने' की प्रक्रिया में संलग्न करना, समूह भावना में वृद्धि करना तथा जोखिम लेने की क्षमता।

आपके लिए.....

'हिन्दी' नवीन हिन्दी पाठ्य-पुस्तकें बच्चों की अभिरुचियों एवम् उनके मानसिक स्तर के अनुकूल हैं तथा उन्हें प्रतिदिन के जीवन से जोड़ती हैं। हिन्दी श्रृंखला अपने नाम को सार्थक करती, भाषा को विस्तृत रूप देती एक ऐसी, अनूठी श्रृंखला है जो विद्यार्थियों का निश्चय ही बहुआयामी मार्ग प्रशस्त करेगी।

पाठशाला में प्रवेश लेते ही बच्चों को उसके वातावरण के साथ तालमेल बनाना होता है, जिससे वे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ सकें। पुस्तकें उनकी प्रिय मित्र बनें, इसे ध्यान में रखते हुए बच्चों की रुचि के अनुकूल विषयों का चयन किया गया है। जब विषय बच्चों की दुनिया से जुड़े हुए होते हैं तब उनसे बच्चों का परिचय स्वाभाविक ढंग से एवम् सरलता से हो जाता है। इन कक्षाओं में भाषा पर बल दिया जाता है; क्योंकि वर्णमाला सीखे बिना भाषा के लिखित रूप को सीख पाना संभव नहीं है। पढ़ना केवल वर्णमाला के अक्षरों और मात्राओं को रटना और जोड़-जोड़कर पढ़ना तथा लिखना ही नहीं अपितु इसके साथ-साथ सोच-समझ का विकास करना प्रस्तुत श्रृंखला का उद्देश्य है। भाषा-ज्ञान को सरल, सरस और रुचिकर बनाना भी अत्यंत आवश्यक है।

हिन्दी श्रृंखला की विशेषताएँ–

- भाषा-ज्ञान के लिए प्रस्तावित विविध पाठ्यक्रमों पर आधारित सरल और बोधगम्य विषयवस्तु।
- बच्चों के प्रतिदिन के अनुभवों से जुड़ी तर्कशक्ति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वृद्धि करने वाली रोचक विषयवस्तु।
- शिक्षार्थियों के स्तर के अनुरूप कविता, कहानी, घटना-वर्णन, नाटक आदि से परिचय; विषयवस्तु में विविधता और नवीनता।
- भाषा में रुचि बढ़ाने हेतु अतिरिक्त पाठ्य एवम बोधगम्य-सामग्री।
- सरल परिभाषाओं के अतिरिक्त व्याकरण के व्यावहारिक पक्ष की जानकारी हेतु प्रयास।
- अभ्यासों द्वारा जीने की कला सिखाना, मानवीय मूल्यों तथा स्वास्थ्यवर्धक आदतों पर विशेष दृष्टिकोण।
- विषय वस्तु को अधिक प्रभावपूर्ण रूप से समझाने के लिए अध्यापक बंधुओं हेतु कुछ शिक्षण-संकेत।
- प्रस्तुत श्रृंखला बच्चों के सर्वांगीण विकास में उपयोगी सिद्ध हो सकेगी; ऐसी हमारी आकांक्षा है और अपेक्षा भी।
- प्रबुद्ध शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों के अमूल्य सुझावों का सर्वदा स्वागत है।

–प्रकाशक

विषय-सूची

1.	प्रकृति की सीख	(कविता)	... 5
2.	शारीरिक अंगों की बहस	(कहानी)	... 9
3.	नारियल का प्रदेश	(कहानी)	... 15
4.	ऋतुओं पर बातचीत	(संवाद)	... 21
5.	माँ–बेटे का वात्सल्य	(कविता)	... 26
6.	कछुआ और हंस	(कहानी)	... 30
7.	न्यायमन्त्री	(कहानी)	... 35
8.	राष्ट्रीय ध्वज	(लेख)	... 42
9.	पक्का मित्र	(कहानी)	... 47
10.	जुम्मन शेख और अलगू चौधरी	(संवाद)	... 53
11.	दार्जिलिंग की सैर	(कहानी)	... 59
12.	गुरु महाराज का आगमन	(कहानी)	... 67
13.	महाराज कृष्णदेव राय	(कहानी)	... 74
14.	नदी और लता	(कविता)	... 80
15.	धर्मनिष्ठ ब्रह्मदत्त	(कहानी)	... 84
16.	विल्मा रूडोल्फ़	(कहानी)	... 89
17.	खरगोश के मित्र	(कहानी)	... 94
	एकता में बल	(केवल पठन हेतु)	... 99
	प्रश्न-पत्र–I		...101
	प्रश्न-पत्र–II		...103

प्रकृति की सीख 1
(कविता)

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो, क्या कहती है,
उठ-उठ, गिर-गिर तरल तरंग?
भर लो, भर लो अपने मन में
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

–सोहनलाल द्विवेदी

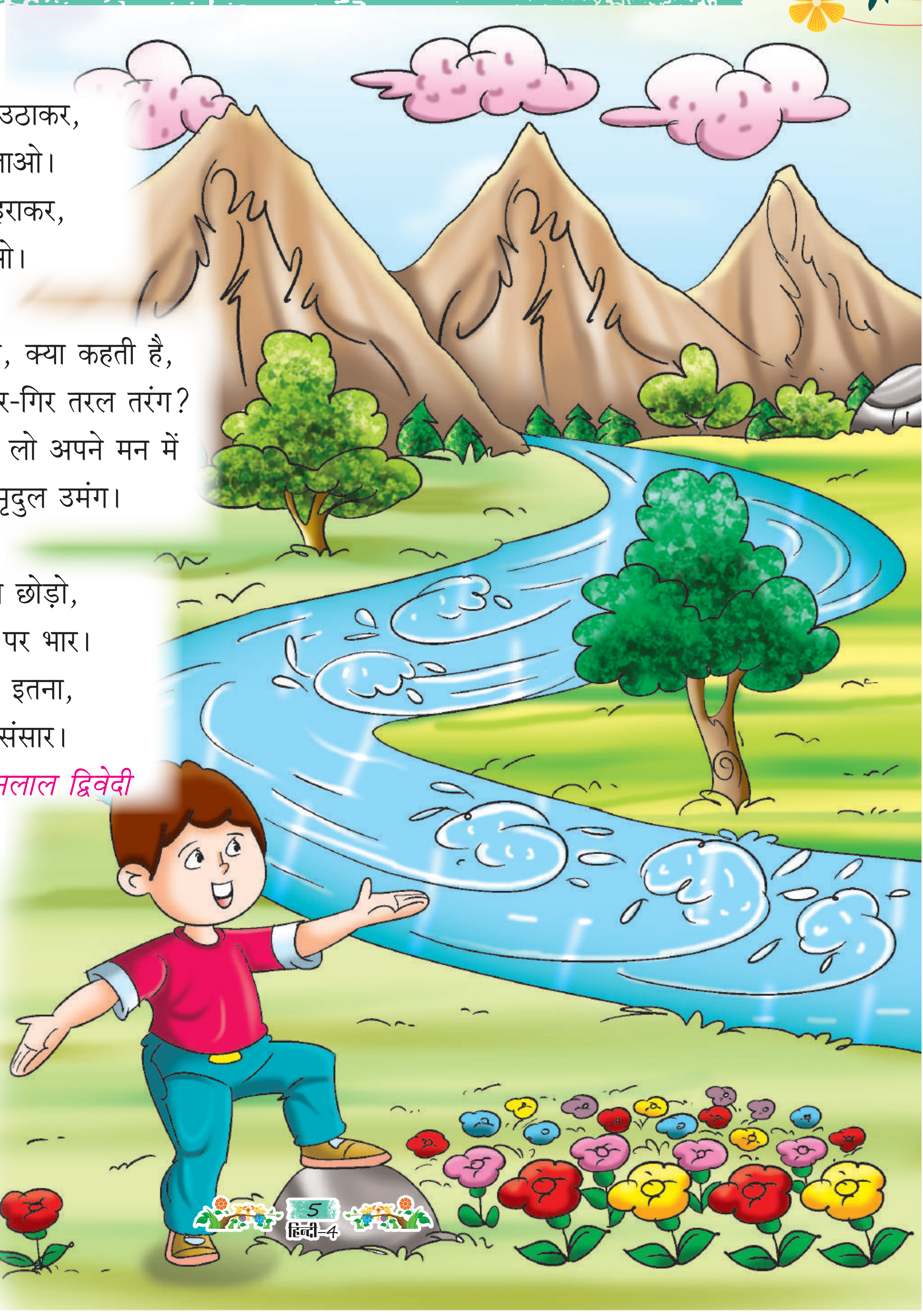

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

शीश = सिर (head); तरल = बहने वाला (liquid); तरंग = लहर (wave); मृदुल = मधुर (sweet); उमंग = खुशी (pleasure); धैर्य = धीरज (patience)।

श्रुतलेख (Dictation)

शीश, पर्वत, मृदुल, उमंग, धैर्य, गहराई

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) ऊँचा या बड़ा बनने की प्रेरणा कौन देता है?

(ख) तरल तरंग मन में कैसी उमंग भरने को कहती है?

(ग) 'ढक लो तुम सारा संसार' किसने कहा?

(घ) इस कविता के रचनाकार कौन हैं?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) 'ढक लो तुम सारा संसार' पंक्ति का क्या अर्थ है?

____

(ख) 'मन में गहराई लाओ' पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

____

(ग) 'मीठी-मीठी मृदुल उमंग' भरने से क्या अर्थ है?

____

(घ) सिर पर भार होते हुए भी क्या नहीं छोड़ना चाहिए?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) सागर क्या कहता है?

गहराई में जाओ ☐ गहराई मन में लाओ ☐ धैर्य नहीं छोड़ो ☐

(ख) मन में मीठी-मीठी मृदुल उमंग भरने को कौन कहता है?

सागर ☐ पर्वत ☐ तरल तरंग ☐

(ग) धैर्य न छोड़ने को कौन कहता है?

पृथ्वी ☐ आसमान ☐ सागर ☐

(घ) आसमान क्या कहता है?

सारा संसार ढक लो ☐ संसार को खुला छोड़ दो ☐ जेबें भर लो ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) पर्वत कहता ____________ उठाकर,
तुम भी ____________ बन जाओ।

(ख) पृथ्वी कहती ____________ न छोड़ो,
कितना ही हो ____________ पर भार।

(ग) भर लो,भर लो ____________ मन मे,
____________ मृदुल उमंग।

(घ) ____________ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा ____________।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) समझ रहे हो, क्या कहती है,	(i) कितना ही हो सिर पर भार।
(ख) भर लो, भर लो अपने मन में	(ii) ढक लो तुम सारा संसार।
(ग) पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,	(iii) मीठी-मीठी मृदुल तरंग।
(घ) नभ कहता है फैलो इतना,	(iv) उठ-उठ, गिर-गिर तरल तरंग।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों के दो-दो समानार्थक शब्द लिखिए—

(क) पर्वत – ____________ ____________

(ख) संसार – ____________ ____________

(ग) पृथ्वी — ____________ ____________

(घ) नभ — ____________ ____________

(ङ) सागर — ____________ ____________

2. सही विलोम शब्द के सामने (✓) का चिह्न लगाइए—

(क)	ऊँचा	— ☐ बड़ा	☐ नीचा	☐ महान	
(ख)	गहराई	— ☐ चौड़ाई	☐ मोटाई	☐ ऊँचाई	
(ग)	मीठी	— ☐ खट्टी	☐ कड़वी	☐ मधुर	
(घ)	तरल	— ☐ चिकना	☐ ठोस	☐ कोमल	

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- प्रकृति पर कोई और कविता अपने शब्दों में लिखो।

समूह कार्य (Group Discussion)

- आजकल प्रदूषण प्रकृति को बहुत नुकसान पहुँचा रहा है। इसकी चर्चा कक्षा में करें।

रचनात्मक गतिविधि

- **कविता की लाइनें पूरी कीजिए—**

धरती हम सबकी है माता,
यह सबको खाने को देती।

____

____

शारीरिक अंगों की बहस 2

(कहानी)

एक बार शरीर निठल्ला पड़ा था। इंद्रियों को भी कोई काम न था। मन और प्राण भी खाली बैठे आराम कर रहे थे। ऐसे में समय बिताने के लिए वाणी, आँख और कान आपस में बातें करने लगे। प्राण और मन भी बैठे-बैठे उनकी बातें सुनने लगे। साधारण बातचीत बढ़ते-बढ़ते बहस बन गई।

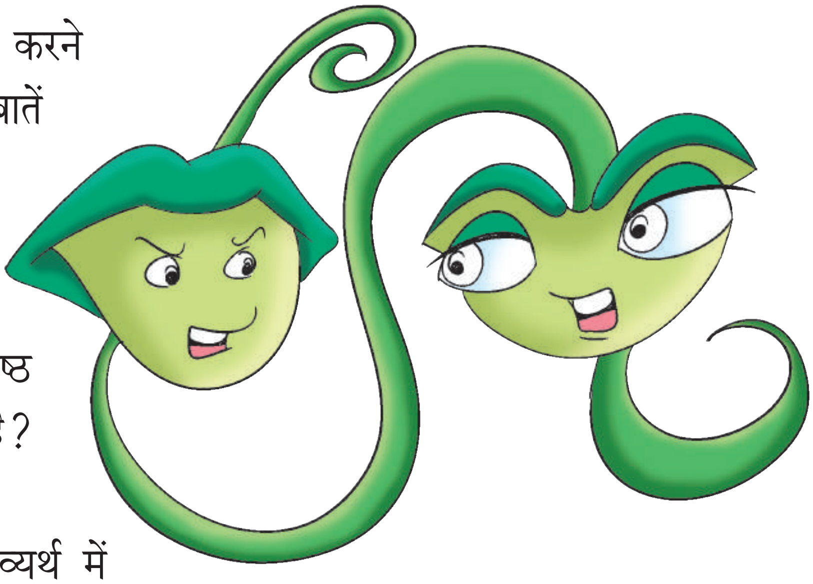

वाणी ने आँख से कहा–''मैं तुझसे श्रेष्ठ हूँ।'' आँख बोली-'' जा,जा! बड़ी श्रेष्ठ बनने वाली आई। तू कैसे श्रेष्ठ हो सकती है? श्रेष्ठ तो मैं हूँ।''

यह सुनकर कान बोला-'' आप दोनों व्यर्थ में झगड़ा क्यों कर रहे हैं? आप में से कोई भी श्रेष्ठ नहीं है। श्रेष्ठ तो मैं हूँ। अगर मैं न होऊँ, तो आपको एक-दूसरे की बात भी सुनाई न दे।''

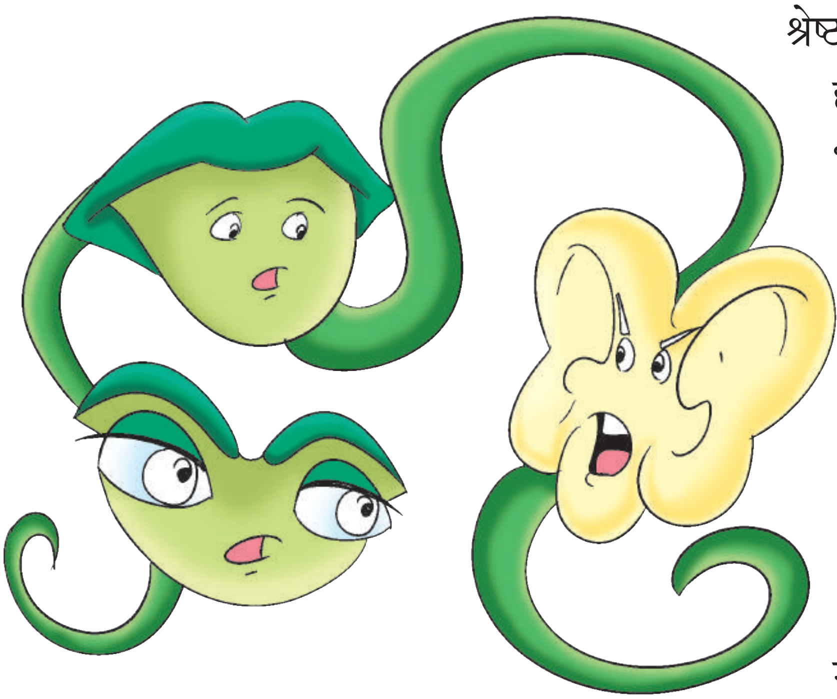

इस पर दूर बैठा मन बोल उठा-''तुम तीनों का झगड़ा बेकार है। तुम तीनों ही श्रेष्ठ नहीं हो, क्योंकि तुम सब तो साधन मात्र हो। तुम सबसे श्रेष्ठ मैं हूँ।'' तब प्राण ने उसे टोका-''मन! तू कैसे श्रेष्ठ हो गया? अगर ये सब साधन मात्र हैं, तो तू क्या है?''

मन ने चौंककर प्राण की ओर देखा, फिर बोला–"तो क्या तू हमसे श्रेष्ठ है? प्राण बोला-"सच तो यही है, लेकिन मैं यह बात अपने मुँह से नहीं कहना चाहता था।" अब तो वे सब ज़ोर-ज़ोर से झगड़ा करने लगे। कोई भी अपने को कम मानने को तैयार नहीं था। जब कोई हल नहीं निकला, तो प्राण ने कहा—"अच्छा, झगड़ा बंद करो। चलो जगतपिता ब्रह्मा के पास चलें। वे ही इस समस्या का हल करेंगे।" वे ब्रह्मा जी के पास पहुँचे। मन ने कहा-"हे प्रजापति ! आप निर्णय कीजिए कि हम पाँचों में श्रेष्ठ कौन है?"

ब्रह्मा बोले-" ठीक है, निर्णय करने की विधि मैं तुम्हें बता देता हूँ। सुनो, श्रेष्ठ वह है, जिसके बिना काम न चले। अब तुम स्वयं परीक्षा करके इस बात का निर्णय कर लो।" ब्रह्मा की बात उन सबको अच्छी लगी। वे संतुष्ट होकर लौट आए। शरीर अब तक भी निठल्ला पड़ा था। वे पाँचों भी अपने-अपने स्थान पर जा बैठे।

परीक्षा आरंभ हुई। मन ने कहा-"सबसे पहले झगड़ा तुमने किया था, इसीलिए परीक्षा भी तुम्हीं से आरंभ होगी।"

वाणी कड़ककर बोली-"ठीक है। ब्रह्मा ने कहा है कि श्रेष्ठ वह होता है जिसके बिना काम न चले। मैं अभी तुमको छोड़कर जा रही हूँ।"

वाणी समझती थी कि सब उससे रुक जाने की प्रार्थना करेंगे, लेकिन किसी ने उसकी ओर देखा तक नहीं। वाणी चली गई। उसने सोचा कि एक-दो दिन में इन सबके दिमाग ठिकाने आ जाएँगे और मुझे मनाने दौड़े-दौड़े आएँगे, लेकिन एक महीना बीत गया, कोई भी उसे मनाने नहीं आया।

वाणी ने सोचा- चलकर देखूँ, उनका क्या हाल है। लेकिन जब वाणी लौटी, तो देखा कि चारों आनंदमग्न हैं। जो काम वाणी किया करती थी, वे संकेत से हो रहे थे। वाणी ने उससे पूछा–" कहो, मेरे बिना कैसे रहे?"

मन बोला–"बहुत अच्छी तरह रहे। अब हमारी समझ में अच्छी तरह आ गया है कि सब झगड़ों की जड़ तू ही है।"

यह सुनते ही वाणी चुप हो गई और चुपचाप अपनी जगह पर जा बैठी। इसके बाद आँख की बारी आई। आँख ने कहा-"आप लोगों को जो कुछ दिखाई देता है,वह सब मेरे कारण ही तो है। वाणी के बिना तो आपका काम चल सकता है, लेकिन मेरे बिना नहीं चल सकता। अब मैं जा रही हूँ। कुछ दिन अँधेरे में ठोकरें खाने के बाद आपको मेरा महत्त्व समझ में आ जाएगा।"

दो महीने बीत गए, लेकिन आँख को मनाने कोई नहीं गया। हारकर आँख को स्वयं ही लौटना पड़ा।

आँख की समझ में आ गया कि उनका काम उसके बिना चल गया है। वह भी चुपचाप अपने स्थान पर जा बैठी।

अब कान की बारी आई। उसने कहा-''आँख जाने के बाद आप सबने मेरी सहायता से काम चलाया। इस बात को देखते हुए मेरी श्रेष्ठता मान लो, वरना मैं चला।'' वाणी और आँख एक साथ बोले-''बड़े शौक से जाइए।''

चिढ़कर कान चला गया। लेकिन जब किसी ने उसकी सुध नहीं ली, तो तीन-चार महीने में अपने आप लौट आया।

अब मन की बारी आई। उसने कहा-'' मैं जानता हूँ कि आप लोग मेरे बिना नहीं रह सकते, इसलिए जब मेरी याद आए,तो मुझे बुला लेना। इस समय मैं जा रहा हूँ।'' यह सुनते ही सब एक साथ बोल उठे-''आप हमारी चिंता बिलकुल न करें और निश्‍चिंत होकर जाएँ।

तब मन मुँह फुलाकर चला गया। धीरे-धीरे कई महीने बीत गए, लेकिन कोई उसे बुलाने नहीं आया। निराश होकर वह भी स्वयं ही लौटा।

अब प्राण की बारी आई। उसने कहा–''आप सब मेरे छोटे भाई-बहनों की तरह हो, मैं आप सबको छोड़कर जाना नहीं चाहता, न मैं अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहता हूँ।'' इस पर सब बोले–''नहीं ऐसा कहने से काम नहीं चलेगा। आपको भी अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण देना पड़ेगा।''

प्राण बोला–''आपसी झगड़े का क्या लाभ? मेरी बात मान जाओ।'' मन बोला-''नहीं, प्रमाण तो आपको देना ही होगा।''

प्राण ने कहा-''फिर ठीक है, यह लो प्रमाण!'' इतना कहकर वह जैसे ही जाने को तैयार हुआ कि आँखों के सामने अँधेरा छा गया,वाणी लुप्त हो गई, कानों से सुनाई देना बंद हो गया और शरीर डाँवाडोल हो गया।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

निठल्ला = बिना काम के, खाली (free); व्यर्थ = बेकार (waste); समस्या = कठिनाई (problem); निर्णय = फैसला (decision); संतुष्ट = राजी (satisfied); आनंदमग्न = जो आनंद में डूबा हो (blissful); संकेत = इशारा (hint); निश्चिंत = बेफ़िक्र, जिसे चिंता न हो (carefree); प्रमाण = सबूत (proof); लुप्त = गायब (vanished); सर्वश्रेष्ठ = सबसे अच्छा (excellent); वाणी = बोली (voice); विधि = तरीका (method); परीक्षा = जाँच (test)।

श्रुतलेख (Dictation)

निठल्ला, व्यर्थ, निर्णय, आनंदमग्न, निश्चिंत, लुप्त, प्रमाण

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) एक बार शरीर कैसा पड़ गया था?

(ख) मन और प्राण खाली बैठे क्या कर रहे थे?

(ग) वाणी,आँख और कान क्या बिताने के लिए बातें कर रहे थे?

(घ) साधारण बातचीत बढ़ते-बढ़ते क्या बन गई?

(ङ) वे पाँचों निर्णय के लिए किसके पास गए?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) शरीर की इंद्रियों के बीच किस बात को लेकर बहस शुरू हुई?

___

(ख) इंद्रियों के बीच बहस की शुरुआत किसने की?

___

(ग) श्रेष्ठता का निर्णय करवाने के लिए इंद्रियाँ किसके पास गईं?

___

(घ) कान ने अपना महत्त्व दर्शाने के लिए क्या किया?

___

(ङ) इस पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

---

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) सबसे पहले परीक्षा किसकी हुई?

वाणी की ☐ मन की ☐ आँख की ☐

(ख) आँख के बाद किसकी परीक्षा हुई?

कान की ☐ प्राण की ☐ वाणी की ☐

(ग) अंत में कौन श्रेष्ठ सिद्ध हुआ?

मन ☐ प्राण ☐ आँख ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) जो काम ________ किया करती थी, वे ________ से हो रहे थे।

(ख) अब तुम ________ परीक्षा करके इस बात का ________ कर लो।

(ग) आप मेरी ________ बिलकुल न करें और ________ होकर जाएँ।

(घ) ________ की समझ में आ गया कि उसका ________ उसके बिना चल गया है।

(ङ) प्राण जैसे ही जाने लगा कि ________ के सामने ________ छा गया।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) अगर मैं न होऊँ, तो	(i) काम उसके बिना चल गया है।
(ख) हे प्रजापति! आप निर्णय कीजिए कि	(ii) आपको एक-दूसरे की बात भी सुनाई न दे।
(ग) मैं आप सबको छोड़कर जाना नहीं चाहता,	(iii) हम पाँचों में कौन श्रेष्ठ है?
(घ) आँख जाने के बाद आप सबने	(iv) न ही मैं अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहता हूँ।
(ङ) आँख की समझ में आ गया कि उनका	(v) इशारों की सहायता से काम चलाया।

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) एक बार शरीर निठल्ला पड़ गया। ☐

(ख) मन और प्राण अपने-अपने काम में लगे हुए थे। ☐

(ग) तुम दोनों तो केवल साधन मात्र हो। ☐

(घ) मन ने चुपचाप प्राण की ओर देखा। ☐

(ङ) ब्रह्मा जी ही इस समस्या का हल करेंगे। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

(क) साधारण — ________ (घ) निर्णय — ________

(ख) संतुष्ट — ________ (ङ) अँधेरा — ________

(ग) लाभ — ________ (च) निराशा — ________

2. दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए—

(क) निठल्ला — ________ (घ) व्यर्थ — ________

(ख) सहमत — ________ (ङ) निर्णय — ________

(ग) संकेत — ________ (च) निश्चित — ________

3. दिए गए वाक्याँशो के लिए एक शब्द लिखिए—

(क) जो बिना काम के खाली बैठा हो — ________

(ख) जिसको संतोष हो गया हो — ________

(ग) जो आनंद में डूबा हो — ________

(घ) जिसे कोई चिंता न हो — ________

(ङ) जगत का पिता — ________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है।

समूह कार्य (Group Discussion)

- हाथ और पैर हमारे लिए क्यों जरूरी हैं, इसकी चर्चा कक्षा में करें।

रचनात्मक गतिविधि

- आँख के न होने से क्या-क्या कठिनाइयाँ हो सकती हैं? लिखिए।

____

____

____

____

____

नारियल का प्रदेश 3
(कहानी)

भारत एक विशाल देश है। यहाँ कहीं पहाड़ हैं तो कहीं मरुस्थल, कहीं वन हैं तो कहीं मैदान। यहाँ के सभी प्रदेशों का अपना-अपना सौन्दर्य है।

भारत के दक्षिणी भाग में स्थित एक राज्य है— केरल। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह एक बड़ा राज्य नहीं है, लेकिन प्राकृतिक सौन्दर्य से यह भरा-पूरा है। बहुत-से लोग इसे ईश्वर का प्रदेश मानते हैं। हरे-भरे वृक्षों और पौधों से आच्छादित इस प्रदेश को 'हरित प्रदेश' कहना अनुचित न होगा। समुद्रतट पर स्थित तिरुवनन्तपुरम केरल की राजधानी है। केरल में हरे-भरे जंगलों की बहुतायत है। सड़कों के दोनों ओर चाय, रबर, इलायची और काली मिर्च के बागान देखते ही बनते हैं। यहाँ स्थित लहलहाते खेत और नारियल के वृक्ष बहुत सुन्दर लगते हैं। नारियल यहाँ की प्रमुख पैदावार है। केरल एक समुद्रतटीय क्षेत्र है। इसीलिए

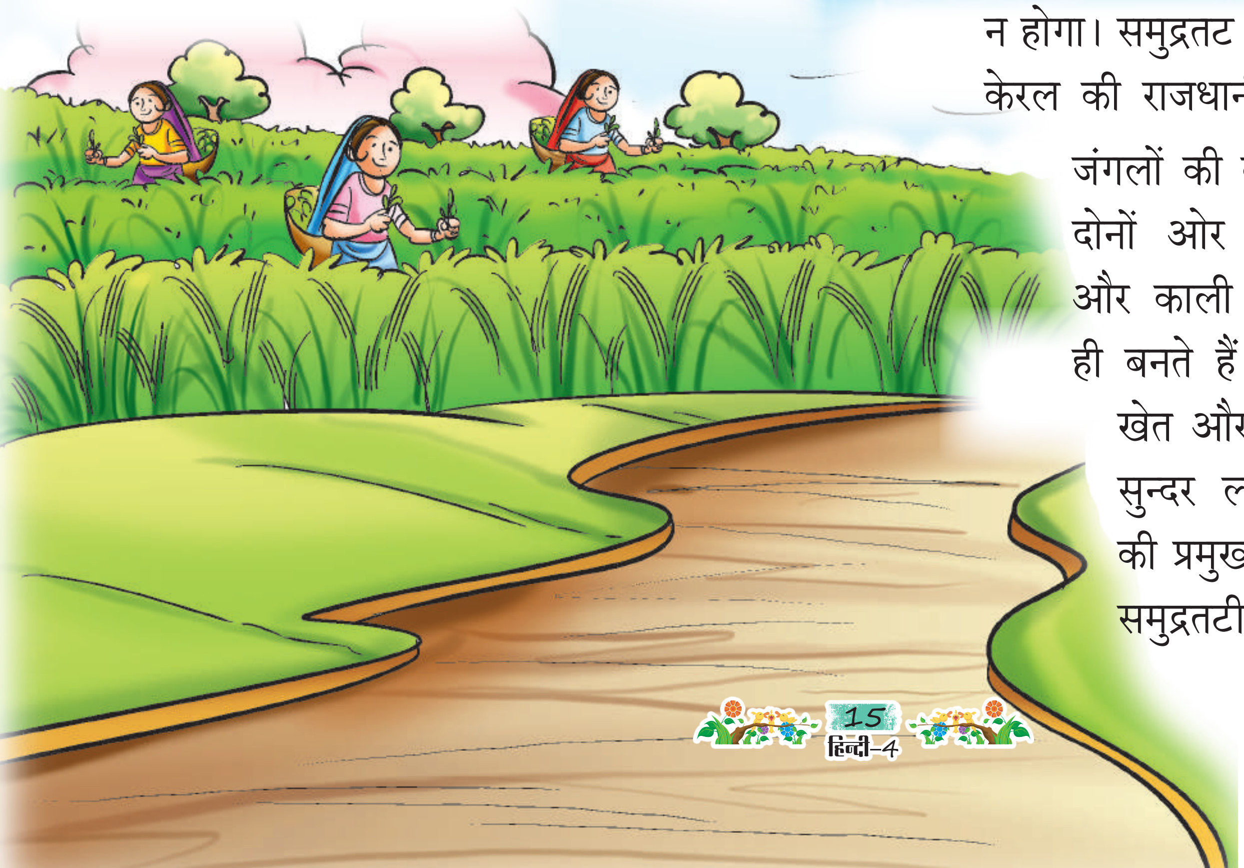

यहाँ खूब वर्षा होती है। यहाँ की जलवायु आर्द्र है और गर्मी भी बहुत पड़ती है। यहाँ के वातावरण में नमी बनी रहती है।

केरल के गाँव किसी भी प्रकृति प्रेमी का मन मोह लेंगे। यहाँ के गाँवों में घर मिट्टी, नारियल की टहनियों और पत्तियों से बने होते हैं। केरलवासियों को साफ़-सुथरे घरों में रहना पसन्द है। वे घर के आँगन को फूलों की रंगोली से सजाते हैं। गाँव के अधिकतर लोग धान की खेती करते हैं। वे नारियल के रेशों से रस्सी और दरी बनाते हैं।

ग्रामवासी नारियल की टोकरियों तथा अन्य सजावटी वस्तुओं को भी बनाते हैं। वे इन वस्तुओं को शहरों में ले जाकर बेचते हैं।

केरल में हाथी बहुतायत में पाए जाते हैं। वनों में स्वतन्त्र विचरण करने वाले हाथी सैलानियों का मन मोह लेते हैं। केरलवासी हाथियों को पालते हैं और इनसे भारी लकड़ी के गट्ठरों एवं अन्य भारी सामानों को उठवाते हैं। केरल के मन्दिरों में भी पालतू हाथी देखने को मिल जाते हैं।

केरल का प्रमुख त्योहार 'ओणम' है। चार दिन तक चलने वाला यह त्योहार फसल की कटाई के बाद मनाया जाता है। केरलवासियों का विश्वास है कि इस दिन पौराणिक राजा महाबली अपने राज्य में भ्रमण के लिए आते हैं। इस त्योहार द्वारा केरलवासी अपने राजा का स्वागत-सत्कार करते हैं। इस दिन लोग अपने-अपने घर के सामने रंगोली सजाते हैं। घर को फूलों से सजाया जाता है। सब लोग नए कपड़े पहनते हैं। घाघरा-चोली पहने और बालों में वेणी सजाए महिलाओं की शोभा देखते ही बनती है। घर में तरह-तरह के पकवान बनते हैं।

नौका-दौड़ केरल का प्रमुख आकर्षण है। यह नौका-दौड़ लैगूनों में होती है। लैगूनों में सजी रंग-बिरंगी नौकाएँ देखने वालों का मन मोह लेती हैं।

त्रिचुर में मनाए जाने वाला 'पुरम' उत्सव भी बहुत प्रसिद्ध है। शानदार आतिशबाज़ी, छत्रयुक्त हाथियों की परेड और छाता प्रतियोगिता इस उत्सव का प्रमुख आकर्षण होते हैं। दूर-दूर से हज़ारों लोग त्रिचुर के इस उत्सव को देखने पहुँचते हैं।

केरल के निवासियों को स्वादिष्ट भोजन पसन्द है। केरल के लोग आमतौर पर मछली और चावल खाते हैं। खाने-पीने की वस्तुओं में नारियल और उसके तेल का लोग बहुतायत में प्रयोग करते हैं, यद्यपि शहरों में अब अन्य खाद्य तेलों का उपयोग होने लगा है।

कथकली नृत्य केरल की पहचान है। यह नृत्य आसान नहीं होता। वर्षों तक अभ्यास करने के बाद ही नर्तक इसमें प्रवीण हो पाते हैं। यह नृत्य करने वाले नर्तक विशेष प्रकार के रंग-बिरंगे मुखौटे और वस्त्र पहनकर नाचते हैं। 'मलयालम' केरल की मातृभाषा है। यहाँ के पढ़े-लिखे लोग तमिल भी बोलते हैं। केरल की इन विशेषताओं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य की प्रचुरता को देखते हुए यदि इसे 'प्रकृति का स्वर्ग' कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति न होगी।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

मरुस्थल = रेगिस्तान (desert); आच्छादित = ढका हुआ (covered); हरित = हरा (green); सैलानी = पर्यटक (traveller); प्रकृति-प्रेमी = प्रकृति को पसन्द करने वाले (lover of nature); बहुतायत = काफ़ी संख्या में (plenty); भ्रमण = घूमना (travel)।

श्रुतलेख (Dictation)

मरूस्थल, सौन्दर्य, आच्छादित, तिरूवनन्तपुरम, सैलानी, समुद्रतटीय, गट्ठरों

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) केरल की राजधानी का नाम क्या है?

(ख) केरल में किसके बागान हैं?

(ग) केरल की जलवायु कैसी है?

(घ) केरल का मुख्य त्योहार क्या है?

(ङ) केरल के प्रमुख नृत्य का क्या नाम है?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) केरल के लिए किन-किन नामों का प्रयोग किया गया है? इसकी राजधानी कहाँ स्थित है?

(ख) केरल किस प्रकार का प्रदेश है और यहाँ की प्रमुख पैदावार क्या है?

(ग) केरल के लोग ओणम का त्योहार किस प्रकार मनाते हैं?

(घ) त्रिचुर के उत्सव के विषय में आप क्या जानते हैं?

(ङ) कथकली नृत्य की विशेषताएँ बताइए।

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) केरल भारत के किस भाग में है?

पूर्व ☐ पश्चिम ☐ दक्षिण ☐

(ख) हरे-भरे वृक्षों और पौधों से आच्छादित केरल प्रदेश को कहते हैं-

श्याम प्रदेश ☐ हरित प्रदेश ☐ नीला प्रदेश ☐

(ग) केरल की राजधानी है-

दिल्ली ☐ प्रयागराज ☐ तिरुअनन्तपुरम ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

मलयालम, प्राकृतिक, नारियल, रंगोली

(क) केरल ____________ सौन्दर्य से भरा-पूरा है।
(ख) केरल की प्रमुख ____________ पैदावार है।
(ग) घर के आँगन को फूलों की ____________ से सजाते हैं।
(घ) केरल की मातृभाषा ____________ है।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) जिसे प्रकृति से प्रेम हो	(i) समुद्रतटीय
(ख) नृत्य करने वाला	(ii) खाद्य
(ग) जो खाने लायक हो	(iii) प्रकृति-प्रेमी
(घ) घूमने की प्रवृत्ति वाला	(iv) नृतक
(ङ) जो समुद्र के तट पर हो	(vi) घुमक्कड़

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) भारत एक बहुत छोटा देश है। ☐
(ख) केरल भारत के दक्षिणी भाग में है। ☐
(ग) केरल में हरे-भरे जंगलों की बहुतायत है। ☐
(घ) केरल में नाममात्र की वर्षा होती है। ☐
(ङ) ओणम पर्व चार दिनों तक चलता है। ☐

6. रिक्त स्थानों में निम्नलिखित के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए—

(क) ईश्वर — ____________ (ख) बादल — ____________
(ग) प्रकृति — ____________ (घ) जल — ____________
(ङ) माता — ____________

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए—

(क) 'बिल्ली' का पुल्लिंग शब्द है-
बिलाव ☐ बिल्ला ☐ बिल्ले ☐

(ख) 'दर्पण' का समानार्थक है-
आरसी ☐ आईना ☐ शीशा ☐

(ग) इनमें से विशेषण है–

शंका ☐ गाय ☐ सफेद ☐

2. शब्दों के अर्थभेद लिखकर इनसे वाक्य बनाइए—

		अर्थ	वाक्य
(क)	पूछ/पूँछ —	________	____________________
(ख)	समान/सामान —	________	____________________
(ग)	तन/तान —	________	____________________

उपर्युक्त शब्द के जोड़े समरूपी-भिन्नार्थक शब्द हैं। उच्चारण करते समय तो ये लगभग एक जैसे लगते हैं परंतु इनके अर्थ बिल्कुल भिन्न होते हैं।

3. मूल शब्दों से तीन-तीन नए शब्द बनाइए—

(क) दया — ________ ________ ________

(ख) प्रसन्न — ________ ________ ________

(ग) क्षमा — ________ ________ ________

(घ) रंग — ________ ________ ________

(ङ) सत्य — ________ ________ ________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- केरल के प्रमुख स्थल कौन-कौन से हैं?

समूह कार्य (Group Discussion)

- केरल के बारे में और जानकारी इकट्ठा करके अपने मित्र के साथ चर्चा करें।

रचनात्मक गतिविधि

- निम्नलिखित राज्यों से सम्बन्धित नृत्यों के नाम लिखिए—

(क) पंजाब — ________ (ख) उड़ीसा — ________

(ग) राजस्थान — ________ (घ) उत्तर प्रदेश — ________

(ङ) तमिलनाडु — ________ (च) गुजरात — ________

ऋतुओं पर बातचीत

(संवाद)

4

(बसंत ऋतु का चित्र टाँगती हुई अध्यापिका)

सौरभ – दीदी, मुझे बसंत ऋतु पर एक कविता आती है। आज सुनाऊँ?

दीदी – हाँ- हाँ, अवश्य!

सौरभ – सरदी गई बसंत है आया,
रूप नया धरती ने पाया।
रंग-रंग के फूल खिले हैं,
वन-उपवन सब महक रहे हैं।
डाली-डाली है लहराती,
कोयल मीठे सुर में गातीं।
बसंत ऋतु की शोभा न्यारी,
खिल जाती है क्यारी-क्यारी।

दीदी – वाह! कितनी सुंदर कविता है! ऋतुएँ तो और भी हैं।
बंसत के बाद कौन-सी ऋतु आती है?

दीपक – बारिश की.....

दीदी – अच्छा! मैं तुम्हें कुछ संकेत देती हूँ, फिर तुम बताना उस ऋतु का नाम। सुनो–
आई-आई,गरमी की ऋतु आई,
कोयल रानी ने मीठी कूक सुनाई।

आम रसीले खट्टे-मीठे, तरबूज संग लाई,
खरबूजा और आइसक्रीम ठंडी-मीठी खाई।

सभी बच्चे – गरमी की ऋतु! दीदी,नाम तो आपने ही बता दिया।

रुचिका – अब मैं कुछ जोडूँ?

दीदी – हाँ-हाँ,क्यों नहीं?

रुचिका – गाती हुई.......

गरमी की ऋतु छुट्टियाँ लाए, दूर-दूर हम घूम कर आएँ। नानी के घर मज़े उड़ाएँ,
खेल-खेलकर समय बिताएँ।

दीदी – वाह! वाह! आज तो सब कविता में ही बोल रहे हैं। अब अगली ऋतु है.....

सभी बच्चे – बारिश की, वर्षा ऋतु! दीदी,इस मौसम को बरसात भी कहते हैं।
आपने एक कविता भी सुनाई थी, सुनाऊँ!

दीदी – हाँ-हाँ, सुनाएँ!

सभी बच्चे – काले-काले बादल आए, पूरे नभ पर आ छा जाएँ।
उमड़-घुमड़ कर गड़-गड़ करते,
झम-झम,झम-झम जल बरसाएँ।
नाचे मोर पपीहा बोले,
टर्र-टर्र मेंढक भी बोले।
हरी हुई पेड़ों की डालें,
आओ इन पर झूला-झूलें।
घर-आँगन में, गली-गली में,
मिलकर हम सब खूब नहाएँ।
कागज़ में अपनी नौका को,
जल में तैरा खुशी मनाएँ।

दीदी – वर्षा के बाद आती है......

सभी बच्चे – सरदी!

दीदी – सरदी की ऋतु को शरद ऋतु भी कहते हैं। इस ऋतु में ठंड बहुत पड़ती है। सूरज देर से निकलता है और जल्दी ही अस्त हो जाता है।

दीपिका – उसे भी तो सरदी लगती होगी। हम तो स्वेटर पहन लेते हैं,रात को रज़ाई ओढ़ते हैं। वह क्या करे? चलो,इसका भी गाना गाएँ–

सरदी का मौसम है आया,
संग अपने त्योहार है लाया।
दीवाली और क्रिसमस आई,
खाई सबने केक मिठाई।

दीदी – ठीक है। अब ऋतुएँ हो गईं चार। बसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद। शिशिर और हेमंत- दो ऋतुएँ और भी हैं। इन पर हम फिर कभी चर्चा करेंगे। लो, घंटी भी बज गई। सँभालो अपने बस्ते और घर जाओ और बातें कल होंगी।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

ऋतु = मौसम (season); संकेत = इशारा (hint); अवश्य = ज़रूर (certain); रसीले = रसदार (juicy); उपवन = बग़ीचा (garden); नभ = आकाश (sky); मीठे = मधुर (sweet); नौका = नाव (boat); शोभा = सुंदर (beautiful); अस्त = छिपना (set); न्यारी = अनोखी (unique); संग = साथ (with); धरती = पृथ्वी (earth); त्योहार = पर्व (festival)।

श्रुतलेख (Dictation)

ऋतु, संकेत, आइसक्रीम, अस्त, मेंढक, शिशिर, हेमंत

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) कविता में पहले किस ऋतु का वर्णन किया गया है?
(ख) कविता में दूसरी ऋतु कौन-सी बताई गई है?
(ग) कविता में तीसरी ऋतु कौन-सी दर्शाई गई है?
(घ) भारत में कुल कितनी ऋतुएँ होती हैं?
(ङ) भारत की मुख्य ऋतुएँ कितनी हैं?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) मेंढक किस ऋतु में टर्र-टर्र करते हैं?

____

(ख) कोयल कौन-सी ऋतु में मीठे गाने गाती है?

____

(ग) गरमी में आपको क्या खाना पसंद है?

____

(घ) सरदी की रातें और दिन कैसे होते हैं?

____

(ङ) किन ऋतुओं के बारे में दीदी ने आगे चर्चा करने के लिए कहा है?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) कौन-सी ऋतु में रंग-बिरंगे फूलों से धरती सज जाती है?

बसंत ऋतु में ☐ ग्रीष्म ऋतु में ☐ वर्षा ऋतु में ☐

(ख) सरदी का मौसम अपने संग कौन-से त्योहार लाता है?

दीवाली ☐ क्रिसमस ☐ ये दोनों त्योहार ☐

(ग) किस ऋतु की चर्चा पाठ में नहीं की गई है?

ग्रीष्म ऋतु की ☐ हेमंत ऋतु की ☐ शरद ऋतु की ☐

3. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क) अवश्य	(i)	छिपना
(ख) संकेत	(ii)	आकाश
(ग) रसीले	(iii)	ज़रूर
(घ) नभ	(iv)	इशारा
(ङ) अस्त	(v)	रसदार

4. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) सरदी की ऋतु को ______ ऋतु भी कहते हैं।

(ख) गरमी की ऋतु को ______ ऋतु भी कहते हैं।

(ग) वर्षा ऋतु में बच्चे ________ की नौका चलाते हैं।

(घ) बसंत ऋतु में धरती ________ हो जाती है।

(ङ) वर्षा के बाद ________ ऋतु आती है।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों के बहुवचन लिखिए—

(क) वस्तु — ________ (च) गली — ________

(ख) ऋतु — ________ (छ) नौका — ________

(ग) कविता — ________ (ज) खुशी — ________

(घ) कन्या — ________ (झ) बस्ता — ________

(ङ) गाना — ________ (ञ) कोयल — ________

2. दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए—

(क) अवश्य — ________ (घ) नभ — ________

(ख) फूल — ________ (ङ) बादल — ________

(ग) मीठे — ________ (च) ऋतु — ________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- ऋतुओं पर अपने शब्दों में एक सुंदर कविता लिखें।

समूह कार्य (Group Discussion)

- वर्षा ऋतु पर एक कविता लिखकर अपनी शिक्षिका को दिखाइए।

रचनात्मक गतिविधि

- सभी ऋतुओं को एक सुंदर चित्र के माध्यम से समझाऐं।

5 माँ-बेटे का वात्सल्य
(कविता)

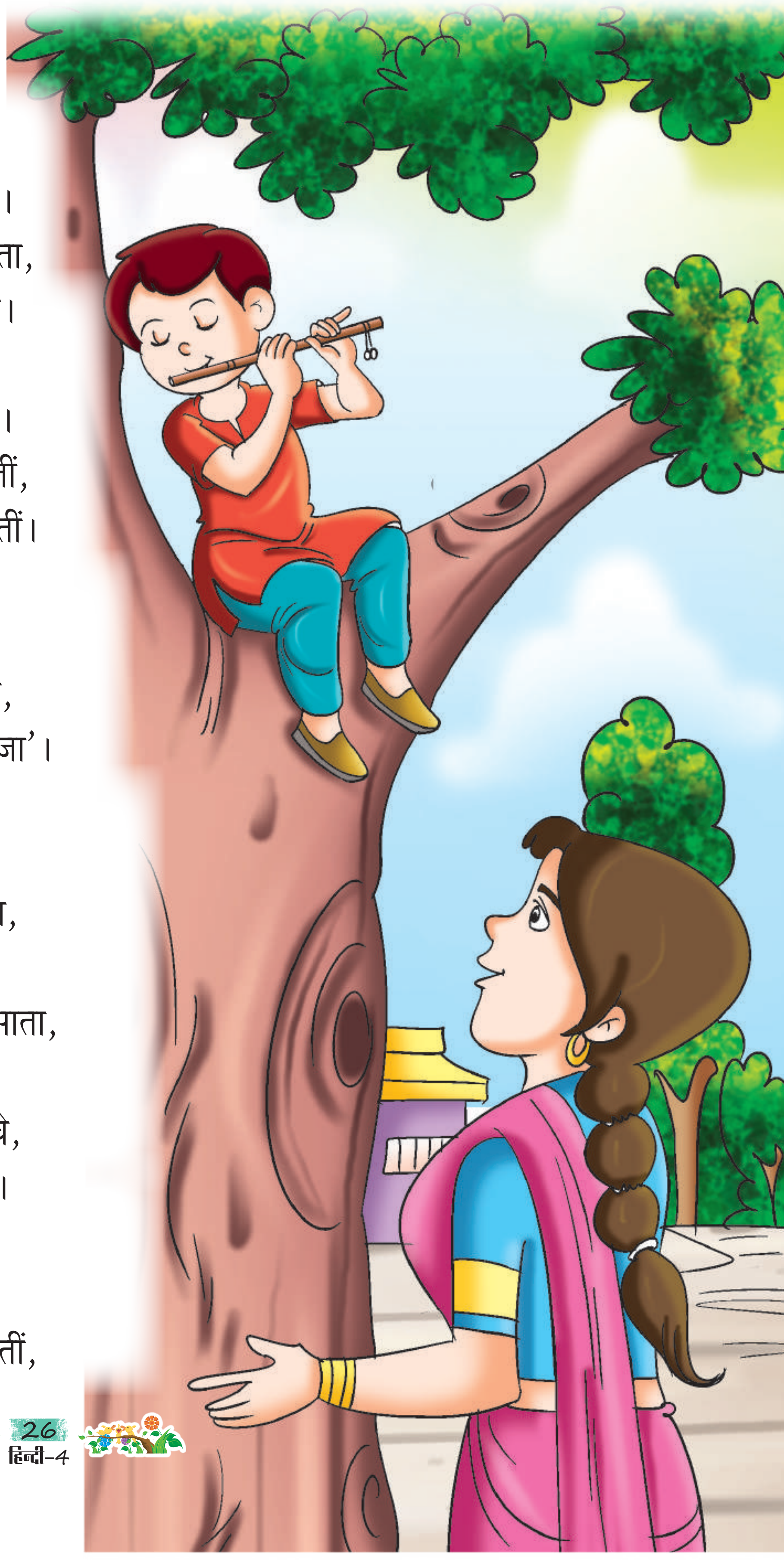

यह कदंब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना तीरे,
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।
ले देती यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसे वाली,
किसी तरह नीचे हो जाती यह कदंब की डाली।
तुम्हें नहीं कुछ कहता, पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्मा, ऊँचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठे फिर मज़े से मैं बाँसुरी बजाता,
अम्मा-अम्मा कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।
सुन मेरी बंसी को माँ, तुम इतनी खुश हो जातीं,
मुझे देखने काम छोड़कर, तुम बाहर तक आतीं।
तुमको आता देख बाँसुरी रख मैं चुप हो जाता,
पत्तों में छिपकर धीरे से बाँसुरी बजाता।
गुस्सा होकर मुझे डाँटती, कहती, नीचे आ जा,
पर जब मैं न उतरता, हँसकर कहतीं 'मुन्ना राजा'।
नीचे उतरो मेरे भैया! तुम्हें मिठाई दूँगी,
नए खिलौने, माखन मिसरी, दूध-मलाई दूँगी।
मैं हँसकर सबसे ऊपर की टहनी पर चढ़ जाता,
एक बार 'माँ' कह पत्तों में कहीं छिप जाता।
बहुत बुलाने पर भी माँ, जब मैं न उतर कर आता,
तब माँ, माँ का हृदय बहुत विकल हो जाता।
तुम अंचल पसार कर अम्मा, वहीं पेड़ के नीचे,
ईश्वर से कुछ विनती करतीं, बैठी आँखें मीचें।
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं धीरे-धीरे आता,
और तुम्हारे फैले अंचल के नीचे छिप जाता।
तुम घबराकर आँख खोलतीं, फिर खुश हो जातीं,

जब अपने मुन्ना राजा को गोदी में ही पातीं।
इसी तरह कुछ खेला करते हम-तुम धीरे-धीरे,
माँ, कदंब का पेड़ अगर यह होता यमुना तीरे।

–सुभद्राकुमारी चौहान

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

तीरे = किनारे (bank); पेड़ = वृक्ष (tree); अम्मा = माँ (mother); स्वर = आवाज़ (sound); विकल = बेचैन (restless,uneasy); विनती = प्रार्थना (request); अंचल = आँचल, पल्लू (the border at the end of a sari or shawl)।

श्रुतलेख (Dictation)

कन्हैया, कदंब, अम्मा, बाँसुरी, हँसकर, माखन, हृदय, विनती

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) यह कविता माँ की कैसी चिंता को अभिव्यक्त करती है?

(ख) पेड़ पर बैठा बालक धीरे–धीरे क्या बनता है?

(ग) बच्चा माँ से दो पैसे वाली क्या चीज़ लेने की ज़िद करता है?

(घ) बच्चा जब पेड़ से नहीं उतरता, तो माँ हँसकर क्या कहती हैं?

(ङ) माँ पेड़ के नीचे आँखें मींचकर किससे विनती करती हैं?

लिखित (Written)

1. **इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—**

(क) यह कविता किस पर आधारित है?

____

(ख) माँ ईश्वर से कैसे विनती करती हैं?

____

(ग) बालक किस समय नीचे उतरता है?

____

(घ) बच्चा कहाँ छिपता है?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) इस कविता के रचनाकार कौन हैं?

महादेवी वर्मा ☐ सुभद्राकुमारी चौहान ☐ सुधा अरोड़ा ☐

(ख) कंदब के पेड़ पर बैठकर बालक क्या करना चाहता है?

बाँसुरी बजाना ☐ मिठाई खाना ☐ कदंब का फल खान ☐

(ग) कविता में किस नदी के किनारे कदंब के पेड़ की कल्पना की गई है?

गंगा ☐ नर्मदा ☐ यमुना ☐

(घ) इस कविता में किस पेड़ का वर्णन है?

आम के पेड़ का ☐ कदंब के पेड़ का ☐ बरगद के पेड़ का ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) तुम __________ पसार कर अम्मा, वहीं पेड़ के नीचे,
ईश्वर से कुछ __________ करती, बैठी आँखें मींचे।

(ख) __________ होकर मुझे डाँटतीं, कहतीं बीच में आ जा,
पर जब मैं न __________ हँसकर कहतीं 'मुन्ना राजा!'

(ग) मैं हँसकर सबसे ऊपर की __________ पर चढ़ जाता,
एक बार 'माँ' कह __________ में वहीं कहीं छिप जाता।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) कदंब	(i) नदी
(ख) यमुना	(ii) पेड़
(ग) बाँसुरी	(iii) नए
(घ) मलाई	(iv) वाद्य-यंत्र
(ङ) खिलौने	(v) दूध
(च) अंचल	(vi) चढ़ना
(छ) टहनी	(vii) साड़ी

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. **दिए गए शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए—**

(क) नीचे — ____________ धीरे — ____________ आती — ____________

(ख) आता — ____________ डाला — ____________ बजाता — ____________

2. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—**

(क) ऊपर — ____________ विकल — ____________ चढ़ना — ____________

(ख) हँसना — ____________ धीरे — ____________ खुश — ____________

3. **निम्नलिखित शब्दों के दो- दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—**

(क) माँ — ____________ ____________

(ख) पेड़ — ____________ ____________

(ग) नदी — ____________ ____________

(घ) विनती — ____________ ____________

(ङ) आँख — ____________ ____________

(च) राजा — ____________ ____________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- इस कविता में यमुना नदी का नाम आया है। दो और नदियों के नाम लिखिए।

समूह कार्य (Group Discussion)

- तुम्हारी क्या इच्छा है? तुम क्या करना चाहते हो? सोचकर लिखिए।

रचनात्मक गतिविधि

- कृष्ण जी की कोई अच्छी सी कहानी अपने शब्दों में लिखिए।

6 कछुआ और हंस
(कहानी)

एक तालाब के किनारे दो हंस रहते थे। उसी तालाब में 'चीकू' नाम का कछुआ रहता था। तीनों में बड़ी गहरी दोस्ती थी।

एक दिन चीकू ने हंसों से कहा, "मुझे भी अपने साथ घुमाने ले चलो!" हंस किसी पेड़ की डाल से लकड़ी ले आए। कछुए ने लकड़ी को मुँह में दबा लिया। हंस कछुए को लेकर आकाश में उड़ चले।

चीकू को दूर तक फैला आकाश और समुद्र बहुत अच्छा लगा। अचानक उसने समुद्र के पानी का एक ऊँचा फुव्वारा उठता देखा। खुश होकर वह हँस पड़ा। जैसे ही उसका मुँह खुला, वह गहरे समुद्र में जा गिरा।

चीकू चकित रह गया। वह तो एक दूसरे ही संसार में आ गया था। यहाँ तो चारों ओर पानी ही पानी था। अचानक उसे एक बहुत बड़ा कछुआ दिखाई दिया। वह बोला, "अरे भई, तुम कहाँ से आए हो? तुम्हारा नाम क्या है?"

कछुए ने कहा, "मेरा नाम चीकू है। मैं दूर देश से सैर करने आया हूँ। आपका क्या नाम है?"

"मुझे 'टोटू' कहते हैं। मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें समुद्र की सैर करा दूँगा।"

टोटू उसे अपने साथ ले गया। "इसे देखो, चीकू! यह व्हेल है। यह हाथी से लगभग सौ गुना बड़ी होती है। इसके पेट में ट्रक के बराबर खाना आ जाता है," टोटू ने बताया।

अचानक एक ओर से उछलती-कूदती और शोर मचाती मछलियों का एक झुंड आता दिखाई दिया। चीकू ने

घबराकर कहा, ''अरे! ये कौन-सी मछलियाँ हैं? टोटू ने बताया, ''ये डॉलफिन हैं। इन्हें बातूनी मछलियाँ कहते हैं। कई बार इन्होंने समुद्र में डूबते हुए लोगों को बचाया भी है।

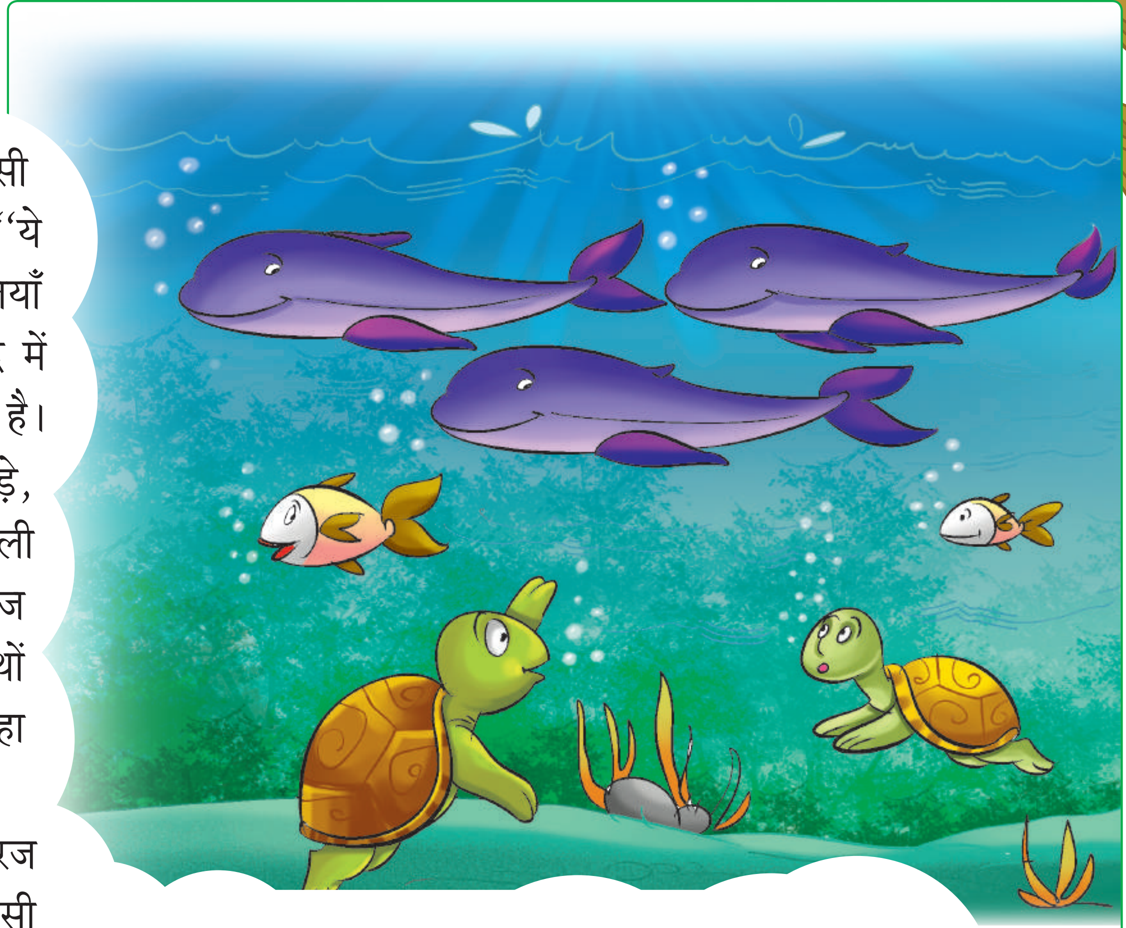

चीकू ने बड़े-बड़े घोंघे, केकड़े, रंगीन मछलियाँ, पाँच कोने वाली सितारा मछली, झींगे और स्पंज देखे। एक ओर से आठ हाथों वाला ऑक्टोपस चला आ रहा था।

चीकू बोला, ''समुद्र तो अचरज से भरा पड़ा है।'' टोटू उसे ऐसी मछलियाँ दिखाने ले गया, जिनकी आँखों से बहुत तेज़ रोशनी निकल रही थी। चीकू खुशी से झूम उठा।

टोटू ने बताया, ''कुछ मछलियाँ ऐसी भी होती हैं जिनसे बिजली के झटके लगते हैं। कईं मछलियों की आकृति साँप और घोड़े जैसी भी होती है।''

चीकू ने पूछा, ''समुद्र का पानी तो बड़ा खारा है। क्या पानी के हरे-भरे पौधे भी नमकीन होते हैं?''

टोटू बोला, ''नमक मिला होने से पानी तो खारा होता है, परंतु पौधे नमकीन नहीं होते। समुद्र के एक पौधे से तो चीनी से भी ज्यादा मीठा पदार्थ बनाया जाता है।''

''अच्छा!'' आश्चर्य से चीकू ने कहा ''यहाँ के प्यारे-प्यारे जीव-जंतुओं, रंगीन मछलियों और सुंदर-सुंदर पौधों को देखकर जी करता है कि मैं यहीं रह जाऊँ। क्या मैं यहाँ रह सकता हूँ?''

टोटू बोला, ''ज़रूर, तुम, खुशी से यहाँ रहो।'' चीकू तब से गहरे समुद्र में रहने लगा।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

समुद्र = सागर (sea); चकित = हैरान (startle); संसार = दुनिया (world); बातूनी = जो ज्यादा बोलता है (loquacious); आकृति = आकार (form, shape); पदार्थ = वस्तु (substance); खारा = नमकीन (saline); आश्चर्य = अचरज (wonder)।

श्रुतलेख (Dictation)

समुद्र, फुव्वारा, सैर, व्हेल, डॉलफिन, बातूनी, ऑक्टोपस, घोंघे, अचरज, साँप, पदार्थ, आश्चर्य

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) चीकू कौन था और कहाँ रहता था?

(ख) चीकू ने हंसों से क्या कहा?

(ग) हंस उसे अपने साथ कैसे लेकर गए?

(घ) टोटू कौन था?

(ङ) समुद्र का पानी कैसा होता है?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) गहरे समुद्र में गिरने पर चीकू को कौन मिला?

____

(ख) चीकू ने बड़े कछुए से क्या कहा?

____

(ग) कौन-सा जीव हाथी से कई गुना बड़ा होता है?

____

(घ) चीकू ने समुद्र में और कौन-कौन से जीव देखे?

____

(ङ) समुद्र के भीतर जीव-जंतुओं के अनोखे संसार के विषय में पढ़कर आपको कैसा लगा?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) दो हंस कहाँ रहते थे?

गड्ढे में ☐ झील में ☐ तालाब के किनारे ☐

(ख) हंस कछुए को लेकर कहाँ चले?

नदी में ☐ समुद्र में ☐ आसमान में ☐

(ग) चीकू समुद्र में कैसे जा गिरा?

हँसने पर ☐ रोने पर ☐ अधिक बोलने पर ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

संसार, जल, मित्रता, आसमान, सागर

(क) हंसों और कछुए में गहरी __________ थी।

(ख) चीकू को दूर तक फैला __________ बहुत अच्छा लगा।

(ग) चीकू एक दूसरे ही __________ में आ गया था।

(घ) __________ तो अचरज से भरा है।

(ङ) नमक मिला होने से __________ तो बड़ा खारा होता है, किंतु पौधे नमकीन नहीं होते।

4. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) जैसे ही चीकू का मुँह खुला, वह गहरे समुद्र में जा गिरा। ☐

(ख) व्हेल के पेट में एक रोटी के बराबर खाना आ जाता है। ☐

(ग) ऑक्टोपस के आठ हाथ होते हैं। ☐

(घ) कुछ मछलियों की आकृति छिपकली और चिड़िया जैसी होती है। ☐

(ङ) कुछ मछलियों से बिजली के झटके भी लगते हैं। ☐

(च) समुद्र के एक पौधे से मीठा पदार्थ बनाया जाता है। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. अब आप नीचे दिए गए वाक्यों में से विशेषण छाँटकर अलग लिखिए—

(क) समुद्र का पानी तो बड़ा खारा है।

(ख) तीनों में गहरी दोस्ती थी।

(ग) आँखों से तेज रोशनी निकल रही थी।

(घ) एक तालाब के किनारे दो हंस रहते थे।

(ङ) अचानक चीकू ने समुद्र में पानी का ऊँचा फुव्वारा उठता देखा।

2. वचन बदलकर लिखिए—

(क) मछली — ____________ (ख) केकड़ा — ____________

(ग) तितली — ____________ (घ) पौधा — ____________

(ङ) नदी — ____________ (च) घोड़ा — ____________

(छ) डाली — ____________ (ज) झींगा — ____________

3. उचित कारक चिह्नों से खाली स्थान भरिए—

(क) वह तो एक दूसरे ही संसार ____________ आ गया था।

(ख) मैं दूर देश ____________ सैर करने आया हूँ।

(ग) एक तालाब ____________ किनारे दो हंस रहते थे।

(घ) कई मछलियों ____________ आकृति साँप और घोड़े जैसी भी होती है।

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **मान लीजिए कि आपने सपने में दो अनोखे जीव देखे। यदि वे जीव वास्तव में आपके सामने आ जाएँ, तो क्या होगा? अपनी प्रतिक्रिया लिखिए—**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **प्रदूषण से समुद्र का पानी खराब हो रहा है जिससे जीव-जंतु, मछलियाँ आदि मर रहे हैं, इस बारे में कक्षा में चर्चा करें।**

रचनात्मक गतिविधि

- **वर्ग-पहेली से ढूँढकर लिखिए, कौन कहाँ रहता है?**

ऑ	गैं	हर	थी	बं	क
क्टो	डा	व्हे	ल	द	जि
प	झीं	म	ग	र	रा
स	गा	य	स	ब	फ
तो	ता	गौ	रै	या	ध

पानी में ____________

पेड़ पर ____________

धरती पर ____________

न्यायमन्त्री 7

(कहानी)

संध्या का समय था। चारों ओर अन्धकार फैल चुका था। ऐसे में किसी ने घर का दरवाज़ा खटखटाया।

"कौन है?" ब्राह्मण शिशुपाल ने दरवाज़े के निकट जाकर पूछा।

"एक परदेसी," बाहर से आवाज़ आई, "क्या मुझे रात काटने के लिए स्थान मिल जाएगा?"

अब शिशुपाल ने दरवाज़ा खोला। उनके सामने एक नवयुवक खड़ा था। उन्होंने मुस्कुराकर कहा, "यह मेरा सौभाग्य है। अतिथि के चरणों से यह घर पवित्र हो जाएगा। आइए, पधारिए।"

शिशुपाल अतिथि को लेकर घर में अन्दर गए। शिशुपाल के पुत्र ने अतिथि का आदर-सत्कार किया। यह देख परदेसी मुग्ध हो गया।

भोजन आदि से निबटकर दोनों बातें करने लगे। बात देश की अव्यवस्था पर चल रही थी। शिशुपाल बोल उठे, "आजकल बहुत अन्याय हो रहा है। मेरा तो खून खौल उठता है।"

परन्तु परदेसी इस बात से सहमत न था। वह कुछ चिढ़कर बोल उठा,

"दोष निकालना तो सुगम है, परन्तु कुछ करके दिखाना कठिन।"

शिशुपाल के लिए यह एक खुली चुनौती थी। वह बोले, "अवसर मिले तो दिखा दूँ कि न्याय किसे कहते हैं ?"

"तो आप अवसर चाहते हैं?"

"हाँ, अवसर चाहता हूँ।"

"फिर कोई अन्याय नहीं होगा?"

"बिलकुल नहीं।"

"कोई अपराधी दण्ड से न बचेगा?"

"नहीं।"

परदेसी ने मुस्कुराकर कहा, "यह बहुत कठिन काम है।"

"ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नहीं। मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।"

परदेसी के मुख पर धीरे-से मुस्कराहट आई और चली गई। इसके बाद भी उनकी बातें चलती रहीं। कुछ देर बाद वे दोनों सो गए।

सुबह उठकर परदेसी ने शिशुपाल को धन्यवाद देकर उनसे विदा ली।

कुछ दिन बाद शिशुपाल का घर पूछते-पूछते कुछ सिपाही आए और उन्हें दरबार में चलने के लिए निवेदन किया। शिशुपाल कुछ सहम गए। वे यह नहीं समझ सके कि सम्राट ने उन्हें क्यों बुलाया है ? 'कहीं उस परदेसी ने तो सम्राट से झूठी-सच्ची शिकायत नहीं कर दी ?' यह सोचते-सोचते वे सिपाहियों के साथ चल पड़े।

दरबार में पहुँचकर शिशुपाल का कलेजा धड़कने लगा। तभी सम्राट अशोक दरबार में पधारे और मुस्कुराते हुए बोले, "ब्राह्मण देवता, आपने मुझे पहचान ही लिया होगा। याद है, आपने कहा था कि यदि मुझे अवसर दिया जाए, तो मैं न्याय का डंका बजा दूँगा। मैं आपको अवसर देना चाहता हूँ। आप तैयार हैं ?"

पहले तो शिशुपाल कुछ घबराए, परन्तु फिर उन्होंने बड़ी शान्ति से गरदन उठाकर कहा, ''यदि सम्राट की यही इच्छा है, तो मैं तैयार हूँ।''

''बहुत ठीक। अब आप न्यायमन्त्री हुए,'' सम्राट ने कहा और अपने हाथ से अंगूठी उतारकर शिशुपाल को पहना दी। यह सम्राट अशोक की राज-मुद्रा थी।

अब शिशुपाल न्यायमन्त्री थे। उन्होंने राज्य की समुचित व्यवस्था करनी आरम्भ कर दी। उनके सुप्रबन्ध से राज्य में पूरी तरह शान्ति रहने लगी। किसी-को-किसी प्रकार का भय नहीं था। लोग घर के दरवाज़े तक खुले छोड़ जाते थे। राज्य में हर तरफ न्यायमन्त्री के सुप्रबन्ध और न्याय की धूम मच गई।

लगभग एक महीने बाद किसी ने रात में एक पहरेदार की हत्या कर दी। सुबह होते ही यह बात चारों तरफ जंगल में आग की तरह फैल गई। लोग बड़े हैरान थे। शिशुपाल की तो नींद ही उड़ गई। उन्होंने खाना-पीना छोड़कर अपराधी का पता लगाने में रात-दिन एक कर दिया।

बहुत प्रयत्न करने के बाद जब अपराधी का पता चला, तो शिशुपाल के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। स्वयं सम्राट ने उस पहरेदार की हत्या की थी। सम्राट को अपराधी घोषित करना बहुत कठिन काम था। शिशुपाल करें भी तो क्या करें ? एक ओर वे न्यायमन्त्री थे और दूसरी ओर सम्राट के सेवक। परन्तु न्याय की दृष्टि से सम्राट और साधारण व्यक्ति में कोई अन्तर नहीं होता।

अगले दिन शिशुपाल बहुत शान्त थे। उन्होंने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया था। वे ठीक समय पर दरबार में पहुँचे। सम्राट अशोक सिंहासन पर बैठे हुए थे। आते ही उन्होंने शिशुपाल से पूछा, ''अपराधी का पता चला?''

न्यायमन्त्री ने साहसपूर्वक कहा, ''जी हाँ, पता चल गया।''

''तो फिर उसे दरबार में उपस्थित करो।''

न्यायमन्त्री कुछ रुके, फिर अपने एक उच्च अधिकारी को संकेत करते हुए बोले, ''सम्राट-अशोक स्वयं अपराधी हैं, इन्हें गिरफ्तार कर लिया जाए।''

दूसरे ही क्षण सम्राट के हाथों में हथकड़ी लगा दी गई।

न्यायमन्त्री ने कहा, ''अशोक! तुमने पहरेदार की हत्या का अपराध किया है। तुम इसका क्या उत्तर देते हो ?''

सम्राट होंठ काटकर रह गए।

न्याय-मन्त्री ने फिर पूछा, ''तो तुम अपना अपराध स्वीकार करते हो?''

''हाँ, मैंने उसे मारा अवश्य है, पर वह उद्दण्ड था।''

सम्राट ने उत्तर दिया।

''वह उद्‌दण्ड था या नहीं, तुमने एक राजकर्मचारी की हत्या की है। तुम अपराधी हो। तुम्हें मृत्यु-दण्ड दिया जाता है।'' न्याय-मन्त्री ने निर्णय सुनाया।

सारी सभा में सन्नाटा छा गया। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि सम्राट को अपराधी घोषित कर दण्डित भी किया जा सकता है। न्यायमन्त्री का निर्णय सुन सम्राट ने सिर झुका लिया। वे शिशुपाल की परीक्षा लेना चाहते थे। शिशुपाल अपनी परीक्षा में सफल हो गए थे। सम्राट का हृदय ऐसे व्यक्ति को पाकर गद्‌गद हो रहा था।

तभी न्यायमन्त्री का संकेत पाकर एक कर्मचारी सम्राट अशोक की सोने की मूर्ति लेकर उपस्थित हो गया। न्यायमन्त्री ने खड़े होकर कहा, ''सज्जनो! यह सच है कि मैं न्यायमन्त्री हूँ। यह भी सच है कि अपराधी को दण्ड मिलना चाहिए। परन्तु अपराधी और कोई नहीं स्वयं सम्राट हैं। शास्त्रों में राजा को ईश्वर का रूप माना गया है। इसलिए उसे ईश्वर ही दण्ड दे सकता है। अतएव मैं आज्ञा देता हूँ कि सम्राट को चेतावनी देकर छोड़ दिया जाए और उनके स्थान पर उनकी इस सोने की मूर्ति को फाँसी पर लटका दिया जाए, जिससे लोगों को शिक्षा मिले।''

न्यायमन्त्री का न्याय सुन सभी उनकी जय-जयकार कर उठे।

जब सब लोग चले गए, तो शिशुपाल ने राज-मुद्रा सम्राट अशोक के सामने रख दी और बोले, ''महाराज, यह राज-मुद्रा वापस ले लें, अब मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाएगा।''

अशोक ने उनकी ओर सम्मान भरी दृष्टि से देखते हुए गद्‌गद कण्ठ से कहा, ''आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। आपका साहस प्रशंसनीय है। यह भार आपके अतिरिक्त और कोई नहीं उठा सकता।''

न्यायमन्त्री निरुत्तर हो गए।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

परदेसी = दूसरे देश का (foreigner); अतिथि = मेहमान (guest); सुगम = आसान (simple); अवसर = मौका (occasion); सहमना = ठिठकना (afraid); प्रयत्न = कोशिश (effort); दृष्टि = नज़र (sight); क्षण = पल (second)।

श्रुतलेख (Dictation)

संध्या, सत्कार, ब्राह्मण, न्यायमंत्री, मुद्रा, क्षण, प्रयत्न

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) परदेसी किस समय आया था?

(ख) अतिथि का सत्कार किसने किया?

(ग) परदेसी चिढ़कर क्या बोल उठा?

(घ) कुछ दिन बाद शिशुपाल का घर पूछते-पूछते कौन आए?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) परदेसी कौन था? वह क्यों चिढ़ गया था?

____

(ख) राजा ने शिशुपाल को अपना न्यायमन्त्री क्यों नियुक्त किया था?

____

(ग) सम्राट अशोक ने अपने पहरेदार की हत्या क्यों कर दी?

____

(घ) शिशुपाल ने सम्राट के स्थान पर उनकी सोने की मूर्ति को फाँसी पर लटकाने का आदेश क्यों दिया?

____

(ङ) पाठ के आधार पर शिशुपाल की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) ब्राह्मण का नाम क्या था?

बह्मपाल ☐ रामपाल ☐ शिशुपाल ☐

(ख) ब्राह्मण ने परदेसी का किया–

सत्कार ☐ तिरस्कार ☐ दोनों ☐

(ग) कुछ दिन बाद कुछ सैनिकों ने शिशुपाल से किया–

गिरफ्तार ☐ राजा के पास चलने का आग्रह ☐ शिक्षा के लिए आग्रह ☐

(घ) चारों ओर न्यायमन्त्री के सुप्रबन्ध तथा न्याय की–

धूम मच गई ☐ निन्दा होने लगी ☐ प्रतीक्षा होने लगी ☐

(ङ) पहरेदार की हत्या का अपराधी कौन था?

न्यायमन्त्री ☐ सेनापति ☐ राजा ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

न्याय, ईश्वर, पवित्र, डंका, अपराधी

(क) अतिथि के चरणों से यह घर ________ हो जाएगा।

(ख) मुझे अवसर मिले तो मैं न्याय का ________ बजा दूँगा।

(ग) चारों तरफ न्यायमन्त्री के ________ की धूम मच गई।

(घ) सम्राट को ________ घोषित करना बहुत कठिन काम था।

(ङ) शास्त्रों में राजा को ________ का रूप माना गया।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) आँखों का तारा	(i) अधिक परिश्रमी
(ख) आँखें दिखाना	(ii) परेशान करना
(ग) काँटे बिछाना	(iii) बहुत प्यारा
(घ) नौ दो ग्यारह होना	(iv) मना करना
(ङ) कोल्हू का बैल	(v) भाग जाना

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) सुबह उठकर परदेसी शिशुपाल को गालियाँ देने लगा। ☐

(ख) दरबार में पहुँचकर शिशुपाल का कलेजा धड़कने लगा। ☐

(ग) सम्राट ने शिशुपाल को अपनी तलवार दे दी। ☐

(घ) लगभग तीन महीने बाद किसी ने रात में एक पहरेदार की हत्या कर दी।

(ङ) सम्राट के स्थान पर इनकी मूर्ति को फाँसी पर लटका दिया जाए।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों के विलोम लिखिए—

(क) उत्तर — ____________ (ङ) देश — ____________

(ख) शिक्षा — ____________ (च) समान — ____________

(ग) अपना — ____________ (छ) आशा — ____________

(घ) अधिकार — ____________ (ज) फ़ायदा — ____________

2. नीचे दिए शब्दों के संज्ञा-भेद लिखिए—

शब्द	संज्ञा-भेद	शब्द	संज्ञा-भेद
(क) देश —	____________	(ख) घर —	____________
(ग) पढ़ाई —	____________	(घ) खुशी —	____________
(ङ) लड़की —	____________	(च) राष्ट्रपति —	____________
(छ) मदर टेरेसा —	____________	(ज) इंदिरा गांधी —	____________

3. नीचे दिए गए शब्दों से नए-नए शब्द बनाइए—

(क) धन — ____________ ____________ ____________

(ख) डर — ____________ ____________ ____________

(ग) देश — ____________ ____________ ____________

(घ) आशा — ____________ ____________ ____________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

समूह कार्य (Group Discussion)

- न्यायप्रिय व्यक्तित्त्व पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

रचनात्मक गतिविधि

- 'हमें न्यायप्रिय क्यों होना चाहिए?'- इस विषय पर एक लघु निबन्ध लिखिए।

8

राष्ट्रीय ध्वज

(लेख)

बच्चो, किसी भी देश के लिए झंडा उसकी आज़ादी का प्रतीक होता है। सब देशों के झंडे अलग–अलग तरह के हैं। हमारे देश का झंडा केवल झंडा ही नहीं, बल्कि उसका अभिमान, सम्मान और उसकी शान भी है। यहाँ हम तुम्हें तिरंगे से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी देने जा रहे हैं।

जानते हो, हमारे झंडे में कितने रंग हैं? इसमें वास्तव में चार रंग हैं, पर हम इसे तिरंगा कहते हैं, क्योंकि इसमें प्रमुख तीन रंग हैं – केसरिया, सफ़ेद और हरा। इन तीनों रंगों में हमारी एकता की कहानी लिखी है।

केसरिया रंग 'बलिदान' का प्रतीक है। यह रंग उन वीरों की याद दिलाता है, जिन्होंने देश को आज़ाद कराने में अपने जीवन का बलिदान दे दिया। तिरंगे झंडे में दूसरा रंग सफ़ेद है। यह रंग 'शांति' और 'सच्चाई' का प्रतीक है। यह रंग हमारे विचारों की पवित्रता को भी प्रकट करता है। झंडे में हरा रंग 'हरियाली' और 'खुशहाली' का प्रतीक है। यह रंग हमारे देश की सुख–समृद्धि को दर्शाता है। हमारा देश मेहनत करने वाले श्रमिकों का देश है।

हमारे झंडे में चौथा रंग है – गहरा नीला। इस रंग से सफ़ेद पट्टी पर 'अशोक चक्र' को अंकित किया गया है। अशोक चक्र में चौबीस आरे हैं। यह भारत की 'गति ' तथा 'प्रगति' का प्रतीक है। इसमें भरा नीला रंग हमारी उन्नति की सीमा को दर्शाता है।

हमारा यह तिरंगा अंतरिक्ष में भी जा चुका है। **26** जुलाई, **1971** ई0 में जब अपोलो–15 अंतरिक्ष में भेजा गया तो उसमें अमेरिका व अन्य देशों के ध्वजों के साथ भारत का तिरंगा भी शामिल था। इसके पश्चात् अप्रैल, **1984** ई0 में यह भारत के राकेश शर्मा के अंतरिक्ष सूट पर टाँककर गया। अब भारत द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गए चंद्रयान में भी सवार होकर झंडे ने अंतरिक्ष को घूमा है।

वैसे तो सरकारी इमारतों, भवनों तथा अन्य अवसरों पर सूती–खादी के बने झंडों का ही प्रयोग किया जाता है। किंतु **26** जनवरी और **15** अगस्त के दिन फहराए जाने वाले राष्ट्रीय ध्वज सूती–खादी के नहीं, बल्कि रेशमी होते हैं।

सरकारी इमारतों तथा भवनों पर केवल एक ही राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। परंतु संसद भवन एक ऐसा सरकारी भवन है जिस पर प्रतिदिन तीन राष्ट्रीय ध्वज एक साथ फहराए जाते हैं। इसका कारण है कि इस भवन में लोकसभा के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा राज्यसभा के अध्यक्ष कार्य करते हैं। एक–एक राष्ट्रीय ध्वज तीनों के लिए फहराया जाता है। विश्व के हर देश में जहाँ भारतीय राजदूत रहते हैं, वहाँ पर भी हमारे देश का तिरंगा झंडा लहराता है।

यह झंडा हमारी स्वतंत्रता और सम्मान का प्रतीक है। हमें इसका आदर करना चाहिए। झंडे को फहराते और उतारते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि यह भूमि पर स्पर्श न करे।

झंडा फहराते समय किसी चीज़ से ढका हुआ नहीं होना चाहिए तथा इसे कभी भी उल्टा नहीं फहराना चाहिए।

क्या आप जानते हैं कि सन् **2002** के पूर्व कोई भी व्यक्ति झंडे को अपने घर पर नहीं फहरा सकता था। झंडे का प्रयोग केवल सरकारी भवनों तथा विशेष सरकारी व्यक्तियों द्वारा ही किया जा सकता था, परंतु **26** जनवरी, **2002** के बाद झंडे को सभी व्यक्ति सम्मान के साथ अपने घरों पर फहरा सकते हैं।

झंडे को दिन छिपते या सूर्यास्त के समय उतारना चाहिए। ध्यान रहे कि ध्वज फट न जाए। राष्ट्रीय ध्वज को तकिये के रूप में या रूमाल के रूप में प्रयोग करना निषेध है। इस ध्वज के अंदर फूलों की पंखुड़ियों के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु नहीं रखी जा सकती। राष्ट्रीय ध्वज को कभी भी पानी में नहीं डुबोना चाहिए। यदि ध्वज फट जाए या खराब हो जाए तो ध्वज की गरिमा के अनुरूप उसका सम्मान के साथ गंगा में विसर्जन करना या सम्मान के साथ जला देना चाहिए।

तिरंगे की रक्षा करना हम सबका कर्तव्य है। हमारे देश का झंडा ऊँचा रहे, यह हमारे लिए गौरव की बात है।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

प्रतीक = चिह्न (symbol); दर्शाता = दिखाता (to show); सम्मान = आदर (respect); श्रमिक = मजदूर (labour); मार्गदर्शन = रास्ता दिखाना (to see the path); अंकित = लिखा हुआ (written); पवित्रता = निर्मलता (purity); प्रगति = उन्नति (progress); समृद्धि = अत्यधिक अमीरी (wealth); स्पर्श = छूना (touch); पश्चात् = बाद में (after this); विशेष = खास (special)।

श्रुतलेख (Dictation)

प्रतीक, दर्शाता, श्रमिक, अंकित, पवित्रता, स्पर्श, पश्चात्

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) सभी देशों के अपने अलग—अलग क्या हैं?

(ख) केसरिया रंग किसका प्रतीक है?

(ग) अशोक चक्र में कितने आरे हैं?

(घ) अशोक चक्र किसका प्रतीक है?

(ङ) **26** जुलाई, **1971** में कौन—सा यान अंतरिक्ष में भेजा गया?

लिखित (Written)

1. **इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—**

(क) हमारे देश के ध्वज में प्रमुख कितने रंग हैं?

___

(ख) हरा रंग किस बात का प्रतीक है?

___

(ग) सफ़ेद रंग क्या प्रकट करता है?

___

(घ) सभी व्यक्ति को घरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने की अनुमति कब प्राप्त हुई?

___

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) देश के लिए झंडा किसका प्रतीक होता है?

आज़ादी का ☐ गुलामी का ☐ कोई नहीं का ☐

(ख) हमारे ध्वज में वास्तव में कितने रंग हैं?

दो ☐ तीन ☐ चार ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) केसरिया रंग ________ का प्रतीक है।

(ख) केसरिया रंग ________ की याद दिलता है।

(ग) सफ़ेद रंग ________ और ________ का प्रतीक है।

(घ) हरा रंग ________ और ________ का प्रतीक है।

(ङ) अशोक चक्र में ________ आरे हैं।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) केसरिया	(i) आरे
(ख) सफ़ेद	(ii) बलिदान
(ग) हरा	(iii) शांति
(घ) गहरा नीला	(iv) खुशहाली
(ङ) अशोक चक्र	(v) प्रगति

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों के लिंग निर्धारण कीजिए—

शब्द	लिंग	शब्द	लिंग
(क) देश	— ________	(घ) एकता	— ________
(ख) झंडा	— ________	(ङ) सम्मान	— ________
(ग) इमारत	— ________	(च) आज़ादी	— ________

2. दिए गए वाक्यांशों में से विशेषण और विशेष्य छाँटकर सही स्थान पर लिखिए—

वाक्यांश		विशेषण	विशेष्य
(क) नीली पट्टी	—	________	________
(ख) केसरिया रंग	—	________	________
(ग) राष्ट्रीय ध्वज	—	________	________
(घ) भारतीय राजदूत	—	________	________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- अपने देश से जुड़ी बातें, अपने बड़ों से जानिए और उसको अपने शब्दों में लिखिए।

समूह कार्य (Group Discussion)

- आप अपने राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा को बनाए रखने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे? अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।

रचनात्मक गतिविधि

- अपने देश के तिरंगे का सुंदर सा चित्र बना के उसमें रंग भरिए।

पक्का मित्र 9
(कहानी)

इंग्लैंड के प्रसिद्ध वेस्टमिण्स्टर स्कूल में दो लड़के पढ़ते थे-निकोलस और बेक। बेक को सत्य से प्रेम था, जबकि निकोलस को असत्य से। एक निर्भीक था, जबकि दूसरा कायर; एक मेहनती था, तो दूसरा आलसी। फिर भी दोनों अभिन्न मित्र थे। मित्र भी साधारण नहीं, एक-दूसरे पर प्राण न्योछावर करने वाले।

एक दिन की बात है। दोनों अपने-अपने स्थान पर बैठकर पढ़ रहे थे। शिक्षक महोदय कुछ देर के लिए बाहर चले गए। सब लड़के पढ़ाई बंद करके ऊधम मचाने लगे। निकोलस ने सोचा, 'कोई ऐसा काम करना चाहिए जिससे सबको मज़ा आ जाए।' उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई। उसने देखा कि सामने खिड़की में साफ़ शीशा लगा हुआ है। उसमे हाथ आगे बढ़ गए। एक साधारण-सा धक्का लगा और शीशा टूट गया। निकोलस का हृदय काँप उठा, बिलकुल पत्ते की भाँति, चेहरा पीला पड़ गया। आँखों के सामने चित्र नाच उठा, शिक्षक सज़ा देंगे। आश्चर्य नहीं, स्कूल से भी निकाल दें। फिर मेरा भविष्य....।

निकोलस सिर झुकाकर अपने स्थान पर जा बैठा। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा रहा था। कमरे में सन्नाटा पसर गया। शिक्षक लौटे तो उन्हें ऐसा सन्नाटा देखकर उन्हें संदेह हुआ। वे खिड़की के पास गए तो देखा कि उसका शीशा टूटा हुआ है। वे क्रोध से गरज़े- "जिसने यह शरारत की है, वह खड़ा हो जाए," किंतु कोई खड़ा नहीं हुआ। वे क्रोधित होकर एक-एक लड़के से पूछने लगे। उन्होंने निकोलस से भी पूछा। उसने साफ़ इंकार कर दिया। अब बेक की बारी आई। उसने सोचा, 'निकोलस मेरा मित्र है। उसने अपराध किया है, किंतु वह उसे अस्वीकार कर रहा है। क्यों न मैं उसका अपराध अपने सिर पर ले लूँ। मित्र को ऐसा ही तो करना चाहिए।' बेक बोल

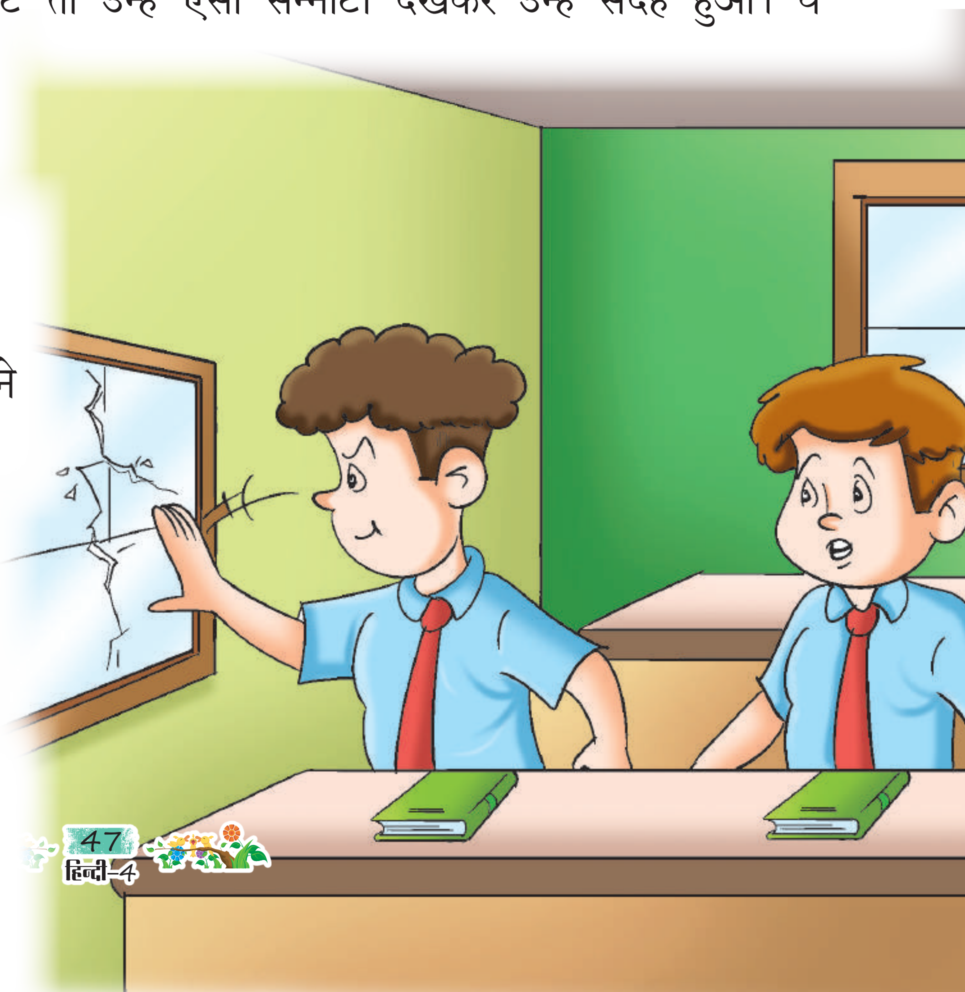

उठा-''शीशा मैंने तोड़ा है।' सभी लड़के आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देखने लगे। निकोलस शर्म से पानी-पानी हो गया। बेक पर मार पड़ने लगी। चमड़ी छिल गई। शरीर पर नीले दाग पड़ गए। इसके बावजूद बेक के चेहरे पर दृढ़ता और विजय की भावना थी। छुट्टी हुई। साथियों ने बेक को घेर लिया। निकोलस चुपचाप खड़ा था। उसकी आँखों में आँसू थे। उसने रुँधे स्वर में कहा-''बेक तुमने अपने इस त्याग से मेरे भीतर नई ज्योति पैदा कर दी है। मुझ पर तुम्हारा यह बहुत बड़ा ऋण है। मैं तुम्हारे इस ऋण को कभी नहीं भूलूँगा।''

चालीस साल बीत गए। निकोलस न्यायाधीश बन गया और बेक सेनानायक। उन दिनों इंग्लैंड में क्रॉमवेल का शासन था। राजतंत्रवादियों और प्रजातंत्रवादियों में युद्ध चल रहा था। बेक राजतंत्रवादियों के साथ था। उसे बंदी बनाकर एकजिस्टर भेज दिया गया। निकोलस वहीं पर न्यायाधीश था। क्रॉमवेल का आदेश था- राजतंत्रवादी कैदियों को मृत्युदंड। जब कर्नल बेक का नाम आया तो निकोलस आश्चर्य से उसे देखने लगा। वह अपने पुराने मित्र बेक को पहचान गया। वह कर्त्तव्य से बँधा था। उसने कुछ सोचकर निर्णय दिया-''चार दिन बाद सबको फाँसी दे दी जाए।''

निकोलस अपने कमरे में गया और नौकर से बोला-''मेरे लिए एक ऐसा घोड़ा लाओ जो एकजिस्टर में सबसे तेज़ हो।'' कुछ देर बाद लोगों ने देखा कि निकोलस हवा से बातें करते हुए लंदन की ओर भागा जा रहा है। वह दो रात और एक दिन की लंबी यात्रा करके लंदन पहुँचा।

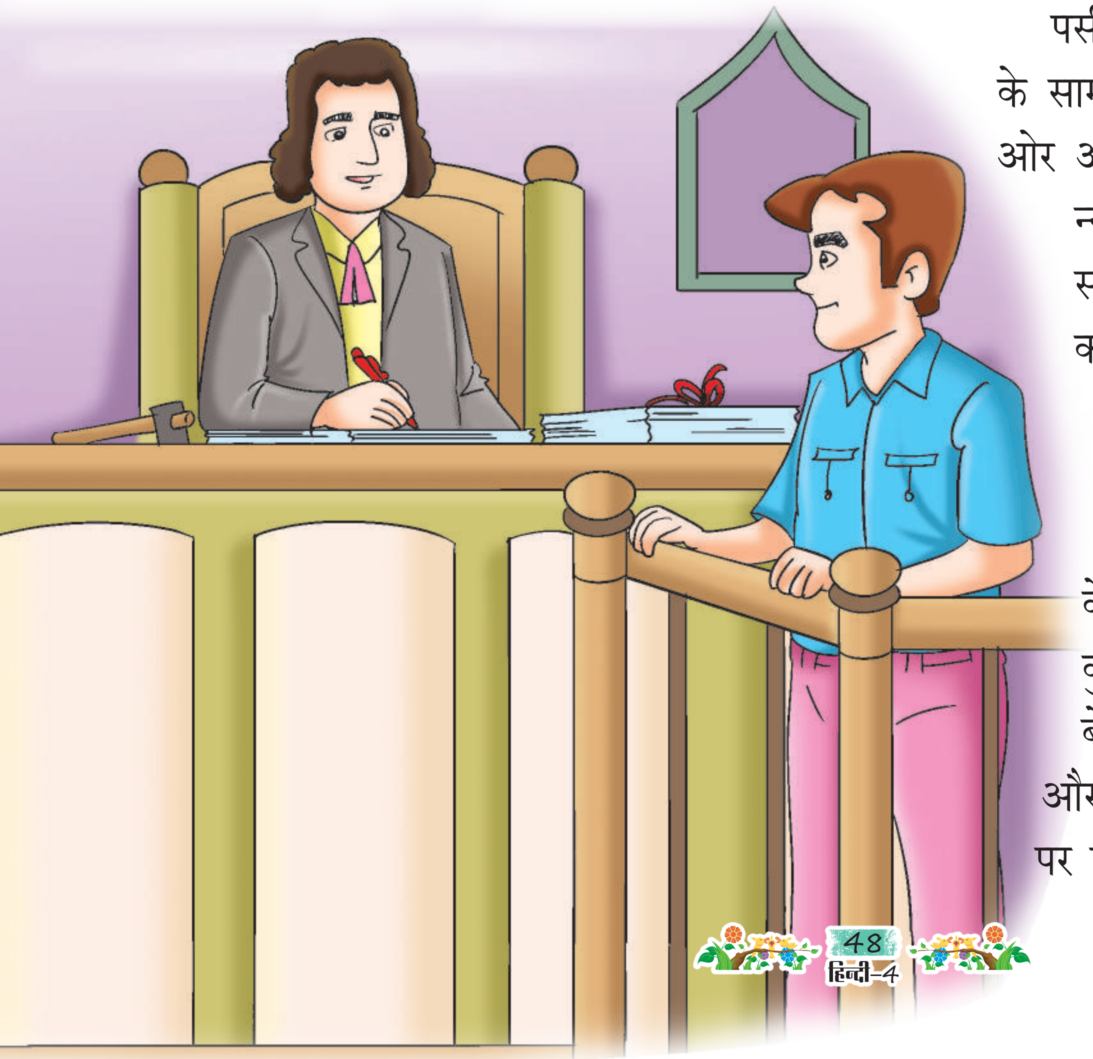

पसीने से लथपथ निकोलस क्रॉमवेल के सामने खड़ा था। क्रॉमवेल ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा और पूछा-''कौन न्यायाधीश निकोलस? क्यों, इस समय, इस दशा में?'' निकोलस ने कहा-''हाँ, मैं हूँ निकोलस। मुझ पर अपने मित्र का बहुत बड़ा ऋण है। अब समय आ गया है कि मैं उसे उतार दूँ। आपकी सहायता के बिना संभव नहीं है।'' क्रॉमवेल कुछ हैरान हुआ तो निकोलस ने बेक के बारे में सब कुछ बता दिया और कहा-''बेक ने ही मुझे इस स्थान पर पहुँचाया है। यदि बेक मेरे अपराध

को अपने ऊपर न लेता तो मेरे मन में सत्य की ज्योति नहीं जगती। मैं कायर ही बना रहता। मैं अपने प्यारे मित्र के लिए आपसे क्षमादान चाहता हूँ।

क्रॉमवेल बड़ा ही कठोर था। निकोलस और बेक की मित्रता की कहानी ने उसकी भी आँखों में आँसू छलका दिए। उसने क्षमादान का पत्र लिखकर निकोलस को देते हुए कहा-''आखिर मैं भी तो मनुष्य हूँ, निकोलस!''

निकोलस पत्र लेकर तुरंत लौट पड़ा। वह शीघ्र ही एकजिस्टर की जेल में जा पहुँचा। बेक जेल की एक कोठरी में चुपचाप बैठा था। निकोलस ने क्षमादान का पत्र बेक की ओर बढ़ाकर उसे अपनी भुजाओं में कस लिया।

वह रुँधे गले से बोला-''क्या मुझे भूल गए बेक?'' बेक ने भी उसी स्वर मैं उत्तर दिया-''तुम भी कभी भुलाए जा सकते हो, निकोलस!'' दोनों मित्रों की आँखें डबडबा रही थीं। मित्र हों तो ऐसे!

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

न्योछावर = समर्पित करना (an offering); ऊधम = शोरगुल करना (uproar); आश्चर्य = हैरानी (astonish); अस्वीकार = मंजूर न करना (to be rejacted); दृढ़ता = मजबूती (strength); विजय = जीत (victory); न्यायाधीश = जज (judge); निर्णय = फ़ैसला (decision); क्षमादान = माफ़ी देना (to pardon); शीघ्र = जल्दी (quick); ज्योति = प्रकाश (light); आँखें डबडबाना = आँखों में आँसू भर आना (tear come in eyes); कायर = डरपोक (timid); शर्म = लज्जा (shame); ऋण = कर्ज़ (loan); आदेश = आज्ञा (order); सन्नाटा पसरना = एकदम चुप हो जाना (to fall silent)।

श्रुतलेख (Dictation)

न्योछावर, ऊधम, आश्चर्य, न्यायधीश, ऋण, क्षमादान, प्रजातंत्र

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) आपको यह कहानी कैसी लगी?

(ख) इस कहानी का अन्य शीर्षक सोचकर बताइए।

(ग) निकोलस घोड़े पर चढ़कर कहाँ गया?

(घ) चालीस साल बाद निकोलस क्या बना?

(ङ) निकोलस और बेक किस स्कूल में पढ़ते थे?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) दोनों मित्र के स्वभाव में क्या अंतर था?

____

(ख) चालीस साल बाद दोनों मित्र क्या बन गए?

____

(ग) निकोलस ने क्रॉमवेल से क्या प्रार्थना की?

____

(घ) पसीने से लथपथ निकोलस कहाँ पहुँचा?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) निकोलस का स्वभाव कैसा था?

असत्यवादी ☐ कायर ☐ आलसी ☐

(ख) खिड़की का शीशा किसने तोड़ा था?

बेक ने ☐ निकोलस ने ☐ शिक्षक ने ☐

(ग) बड़ा होकर निकोलस क्या बना?

न्यायाधीश ☐ सैनिक ☐ शिक्षक ☐

(घ) बेक को क्षमादान किसने दिया?

निकोलस ने ☐ सेनानायक ने ☐ क्रॉमवेल ने ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) निकोलस और बेक _______________ में पढ़ते थे।

(ख) _______________ ने खिड़की का शीशा तोड़ दिया।

(ग) निकोलस _______________ था।

(घ) क्रॉमवेल बहुत _______________ हृदय था।

(ङ) ____________ ने क्षमादान पत्र लिखकर दे दिया।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) प्रसिद्ध	(i) न्यायाधीश
(ख) अभिन्न	(ii) वेस्टमिण्स्टर
(ग) पीला	(iii) मित्र
(घ) शीशा	(iv) चेहरा
(ङ) निकोलस	(v) खिड़की

5. निम्नलिखित कथन किसने, किससे कहे?

कथन	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "जिसने यह शरारत की है,वह खड़ा हो जाए।"'	____________	____________
(ख) "मैं तुम्हारे इस ऋण को कभी नहीं भूलूँगा।"	____________	____________
(ग) "आखिर मैं भी तो मनुष्य हूँ।"	____________	____________
(घ) "मेरे लिए एक ऐसा घोड़ा लाओ जो एकजिस्टर में सबसे तेज़ हो।"	____________	____________

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. 'अ' वर्ण लगाकर शब्दों का निर्माण कीजिए-

(क) अ + भिन्न — ____________ (घ) अ + निश्चित — ____________

(ख) अ + विश्वास — ____________ (ङ) अ + सत्य — ____________

(ग) अ + धर्म — ____________ (च) अ + परिचित — ____________

2. दिए गए मुहावरों का अर्थ समझते हुए उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) शर्म से पानी-पानी होना = बेहद शर्मिंदा होना।

____

(ख) पसीने से लथपथ हो जाना = बहुत थक जाना।

____

(ग) आँखो के आगे अँधेरा छा जाना = भयभीत होना।

____

(घ) हृदय काँप उठना = डरना।

____

(ङ) चेहरा पीला पड़ जाना = बुरी तरह घबरा जाना।

____

3. दिए गए शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए—

(क) मेहनती — ____________ (ङ) यात्रा — ____________

(ख) नज़र — ____________ (च) ऋण — ____________

(ग) संदेह — ____________ (छ) सहायता — ____________

(घ) मित्र — ____________ (ज) अपराध — ____________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

समूह कार्य (Group Discussion)

- यदि आपसे कक्षा की कोई चीज़ टूट जाए या खराब हो जाए, तो आप क्या करोगे?

रचनात्मक गतिविधि

- यदि तुम्हारा मित्र बीमार पड़ जाता है, तो आप क्या करते हो?

____

____

____

____

____

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी 10

(संवाद)

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे। अलगू जब कभी बाहर जाते, तो अपना घर जुम्मन के भरोसे छोड़ जाते थे।

जुम्मन की एक बूढ़ी खाला थी। उनके पास थोड़ा–सी जायदाद थी, लेकिन उनके निकट संबंधियों में कोई नहीं था। जुम्मन ने लंबे–चौड़े वायदे करके वह जायदाद अपने नाम लिखवा ली। कुछ दिन खाला की खूब सेवा की, लेकिन रजिस्ट्री होते ही सब कुछ बदल गया। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियाँ देने के साथ कड़वी बातें भी सुनाने लगी।

कुछ दिन खाला ने सब सुना और सहा। जब नहीं सहा गया, तो जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने अपनी पत्नी को कुछ कहना उचित नहीं समझा। कुछ दिन तक रो–धोकर काम चलता रहा। अंत में एक दिन खाला ने कहा – '' बेटा, तुम्हारे साथ मेरा निबाह न होगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अलग खा–पका लिया करूँगी।'' जुम्मन बोले – ''रुपये क्या यहाँ फलते हैं।

इस पर खाला बिगड़ गई। उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन बोले – ''हाँ, ज़रूर पंचायत कर लो। फ़ैसला हो जाए। मुझे भी रात-दिन की यह खट-पट पसंद नहीं।'' एक दिन संध्या के समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। जब पंच लोग अपने स्थान पर बैठ गए, तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की – ''पंचो! आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भांजे जुम्मन के नाम लिख दी थी। जुम्मन ने मुझे रोटी–कपड़ा देना कबूल किया था। साल भर तो मैंने रो–धोकर इसके साथ काटा, लेकिन

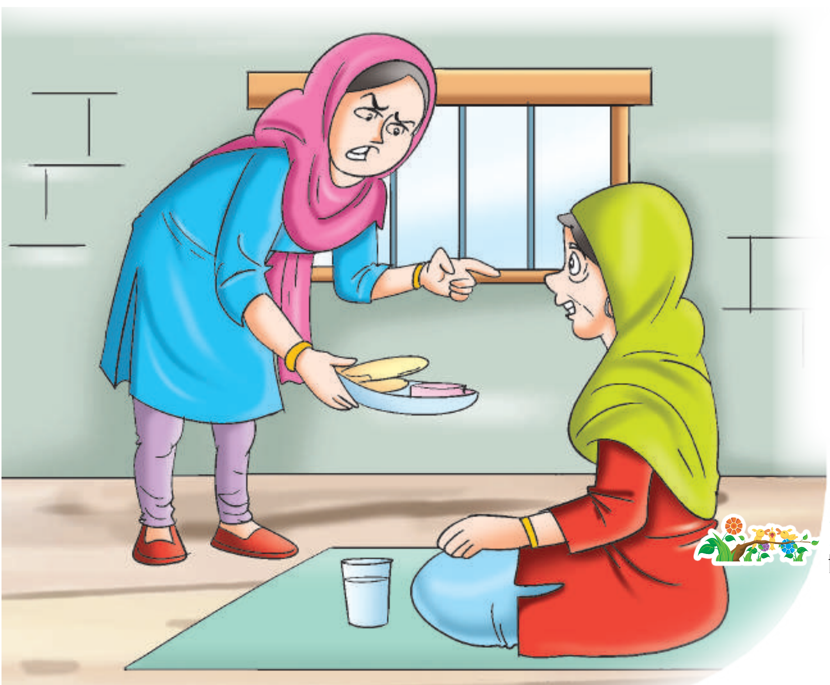

अब सहा नहीं जाता। मुझे न पेट भर रोटी मिलती है, न तन को कपड़ा। मैं बेसहारा हूँ। तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह चलूँ। मैं पंचों की बात सिर–माथे चढ़ाऊँगी।'' सरपंच किसे बनाया जाए, इस प्रश्न पर जुम्मन शेख और खालाजान में कुछ कहा-सुनी हो गई। अंत में खाला बोलीं – ''बेटा, पंच न किसी के दोस्त होते हैं न किसी के दुश्मन। तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो, तो जाने दो। अलगू चौधरी को तो मानते हो ? लो, मैं उन्हीं को सरपंच मानती हूँ।''

जुम्मन आनंद से फूल उठे, लेकिन मन के भावों को छिपाकर बोले – ''चलो, अलगू चौधरी ही सही।''

अलगू चौधरी सरपंच हुए। उन्होंने कहा-''जुम्मन शेख, हम-तुम पुराने दोस्त हैं, मगर इस समय तुम और बूढ़ी खाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो।''

जुम्मन ने कहा-''खुदा गवाह है, आज तक मैंने खालाजान को कोई तकलीफ़ नहीं दी।''

अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की। जुम्मन चकित थे कि अलगू को क्या हो गया है। मुझसे इतने प्रश्न क्यों पूछ रहे हैं? जुम्मन यह सब सोच ही रहे थे कि अलगू ने फ़ैसला सुनाया- ''जुम्मन शेख, पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यही ठीक लगता है कि खालाजान को महावार खर्च दिया जाए। अगर खर्च देना मंजूर न हो, तो रजिस्ट्री रद्द समझी जाए। बस यही हमारा फ़ैसला है।

फ़ैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। अलगू के फ़ैसले की सभी लोगों ने प्रशंसा की। इस फ़ैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। जुम्मन को यह फ़ैसला आठों पहर खटकने लगा। वे इस ताक में थे कि किसी तरह अलगू से बदला लेने का अवसर मिले।

ऐसा अवसर जल्द ही जुम्मन के हाथ आ गया। अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत ही अच्छी जोड़ी मोल लाए थे। जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। अब अकेला बैल किस काम का गाँव में एक समझू साहु थे। उन्होंने एक महीने में दाम चुकाने का वादा करके चौधरी से यह बैल खरीद लिया।

समझू साहु ने नया बैल पाया, तो लगे रगेदने। न चारे की फ़िक्र न पानी की। वे दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगा। एक दिन साहु जी ने दूना बोझ लाद दिया। बैल ने ज़ोर लगाया, लेकिन वह आधे रास्ते में ही धरती पर गिर पड़ा। ऐसा गिरा कि फिर न उठ सका।

अलगू जब बैल का दाम माँगते, तब साहु-सहुआइन दोनों ही झल्ला उठते। कहते मुझे बैल दिया था, उस पर क्षमा माँगने चले हैं।

इसी तरह कई बार झगड़े हुए, लेकिन साहु जी ने बैल का दाम नहीं चुकाया। लोगों ने साहु जी को समझाया–''भाई पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाए, उसे स्वीकार कर लो।'' साहु जी राजी हो गए।

उसी पेड़ के नीचे पंचायत शुरू हो गई। रामधन ने कहा–"चौधरी बोलो, किसको पंच मानते हो?"

अलगू ने कहा – "समझू साहु ही चुन लें।" समझू खड़े हुए और अकड़कर बोले – "मेरी ओर से जुम्मन शेख।"

अलगू का कलेजा धक-धक करने लगा। फिर भी उन्होंने कहा – "ठीक है, मुझे स्वीकार है।"

सरपंच बनते ही जुम्मन में अपनी ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उन्होंने सोचा – मैं इस समय न्याय के सबसे ऊँचे आसन पर बैठा हूँ। सत्य से ज़रा भी टलना मेरे लिए उचित नहीं है।

पंचों ने दोनों से सवाल–जवाब शुरू किए। अंत में जुम्मन ने फ़ैसला सुनाया – "अलगू चौधरी और समझू साहु! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस समय उन्होंने बैल लिया था, उस समय बैल को कोई बीमारी नहीं थी। बैल की मौत केवल इस कारण हुई कि उससे कठिन काम लिया गया और उसके दाने-चारे का प्रबंध नहीं किया गया।"

फ़ैसला सुनकर अलगू चौधरी फूले न समाए। वे उठकर खड़े हुए और ज़ोर से बोले – "पंच परमेश्वर की जय!"

थोड़ी देर बाद जुम्मन चलकर अलगू के पास आए और उनके गले से लिपटकर अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

गाढ़ी = पक्की, मजबूत (strong); उचित = ठीक (right); संध्या = शाम (evening); विनती = प्रार्थना (prayer); कबूल = स्वीकार (accept); निगाह = नज़र (sight); तकलीफ़ = कष्ट (grief); फ़िक्र = चिंता (distress)।

श्रुतलेख (Dictation)

फ़िक्र, तकलीफ, गाढ़ी, रद्द, झल्ला, पंचायत, सरपंच

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में क्या थी?

(ख) खाला ने जुम्मन के नाम अपनी क्या कर दी?

(ग) जुम्मन की पत्नी खाला को कैसी बातें सुनाने लगीं?

(घ) खाला ने जुम्मन को क्या करने की धमकी दी?

(ङ) खाला ने किसकी बातें सिर—माथे चढ़ाने को कहा?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) खाला ने अपनी जायदाद जुम्मन क नाम क्यों कर दी थी?

____

(ख) अलगू चौधरी के सरपंच बनने पर जुम्मन खुश क्यों हुए?

____

(ग) अलगू चौधरी ने अपना बैल किसे और क्यों बेच दिया?

____

(घ) सरपंच बनते ही जुम्मन में कौन—सा भाव उत्पन्न हुआ?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) जुम्मन की पत्नी का क्या नाम था?

करीमन ☐ नसीमन ☐ महरीना ☐

(ख) खाला ने पंचायत कितने साल बाद की?

तीन साल बाद ☐ पाँच साल बाद ☐ छह साल बाद ☐

(ग) जुम्मन ने फ़ैसला किसके पक्ष में सुनाया?

अलगू चौधरी के ☐ खाला के ☐ समझू साहु के ☐

3. **सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—**

(क) साहु जी ने ____________ का दाम नहीं चुकाया।

(ख) बैल आधे रास्ते में ही ____________ पर गिर पड़ा।

(ग) अलगू का कलेजा ____________ करने लगा।

(घ) ____________ सुनकर अलगू चौधरी फूले न समाए।

(ङ) ____________ के समय पेड़ के नीचे पंचायत हुई।

4. **स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—**

स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क) अलगू चौधरी ने	(i)	दिलों का मैल धुल गया।
(ख) फ़ैसला सुनते ही जुम्मन	(ii)	जुम्मन से जिरह शुरू की।
(ग) सत्य से ज़रा भी टलना	(iii)	सन्नाटे में आ गए।
(घ) फ़ैसला सुनकर अलगू चौधरी	(iv)	मेरे लिए उचित नहीं है।
(ङ) इस पानी से दोनों के	(v)	फूले न समाए।

5. **निम्नलिखित कथन किसने, किससे कहे?**

कथन	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "बेटा, तुम्हारे साथ मेरा निबाह न होगा।" '	____________	____________
(ख) "रुपये क्या यहाँ फलते हैं?"'	____________	____________
(ग) "हम—तुम पुराने दोस्त हैं।"'	____________	____________
(घ) "चौधरी बोलो, किसको पंच मानते हो?"	____________	____________
(ङ) "पंच परमेश्वर की जय!"'	____________	____________

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. **'बे' जोड़कर नए शब्द बनाइए और उनके अर्थ लिखिए—**

(क) बे + सहारा — ____________ — ____________

(ख) बे + कसूर — ____________ — ____________

(ग) बे + परवाह — ____________ — ____________

(घ) बे + फ़िक्र — ____________ — ____________

(ङ) बे + ईमान — ____________ — ____________

2. दिए गए वाक्यों को उचित मुहावरे लिखकर पूरा कीजिए-

फूले न समाए, आनंद से फूल उठे, मैल धुल गया,

कलेजा धक—धक करने लगा, सिर—माथे चढ़ाऊँगी।

(क) खाला ने कहा — "मैं पंचों की बात ____________।"

(ख) अलगू चौधरी का नाम सुनकर जुम्मन ____________।

(ग) फ़ैसला सुनकर अलगू चौधरी ____________।

(घ) दोनों के दिलों का ____________।

(ङ) अलगू चौधरी का ____________।

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

समूह कार्य (Group Discussion)

- आप अपने मित्र के साथ मिलकर ऐसी ही एक कहानी बनाइए।

रचनात्मक गतिविधि

- अगर जुम्मन की जगह आप होते तो क्या फ़ैसला करते? अपने फ़ैसले का कारण भी बताइए।

दार्जिलिंग की सैर 11

(कहानी)

राजीव सिलीगुड़ी में रहता था। उसके पापा डॉक्टर होने के कारण बहुत व्यस्त रहते थे। अतः वे राजीव को छुट्टियों में कहीं घुमाने भी नहीं ले जा पाते थे। पिछले वर्ष राजीव के अध्यापक उसकी कक्षा को टूर पर काजीरंगा लेकर गए थे। लेकिन राजीव नहीं जा पाया था। आज कक्षा में अध्यापकजी ने बच्चों को दार्जिलिंग के टूर के बारे में सूचित किया। इच्छुक विद्‌यार्थियों को अपना नाम नियत राशि के साथ जमा करने के लिए एक सप्ताह का समय भी दिया। 'टूर' शब्द राजीव के लिए रोमांच भरा और जिज्ञासावाला था। अतः इस बार राजीव ने सोच लिया था कि वह भी स्कूल के अन्य छात्रों के साथ टूर पर दार्जिलिंग जरूर जाएगा। परंतु समस्या यह थी कि पापा से दार्जिलिंग जाने की बात कैसे कहे। शाम को क्लीनिक से आकर पापा चाय पीने लगे। राजीव ने सोचा कि बात करने का यही उचित समय है। वह आकर धीरे से बोला—

"पापा! पापा! आप मना तो नहीं करेंगे?"

"बेटा किस बात के लिए?"

"पापा, हमारी कक्षा के बच्चे टूर पर दार्जिलिंग जा रहे हैं। मैं भी टूर पर जाना चाहता हूँ।"

"ठीक है सोचूँगा। कितने बच्चे जा रहे हैं?"

"पापा! कक्षा के अधिकतर बच्चे जा रहे हैं। प्लीज, मुझे भी जाने दीजिएगा।"

थोड़ी देर तक राजीव के पापा सोचते रहे फिर उन्होंने राजीव को आज्ञा दे दी।

बस, फिर तो राजीव ने तुरंत अपने मित्रों को फोन कर दिया। अगले दिन उसने स्कूल में पहुँचते

ही सर को टूर पर जाने की राशि दे दी और बेसब्री से टूर पर जाने के दिन का इंतजार करने लगा।

आज खुशी के मारे राजीव का चेहरा फूल-सा खिल रहा था, क्योंकि अगले दिन सुबह ही उसे बस से जाना था। राजीव के साथ सभी बच्चे दार्जिलिंग जैसा खूबसूरत पहाड़ियों का शहर देखने के लिए उत्साहित थे। राजीव की मम्मी ने कुछ गरम कपड़े भी अटैची में रख दिए। साथ में कुछ नाश्ते का सामान बिस्कुट, दालमोठ, मठरी और लड्डू भी रख दिए। खाने का सामान देखकर तो राजीव फूला नहीं समाया। टूर पर जाने के उत्साह के कारण राजीव सुबह जल्दी-जल्दी उठकर तैयार हो गया। वह अटैची लेकर पापा के पास जाकर खड़ा हो गया और पापा का हाथ पकड़कर प्यार से बोला- ''पापा प्लीज, मुझे स्कूल छोड़ आइए। अगर देर हो गई तब मैं यहीं रह जाऊँगा।''

अपने बेटे की उत्सुकता और चाहत को देखकर राजीव के पापा उसे तुरंत स्कूल छोड़ने के लिए चल दिए। रास्ते-भर राजीव के पापा उसे समझाते रहे कि बेटा ज्यादा शैतानी मत करना, टीचर के साथ रहना, उनका कहना मानना, पहाड़ों की ज़्यादा ऊँचाई पर चढ़कर नीचे मत झाँकना, गरम कपड़े पहने रहना और अकेले मत घूमना।

अपने पापा की हर बात पर राजीव 'हाँ' कहता रहा। बस, इसी तरह बातों ही बातों में स्कूल आ गया।

स्कूल पहुँचकर राजीव ने देखा कि बस तैयार खड़ी थी। सर कुछ बच्चों के साथ बस में बैठे हुए थे। कार से उतरकर राजीव पहली बार साथियों के साथ टूर पर जा रहा था।

सर ने सब बच्चों को कुछ बातें सावधानी बरतने के लिए समझाईं। फिर बच्चों को खाने के लिए मठरी एवं मीठे बिस्कुट छोटी-छोटी थैलियों में डालकर दिए। खाने के बाद गानों का कार्यक्रम चला। किसी ने गीत, किसी ने कविता, किसी ने गजल सुनाई।

इसी तरह बस का सफर चलता रहा। सर बच्चों का मनोरंजन करवाते रहे। बस मैदान पार करके कब पहाड़ों पर आ गई, पता ही नहीं चला। इसका पता तब लगा जब बस दार्जिलिंग की टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ी सड़कों पर लहराती, बलखाती चल रही थी।

रास्ते में सीढ़ीदार खेत दिखाई दे रहे थे। ऐसे हरे-भरे खेत देखकर बच्चे उछल पड़े और सब एक साथ बोले— "सर, ये हरे-भरे सीढ़ियों जैसे खेत किसके हैं?" "बच्चों, ये चाय के बागान हैं?" "क्या! चाय के और वे भी हरे-भरे!!" "हाँ बच्चों, ये सब चाय के बागान हैं।"

सर ने बच्चों को चाय के बागान दिखाने के लिए बस को एक उपयुक्त स्थान पर रुकवा दिया। बस के रुकते ही बच्चे

सावधानी से उतर गए और बड़े आश्चर्य से चाय के बागानों को देखने लगे। सबसे पहले दीपक ने प्रश्न किया— ''सर, चाय की खेती इस तरह क्यों की जाती है?''

''बेटा, सर्वप्रथम इसके लिए धूपदार मौसम और पर्याप्त बारिश की जरूरत होती है। चाय समतल मैदानों मे पैदा नहीं की जाती, क्योंकि वहाँ पर सीढ़ियाँ बनाकर खेती नहीं कर सकते हैं।''

''सर, सीढ़ियाँ क्यों बनाते हैं?''— एक साथ कई बच्चों ने पूछा।

''बच्चों, चाय के ऐसे पौधे बीजों से तैयार किए जाते हैं। जब पौधा बड़ा हो जाता है, तब उसे सीढ़ीदार या ढलानदार खेतों में रोपा जाता है क्योंकि चाय के पौधों की जड़ों को ठहरे हुए पानी से बचाया जा सकता है।''

''सर , यह बात तो समझ में आ गई, लेकिन एक और आश्चर्य की बात है कि इन चाय की पत्तियों को केवल महिलाएँ ही तोड़ रही हैं। यहाँ कोई पुरुष क्यों नहीं हैं?''— राजीव बोला।

''हाँ बच्चों, यह खास बात है कि पुरुष इन पत्तियों को नहीं तोड़ते क्योंकि चाय की पत्तियाँ नरम होती हैं और पुरुषों के हाथ सख्त बस, इसलिए औरतें और लड़कियाँ ही चाय की पत्तियाँ तोड़ती हैं। चाय के पौधे 1.5 मीटर से लंबे नहीं जाते हैं। जानते हो, क्यों? क्योंकि इनकी पत्तियों को तोड़ना फिर मुश्किल हो जाएगा।''

बीच में ही शरद बोला— ''सर, यह पत्तियाँ साल में कितनी बार तोड़ी जाती हैं?''

''साल में तीन बार चाय की पत्तियों की चुनाई होती है— बरसात, गरमी और शरद ऋतु में। अच्छा बच्चों, अब होटल चलते हैं जहाँ पर हम लोगों को ठहरना है। वहाँ भोजन करके आप सब सो जाना। फिर सुबह घूमने भी तो जाना है।''

''अच्छा सर''— कहकर सभी बच्चे बस में बैठ गए।

दार्जिलिंग का मौसम उन्हें बहुत अच्छा लग रहा था। वहाँ की ठंडी-ठंडी हवा का वे खूब आनंद ले रहे थे।

लहराती, बलखाती, ऊँची-नीची सड़कों पर चलती हुई बस शीघ्र ही होटल पहुँच गई। सब बच्चे बस से उतरे और अपना सामान लेकर अपने-अपने कमरों में चले गए।

उनके कमरों में टी.वी. भी रखे थे जिन्हें चालू करके उन्होंने कुछ देर अपने मनपसंद कार्यक्रम देखे। उसी समय सर राजीव के कमरे में आए और बोले— ''कल हम लोग एक फैक्ट्री जाएँगे जहाँ चाय तैयार होती है।''

''हाँ सर, हम लोग आपसे पूछने ही वाले थे कि यह पत्तियाँ तो हरी होती हैं लेकिन प्रयोग होने वाली चाय प्रायः काले या भूरे रंग की होती है। ऐसा क्यों होता है?''—राजीव बोला।

"वही तो कल हम लोग फैक्ट्री जाकर देखेंगे!"

"अच्छा सर"— कहकर थके हुए बच्चे शीघ्र ही खाना खाकर सो गए। सुबह दस बजे तक सभी बच्चे स्नान करके तैयार हो गए और नाश्ता करके सर के साथ चाय की फैक्ट्री देखने चल दिए।

जब वे फैक्ट्री पहुँचे तो वहाँ चाय की पत्तियाँ सुखाई जा रही थीं। कहीं सूखी पत्तियों पर खमीर उठाने के लिए पानी का छींटा दिया जा रहा था तो कहीं सूखी मुरझाई तैयार पत्तियाँ छानी जा रही थीं। वहाँ बड़ी चाय और छोटी चाय अलग-अलग तैयार हो रही थीं। अंत में तैयार चाय मशीनों द्वारा डिब्बों में भरी जा रही थीं। डिब्बों में भरने से पहले एक जगह सूखी पत्तियों पर बेलन घुमाया जा रहा था। इससे पत्तियों का एक समान आकार हो रहा था।

यह सब देखकर बच्चे बहुत खुश हुए। फिर राजीव ने सर से कहा— "सर, अब हमने यह तो जान लिया कि चाय कैसे तैयार होती है। अब हम दार्जिलिंग में क्या देखेंगे?"

राजीव की बात सुनकर सर खूब जोर से हँसे और बोले— "कल सुबह हम सब टाइगर हिल जाएँगे, जहाँ से सूर्योदय के समय पूरी हिमालय की पर्वत शृंखला दिखाई देती है।"

सब बच्चे फिर होटल पहुँचने के लिए खुशी-खुशी बस में बैठ गए।

–निर्मला सिंह

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

जिज्ञासा वाला = जानने की इच्छा (curiosity); उत्सुकता = प्रबल इच्छा, बेचैनी (eagerness); समतल = बराबर, चौरस (flat); रोपना = लगाना (transplant); नरम = मुलायम (soft); प्रयोग = इस्तेमाल (used); सूर्योदय = सूर्य का निकलना (sunrise); शृंखला = कतार, पंक्ति (series)।

श्रुतलेख (Dictation)

सिलीगुड़ी, व्यस्त, छुट्टियों, काजीरंगा, दार्जिलिंग, कार्यक्रम, इच्छुक, सप्ताह, उत्साहित, सीढ़ीदार, उपयुक्त, शृंखला

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) राजीव की कक्षा टूर पर कहाँ जा रही थी?

(ख) बस में बच्चों को खाने के लिए क्या दिया गया?

(ग) चाय के पौधे कितने लंबे होते हैं?

(घ) अंत में चाय डिब्बों में कैसे भरी जा रही थी?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) राजीव के पापा छुट्टियों में उसे घुमाने क्यों नहीं ले जा पाते थे?

(ख) राजीव में उत्साह क्यों झलक रहा था?

(ग) चाय की खेती के लिए कैसे मौसम की आवश्यकता होती है?

(घ) चाय की पत्तियों को केवल महिलाएँ ही क्यों तोड़ती हैं?

(ङ) चाय की खेती सीढ़ीदार या ढलाईदार खेतों में ही क्यों की जाती है?

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) राजीव कहाँ रहता था?

सिलीगुड़ी में ☐ काजीरंगा में ☐ दार्जिलिंग में ☐

(ख) राजीव के पापा क्या थे?

इंजीनियर ☐ डॉक्टर ☐ व्यापारी ☐

(ग) चाय की पत्तियाँ साल में कितनी बार तोड़ी जाती हैं?

तीन ☐ दो ☐ चार ☐

4. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

दार्जिलिंग, उत्सुकता, पर्वत श्रृंखला, व्यस्त, जिज्ञासावाला

(क) राजीव के पापा डॉक्टर होने के कारण बहुत ________ थे।

(ख) 'टूर' शब्द राजीव के लिए ________ था।

(ग) अपने बेटे की ________ देखकर उसके पापा उसे स्कूल छोड़ने के लिए चल दिए।

(घ) राजीव का टूर ________ जा रहा था।

(ङ) 'टाइगर हिल' से हिमालय की ________ दिखाई देती हैं।

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) राजीव के पापा पुलिस कमिश्नर थे। ☐

(ख) राजीव अपने पापा से बात करने के लिए डर रहा था। ☐

(ग) राजीव 'टूर' पर दार्जिलिंग जाना चाहता था। ☐

(घ) राजीव उत्साह के कारण सुबह देर से उठा। ☐

(ङ) 'टाइगर हिल' जगह काजीरंगा में स्थित है। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए वाक्यों में कोष्ठक से सही शब्द चुनकर लिखिए–

(क) राजीव ने सोचा ________ बात करने का यही उचित समय है। (कि/और)

(ख) राजीव का चेहरा फूल-सा खिल रहा था ________ अगले दिन सुबह ही उसे बस से जाना था। (क्योंकि/परंतु)

(ग) ठंडी हवा ________ चमचमाती धूप में बच्चे खूब आनंद ले रहे थे। (अन्यथा/और)

(घ) पिछले साल अजय के सर टूर लेकर काजीरंगा गए थे ________ राजीव नहीं जा पाया था। (लेकिन/और)

2. नीचे दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए—

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
(क) महिला —	________	(ख) सेठ —	________
(ग) लड़की —	________	(घ) युवक —	________
(ङ) मालिन —	________	(च) सम्राट —	________
(छ) अभिनेत्री —	________	(ज) विद्वान —	________
(झ) कवयित्री —	________	(ञ) बादशाह —	________

3. नीचे दिए गए द्वित्व व्यंजनों से तीन-तीन शब्द बनाइए—

(क) ड्ड — ________ ________ ________

(ख) म्म — ________ ________ ________

(ग) च्च — ________ ________ ________

(घ) त्त — ________ ________ ________

(ङ) ब्ब — ________ ________ ________

4. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित सर्वनाम अथवा क्रिया शब्दों का सही रूप में प्रयोग करके वाक्य पूरे कीजिए—

(क) ________ कार खरीदनी है। (मैं)

(ख) उसने एक चित्र ________ है। (बना)

(ग) ________ कल से बीमार है। (उसे)

(घ) ________ पुस्तक खो गई। (मुझे)

(ङ) बीमार व्यक्ति ________ है। (सोना)

5. पाठ से दो युग्म शब्द-ढूँढकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए—

(क) ________________________________

(ख) ________________________________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- मित्र के साथ किसी पहाड़ी यात्रा की योजना बनाते हुए संवाद लिखिए।

समूह कार्य (Group Discussion)

- दार्जिलिंग के विषय में इंटरनेट से जानकारी एकत्रित करके सचित्र परियोजना तैयार कीजिए।

रचनात्मक गतिविधि

- अपने मित्र को पत्र या ई-मेल लिखकर अपनी किसी यात्रा के बारे में बताइए।

गुरु महाराज का आगमन

(कहानी)

12

बचपन में मेरा एक मित्र था, उसका नाम था– लल्लू। लल्लू के पिता धनी गृहस्थ थे। कई साल हुए, पुराना घर तुड़वाकर तिमंज़िली इमारत बनवाई थी। तभी से लल्लू की माँ की बहुत इच्छा थी कि अपने गुरू महाराज को उसमें लाकर उनके चरणों की रज से घर को पवित्र करे।

कुछ दिन बाद गुरू महाराज आ गए। लेकिन कैसा खराब दिन था— आकाश में काले बादल छाए हुए थे। आँधी और पानी थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

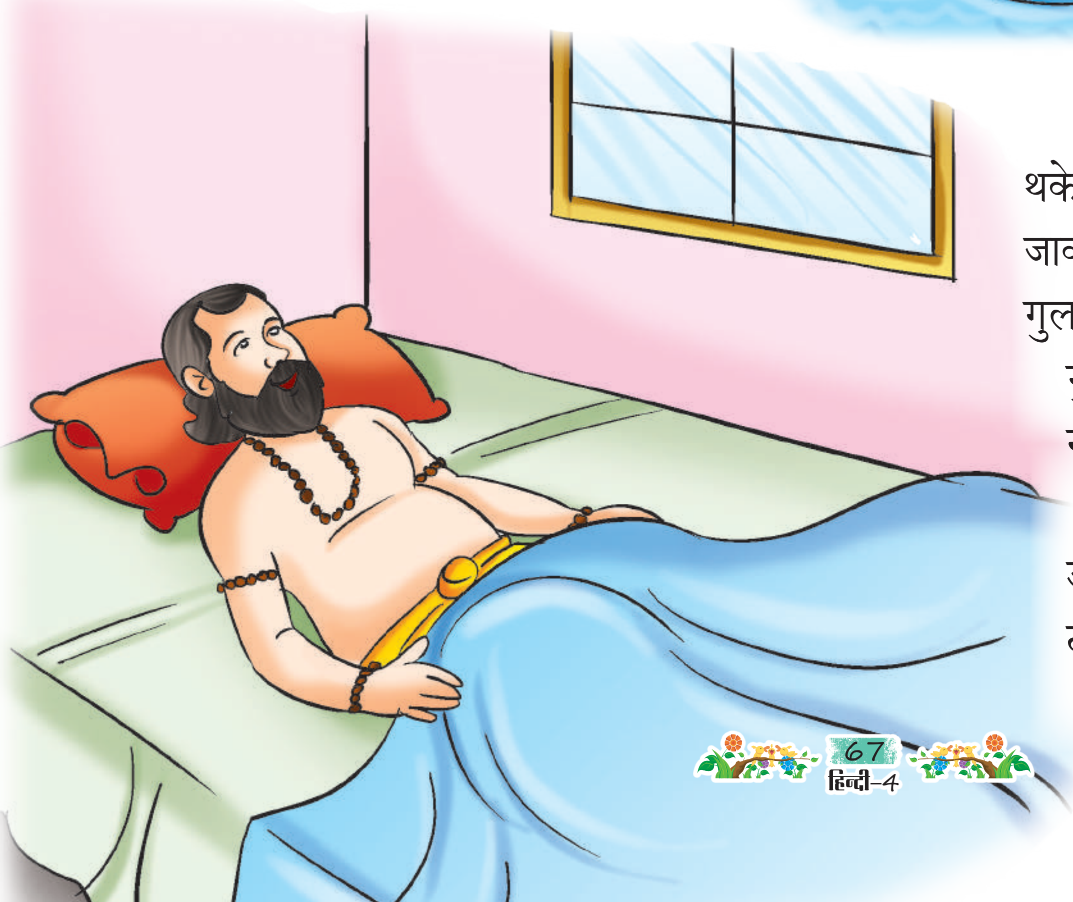

बातचीत में रात हो गई थी। राह के थके हुए गुरूदेव खा-पीकर पलंग पर जाकर लेट गए। बढ़िया पलंग और गुलगुले बिछौने पर लेटकर प्रसन्नचित्त गुरूजी ने मन-ही-मन लल्लू की माँ नंदरानी को अनेक आशीर्वाद दिए।

लेकिन गहरी रात में अकस्मात् उनकी नींद उचट गई। छत से पानी टपक रहा था— उनकी तोंद तर हो

रही थी। ओह! वह पानी कितना ठण्डा था! वे हड़बड़ाकर पलंग से उठ पड़े।

निवाड़ का पलंग नहीं था। गुरूजी उसे मसहरी समेत दूसरे कोने में खींच ले गए और चुपके-से फिर लेटे रहे। लेकिन एक मिनट भी नहीं बीत पाया था कि फिर वैसे ही दो-चार बूँद ठण्डा पानी टप-टप पेट पर टपका।

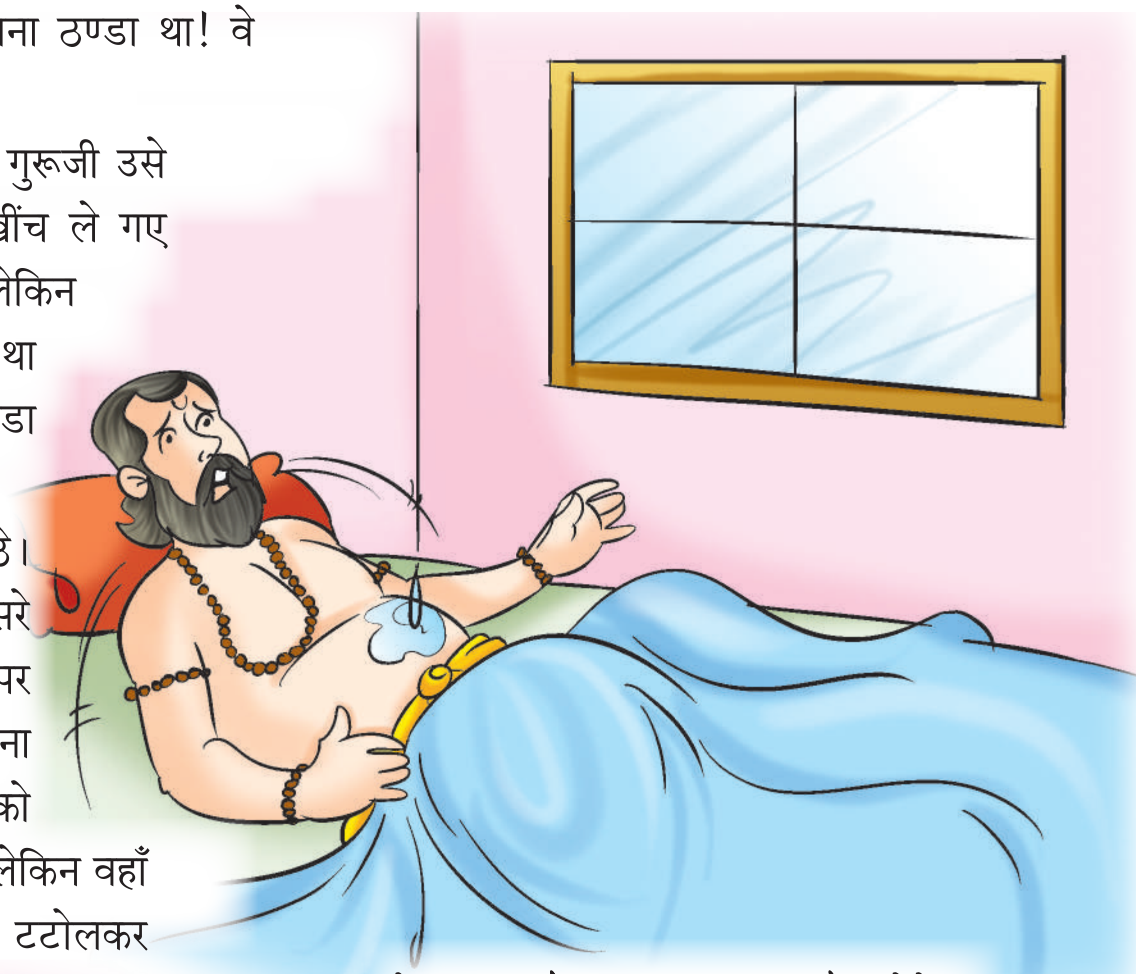

गुरू महाराज फिर उठ बैठे। फिर पलंग को खींचकर दूसरे किनारे पर ले गए। फिर लेटे, पर पेट के ऊपर पानी का टपकना जारी रहा। इस बार पलंग को खींचकर चौथे कोने में ले गए, लेकिन वहाँ भी वही हाल हुआ। इस बार टटोलकर देखा, बिछौना भी भीग गया है, सोने का उपाय नहीं है।

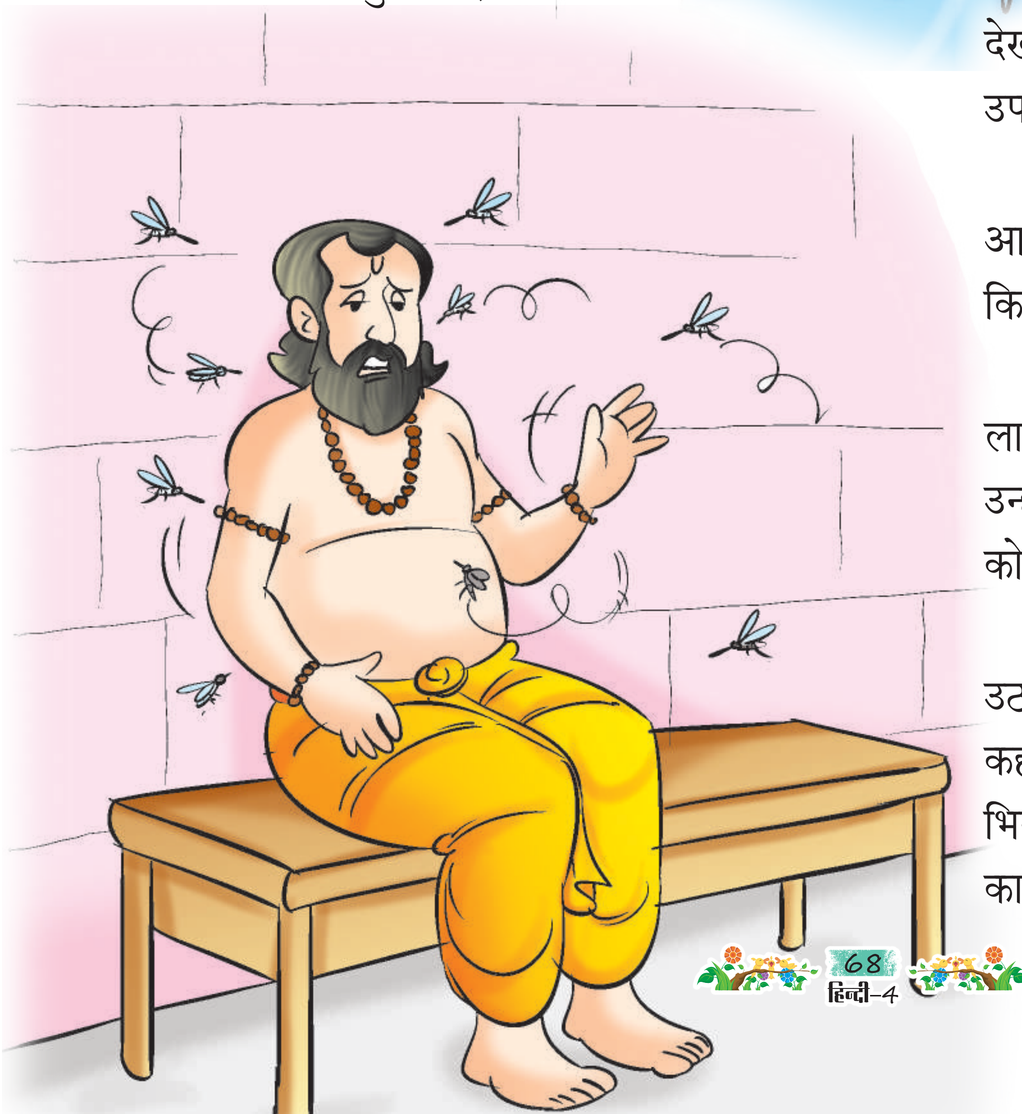

गुरू महाराज डरते हुए बरामदे में आए। वहाँ एक लालटेन जल रही थी, किन्तु आदमी कोई न था।

एक तरफ एक बेंच पड़ी हुई थी। लाचार होकर गुरूजी उसी पर जा बैठे। उन्होंने आधी धोती खोलकर अपनी देह को अच्छी तरह ढक लिया।

उसी समय एकाएक एक नया उपद्रव उठ खड़ा हुआ। बड़े-बड़े मच्छरों ने जाने कहाँ से आकर उनके कानों के पास भिनभिनाना शुरू कर दिया। मच्छरों के काटने से जलन-सी होने लगी। गुरूजी

तेज़ी से उठकर वहाँ से भागे। लेकिन मच्छरों ने पीछा नहीं छोड़ा। गुरूजी बार-बार लगातार इधर-उधर हाथ-पाँव मारते थे, अँगौछा फटकारकर मच्छरों को भगाते थे, लेकिन किसी तरह उन मच्छरों को रोक न पाते थे। गुरूजी की इस गोलीबारी से अगर दो-चार मच्छर शहीद हो जाते थे, तो उनकी जगह लेने के लिए नई कुमुक आ जाती थी— दूने उत्साह से मच्छरों की फौज हमला कर देती थी। गुरूजी बरामदे में इस सिरे से उस सिरे तक भागने लगे और इस जाड़े की ऋतु में भी उनकी देह से पसीना छूटने लगा।

घर की किसी घड़ी में टन-टन करके चार बजे। गुरूजी ने मच्छरों से खीझकर कहा, "काटो, जी भरकर काटो। अब मेरे हाथ-पाँव नहीं चलते।" इतना कहकर वे दीवार का सहारा लेकर ज़मीन पर बैठ गए और बोले, "अगर सवेरे तक जीता रहा, तो इस अभागे शहर में फिर कभी नहीं आऊँगा। सवेरे जो पहली गाड़ी मिलेगी, उसी से अपने घर भाग जाऊँगा।"

देखते-ही-देखते सभी कष्टों को मिटाने वाली गहरी नींद ने आकर उनकी सारी रात की तकलीफ़ दूर कर दी। गुरू महाराज अचेत-से होकर वहीं वैसे ही सो गए।

सवेरे नन्दरानी नीचे उतरकर आईं। देखा, गुरूजी के कमरे का द्वार खुला हुआ है। कमरे के भीतर झाँककर देखा, गुरूजी भीतर नहीं हैं। लेकिन यह क्या मामला है! रात में पलंग दक्षिण की ओर बिछा था, अब उत्तर की ओर चला गया है।

बाहर निकलकर नौकरों को पुकारा, लेकिन व्यर्थ। अभी कोई उठा ही नहीं था। गुरूजी कहाँ गए? एकाएक उनकी नज़र एक तरफ गई तो वे आश्चर्य से कह उठीं, "अरे यह क्या है?" एक कोने में, जहाँ कुछ अँधेरा-सा था, एक आदमी-सा जान पड़ा। हिम्मत करके नन्दरानी आगे बढ़ीं, पास जाकर झुककर देखा, यह तो उन्हीं के गुरूजी हैं। वे अव्यक्त आशंका से चिल्ला उठीं, "गुरूजी! ओ गुरूजी!"

गुरू महाराज उठकर खड़े हो गए और बोले, "रातभर कितना कष्ट मिला, क्या बताऊँ बेटी!"

नन्दरानी ने घबराकर पूछा, "क्या हुआ, गुरूजी?"

गुरू महाराज ने कुछ रुआंसा-सा होकर कहा, "नया मकान तो तुमने ज़रूर बनवाया है, बेटी! लेकिन उसकी छत सब जगह से छलनी हो रही है। रातभर जो पानी बरसा, वह बाहर नहीं गया। सारा मेरी देह के ऊपर ही गिरता रहा। खाट खींचकर जिधर भी ले गया, वहीं पानी टपका! छत फटकर कहीं मेरे ऊपर ही न गिर पड़े, इस आशंका से मैं बाहर भागा। लेकिन इससे भी जान नहीं बची।"

बहुत कोशिश और अनुनय-विनय से घर में लाए गए गुरूजी की वह करुण कहानी सुनकर और उनकी बुरी दशा अपनी आँखों से देखकर नन्दरानी की आँखें भर आईं। उन्होंने कहा, "लेकिन

गुरूजी, घर तो यह तिमंजिला बना है। आपके कमरे के ऊपर खुली छत नहीं है, और भी कमरे हैं! वर्षा का पानी तीन-तीन छतों को तोड़कर आपके ऊपर कैसे गिर सकता है?''

कहते-कहते एकाएक उन्हें ख्याल आया कि शायद यह उसी शैतान लल्लू की कोई कारस्तानी होगी। वे दौड़कर कमरे के भीतर गईं। बिछौना टटोलकर देखा, बिछी हुई चादर बीच में बिल्कुल भीग गई है। ऊपर नज़र डाली तो देखा कि मसहरी से अब भी बूँद-बूँद करके पानी टपक रहा है।

झटपट मसहरी उतारी तो देखा कि उस कपड़े में बँधा बर्फ का एक डला उस समय भी मौजूद था। नन्दरानी सब समझ गईं। पागलों की तरह झपटकर वे बाहर निकलीं और जो भी नौकर सामने पड़ा, उसी को चिल्लाकर हुकुम दिया, ''देखो दुष्ट कहाँ गया, तुम लोग और काम छोड़ो, जाकर उस बदमाश को जहाँ भी पाओ, वहीं से मारते-मारते घसीट लाओ।''

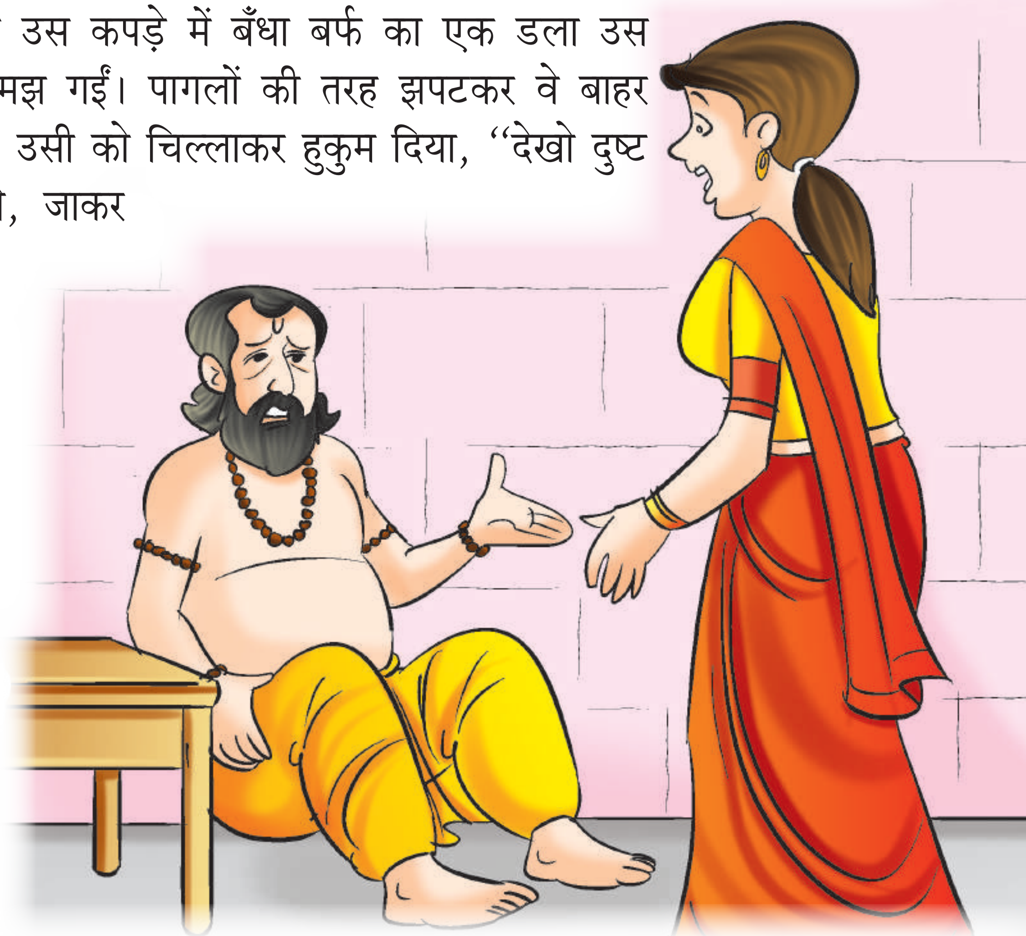

लल्लू के पिता उसी समय ऊपर से नीचे आ रहे थे। पत्नी का बेतहाशा बिगड़ना और चिल्लाना देख-सुनकर वे भौंचक्के-से हो गए और पूछा, ''क्या हुआ? क्यों चिल्ला रही हो?''

नन्दरानी रो पड़ीं और बोलीं, ''बिना किसी कारण के उसने गुरूदेव की क्या दशा की है, ज़रा चलकर देख लो।''

तब सब लोग कमरे के भीतर गए। लल्लू की करतूत सब समझ गए। गुरूजी अपनी मूर्खता पर 'हो हो' कर हँसने लगे।

नौकरों ने आकर कहा, ''लल्लू बाबू कोठी में नहीं हैं।''

और एक नौकर ने आकर खबर दी कि वे मौसी के घर में बैठे पेट-पूजा कर रहे हैं।

इसके बाद लगभग पन्द्रह दिन तक लल्लू ने अपने घर की चौखट पर पैर नहीं रखा।

—शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

इमारत = भवन (building); रज = धूल (dust); थमना = रुकना (stop); धावा = आक्रमण (attack); कुमुक = सैनिकों की सहायता के लिए भेजे गए सैनिक (aid); व्यर्थ = बेकार (in vain); अनुनय = प्रार्थना (prayer); अव्यक्त = छिपी हुई, जो प्रकट नहीं की गई (invisible); आशंका = डर (fear); कारस्तानी = करतूत (deed); पेट-पूजा = खाना-पीना (taking food)।

श्रुतलेख (Dictation)

तिमंज़िली, आर्शीवाद, प्रसन्नचित, निवाड़, अँगौछा, रुआंसा, चौखट

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- इन प्रश्नों के उत्तर दो—

(क) नन्दरानी ने कितने मंज़िली इमारत बनवाई?

(ख) गुरूजी के आने वाले दिन मौसम कैसा था?

(ग) क्या गिरने के कारण गुरूजी की नींद उचट गई थी?

(घ) गुरूजी की मसहरी पर बर्फ़ किसने रखी?

(ङ) बेंच पर बैठने पर किन्होंने गुरूजी को परेशान किया?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) लल्लू की माँ का क्या नाम था? उनकी क्या इच्छा थी?

____

(ख) अकस्मात् गुरू महाराज की नींद कैसे उचट गई?

____

(ग) गुरूजी ने बेंच की शरण कब ली?

____

(घ) कौन-सा नया उपद्रव उठ खड़ा हुआ?

____

(ङ) जाड़ों में भी गुरूजी महाराज को पसीना क्यों आ गया था?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) लल्लू के पिता कैसे थे?

बीमार ☐ धनी ☐ निर्धन ☐

(ख) गुरूजी पलंग को खींचकर ले गए-

बरामदे में ☐ दूसरे कमरे में ☐ दूसरे कोने में ☐

(ग) जाड़े की ऋतु में गुरूजी की देह से छूटने लगा-

पसीना ☐ खून ☐ पानी ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

पानी, छलनी, गृहस्थ, अकस्मात्, उपद्रव

(क) लल्लू के पिता धनी ________ थे।

(ख) आँधी और ________ थमने का नाम नहीं ले रहे थे।

(ग) गहरी रात में ________ गुरूजी की नींद उचट गई।

(घ) उसी समय एकाएक एक नया ________ खड़ा हो गया।

(ङ) मकान की छत सब जगह से ________ हो रही है।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) लल्लू के पिता	(i) गहरी नींद
(ख) गुरू महाराज	(ii) नन्दरानी
(ग) लल्लू की माँ	(iii) धनी गृहस्थ
(घ) आकाश में	(iv) चरणों की रज
(ङ) कष्टों को मिटाने वाली	(v) काले बादल

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) बातचीत में बहुत देर हो गई थी। ☐

(ख) गुरूजी छड़ी से मच्छरों को भगाते रहे। ☐

(ग) नन्दरानी ने देखा कि गुरूजी का कमरा खुला है। ☐

(घ) बेटी, रात-भर बहुत अच्छी नींद आई। ☐

(ङ) लल्लू बाबू मौसी के घर बैठे पेट-पूजा कर रहे हैं। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए—

(क) पिता — ____________ (ख) सेठ — ____________

(ग) महाराज — ____________ (घ) युवक — ____________

(ङ) मालिन — ____________ (च) सम्राट — ____________

2. नीचे दिए गए द्वित्व व्यंजनों से तीन-तीन शब्द बनाइए—

(क) क्क — ____________ ____________ ____________

(ख) ट्ट — ____________ ____________ ____________

(ग) न्न — ____________ ____________ ____________

(घ) ज्ज — ____________ ____________ ____________

(ङ) द्द — ____________ ____________ ____________

3. कहानी में आए विशेषण तथा विशेष्य शब्दों को छाँटकर लिखिए—

	विशेषण	विशेष्य		विशेषण	विशेष्य
1.	____________	____________	4.	____________	____________
2.	____________	____________	5.	____________	____________
3.	____________	____________	6.	____________	____________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- क्या लल्लू, ने गुरुजी के साथ ठीक किया? अपने शब्दों में लिखिए।

समूह कार्य (Group Discussion)

- क्या हमें इस तरह की शैतानियाँ करनी चाहिए जिससे किसी को कष्ट हो? अपनी कक्षा में इस पर चर्चा कीजिए।

रचनात्मक गतिविधि

- 'गुरू महाराज का आगमन' में दुष्ट शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है। उसकी दुष्टता क्या थी?

महाराज कृष्णदेव राय 13

(कहानी)

पहले राजा-महाराजाओं के दरबार में ऐसे लोग भी होते थे, जो हाज़िर-जवाबी से लोगों का मनोरंजन किया करते थे। ऐसे लोगों को विदूषक कहते थे। तेनाली रामन भी इसी प्रकार का एक विदूषक था। उसका असली नाम तो 'रामन' था, तेनाली गाँव का रहने वाला था, इसलिए उसे तेनाली रामन कहते थे। रामन बचपन से ही बहुत बुद्धिमान और चतुर था। शब्दों का तो वह जादूगर था ही, शब्दों के विचित्र अर्थ निकालकर वह लोगों को चकित कर देता था। सब उसकी बुद्धिमानी की प्रशंसा करते थे।

लोगों को विश्वास था कि रामन एक दिन ज़रूर बड़ा आदमी बनेगा। उन दिनों विजयनगर के महाराज कृष्णदेव राय का बहुत बड़ा नाम था। उनके दरबार में बड़े-बड़े विद्वान रहते थे। रामन ने भी उनके दरबार में जाने का निश्चय कर लिया। यद्यपि इतने बड़े राजा के दरबार में प्रवेश पाना हँसी-खेल न था, पर रामन अपने निश्चय पर अडिग था।

एक कहावत है– 'जहाँ चाह वहाँ राह।'

उन्हीं दिनों कृष्णदेव राय के राज-गुरु भट्टाचार्य तेनाली के पास ही एक गाँव में छुट्टियाँ मनाने आए हुए थे। रामन उनके पास पहुँचा और अपनी इच्छा प्रकट की।

भट्टाचार्य ने रामन की सहायता करने का वचन दिया। रामन ने उनके पास रहकर खूब सेवा की। कुछ दिनों बाद भट्टाचार्य राजधानी लौट गए।

रामन काफ़ी दिनों तक प्रतीक्षा करता रहा, पर भट्टाचार्य का कोई संदेश नहीं आया। अतः रामन ने स्वयं महाराज कृष्णदेव राय के दरबार में जाने का निश्चय कर लिया।

उन दिनों महाराज ने कुछ विद्वानों की एक सभा बुलाई हुई थी। रामन भी इस सभा में जा पहुँचा। सभा में वाद-विवाद हो रहा था।

एक विद्वान कह रहा था– ''हम संसार में नए-नए प्रकार की वस्तुएँ देखते हैं– पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि। पर ये सब ऐसी नहीं हैं जैसी दिखाई देती हैं। हम केवल इन्हें ऐसी मान लेते हैं।''

दूसरे विद्वान इस बात पर विचार कर ही रहे थे कि अचानक रामन खड़ा हो गया। उसने उस विद्वान से पूछा– ''मान लीजिए, हम कोई चीज़ खाना चाहते हैं, तो क्या केवल यह मान लेना ही काफ़ी है कि हम वह चीज़ खा रहे हैं?''

''हाँ,'' विद्वान ने उत्तर दिया।

अब तेनाली रामन ने कहा– ''भाइयो! भोजन तैयार है। आइए, हम सब तो भोजन करने चलें। पर ये महाशय यहाँ बैठे-बैठे ही मान लेंगे कि इन्होंने भोजन कर लिया है। इन्हें यहीं बैठा रहने दीजिए।'' रामन का इतना कहना था कि सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। महाराज उसकी हाज़िर-जवाबी से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने उसे अपने दरबार में विदूषक का स्थान दे दिया। अब वह तेनाली रामन के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

एक दिन महाराज तेनाली रामन की किसी बात पर अप्रसन्न हो गए। उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा– ''जाओ, मुझे कभी अपना मुँह मत दिखाना।''

अगले दिन तेनाली रामन अपने मुँह पर एक मुखौटा लगाकर दरबार में आया। उसे देखकर सब लोग हँसने लगे।

महाराज ने देखा तो वे बड़े क्रुद्ध हुए। उन्होंने सिपाहियों को आज्ञा दी– ''इसे ले जाओ और जेल में बंद कर दो।''

तेनाली रामन ने नम्रता से कहा– ''अपराध क्षमा हो महाराज,मैंने तो आपकी आज्ञा का ही पालन किया है। मैं तो अपने मुँह पर नकली चेहरा लगाकर आया हूँ, ताकि आपको मेरा मुँह न दिखाई दे।'' यह सुनकर महाराज का गुस्सा भी उत्तर गया।

तेलानी रामन के विषय में अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। एक बार की बात है। महाराज कृष्णदेव राय अपनी प्रजा का हाल जानने के लिए राज्य के विभिन्न भागों में जाना चाहते थे। सभी दरबारी चाह रहे थे कि महाराज उन गाँवों में जाएँ जिनकी दशा अच्छी है या उनके गाँवों में जाएँ जिनकी दशा अच्छी नहीं है। इससे उनके गाँव की मदद हो जाएगी, गाँव वालों पर उनका रौब भी पड़ जाएगा।

एक मंत्री बोला– ''महाराज! इस बार आप मेरे गाँव चलिए।'' महाराज सोचने लगे कि आखिर किस गाँव में जाया जाए। उन्होंने तेनाली रामन की ओर देखा। तेनाली रामन ने कहा– ''महाराज आपका हाथी जिधर ले जाए,उधर ही जाइए।''

तेनाली रामन की बात सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। दूसरे दिन महाराज हाथी पर सवार होकर चल दिए। कुछ और लोग भी साथ थे। चलते-चलते हाथी एक ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ के लोग बहुत गरीब थे। उनकी हालत देखकर महाराज बहुत दुखी हुए। वे बोले– ''हमें मालूम था कि हमारे राज्य में इतने निर्धन लोग भी रहते हैं। हाथी हमें बिल्कुल सही स्थान पर लाया है। इन्हें वास्तव में हमारी सहायता की आवश्यकता है।''

महाराज की बात सुनते ही महावत ने अपनी चादर उतार फेंकी। तेनाली रामन को सामने देखकर सब चकित रह गए। महाराज मुस्कुराकर बोले– ''अच्छा, तो हाथी को तुम यहाँ लाए थे।''

जिस प्रकार बीरबल के चुटकुले बड़े चाव से सुने जाते हैं, उसी प्रकार तेनाली रामन के चुटकुले भी बड़े प्रसिद्ध हैं। तेनाली रामन केवल विदूषक ही नहीं थे, वरन् वे तेलुगू भाग के एक प्रसिद्ध कवि भी थे।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

विदूषक = हँसी की बातें एवं क्रियाएँ करने वाला/नकल करके हँसाने वाला (clown, jester); बुद्धिमान = होशियार (intelligent,wise); प्रशंसा = तारीफ़ (praise); विश्वास = भरोसा (trust, faith, confidence); निश्चय = पक्का इरादा (determination, certainly); प्रवेश = दाखिला (admission); अडिग = न हिलने वाला,स्थिर (immovable, fix); वाद-विवाद = बहस (debate,argument); अप्रसन्न = नाराज़ (displeasure); प्रचलित = प्रचार में, चलन में (current, in force, in use)।

श्रुतलेख (Dictation)

विदूषक, बुद्धिमान, प्रशंसा, विद्वान, प्रचलित, मुखौटा, निर्धन

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) मनोरंजन कराने वाले लोग क्या कहलाते हैं?

(ख) रामन बचपन से ही कैसे थे?

(ग) रामन अपने निश्चय पर क्या था?

(घ) सभा में क्या हो रहा था?

(ङ) कृष्णदेव राय के राज-गुरु का क्या नाम था?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) रामन के साथ तेनाली क्यों जुड़ गया?

____

(ख) रामन ने कहाँ जाने का निश्चय किया?

____

(ग) यदि रामन विदूषक न बनता तो क्या बनता?

____

(घ) आपको कृष्णदेव राय के राजगुरु किस प्रकार के लगे?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) दरबार में लोगों का मनोरंजन करने वाले क्या कहलाते थे?

जोकर ☐ विदूषक ☐ भाट ☐

(ख) तेनाली रामन क्या था?

अभिनेता ☐ सेनापति ☐ विदूषक ☐

(ग) किसके चुटकुले भारतीय समाज में लोकप्रिय हैं?

तेनाली रामन के ☐ बीरबल के ☐ गोनू झा के ☐

(घ) हाथी चलाने वाला क्या कहलाता है?

महावत ☐ नाविक ☐ मल्लाह ☐

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) जो लोगों का मनोरंजन कराते हैं, वे ________ कहलाते हैं।

(ख) सब तेनाली रामन की बुद्धिमानी की ________ करते थे।

(ग) सभा में ________ हो रहा था।

(घ) लोगों को विश्वास था कि रामन एक दिन ________ बड़ा आदमी बनेगा।

(ङ) इतने बड़े राजा के दरबार में प्रवेश पाना ________ न था।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

	स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क)	बुद्धिमान	(i)	तारीफ़
(ख)	प्रशंसा	(ii)	होशियार
(ग)	विश्वास	(iii)	दाखिल
(घ)	प्रवेश	(iv)	भरोसा
(ङ)	अप्रसन्न	(v)	बहस
(च)	वाद-विवाद	(vi)	नाराज़

5. निम्नलिखित कथन किसने ,किससे कहे?

	कथन	किसने कहा?	किससे कहा?
(क)	"रामन एक दिन ज़रूर बड़ा आदमी बनेगा।"	________	________
(ख)	"हम संसार में नए-नए प्रकार की वस्तुएँ देखते हैं।"	________	________
(ग)	"आइए, हम सब तो भोजन करने चलें।"	________	________
(घ)	"मुझे कभी अपना मुँह मत दिखाना।"	________	________
(ङ)	"आपका हाथी जिधर ले जाए,उधर ही जाइए।"	________	________
(च)	"हाथी हमें बिल्कुल सही स्थान पर लाया है।"	________	________

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. 'अ' तथा 'अन' उपसर्ग लगाकर दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

(क) प्रसन्न — ______ (ङ) डिग — ______
(ख) सुविधा — ______ (च) योग्य — ______
(ग) धीर — ______ (छ) साधारण— ______
(घ) आदर — ______ (ज) इच्छा — ______

2. समानार्थी शब्द लिखिए—

(क) क्रोध — ______ ______
(ख) बुद्धि — ______ ______
(ग) प्रसन्न — ______ ______
(घ) चित्र — ______ ______

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) मान देना = (इज़्ज़त देना) — ______

(ख) अडिग रहना = (जमे रहना) — ______

(ग) मुँह न दिखाना = (सामने न आना) — ______

(घ) रौब झाड़ना = (दबदबा बनाना) — ______

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **हमें तेनाली रामन से क्या सीखना चाहिए?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **तेनाली रामन के किस्से-कहानियों की चर्चा अपने मित्र के साथ कीजिए।**

रचनात्मक गतिविधि

- **जिस प्रकार तेनाली रामन अपनी हाज़िर-जवाबी के लिए प्रसिद्ध था, उसी प्रकार बीरबल भी प्रसिद्ध था। वह अकबर के दरबार में था। उसकी हाज़िर-जवाबी का कोई एक किस्सा आप बताइए।**

14 नदी और लता

(कविता)

नदिया एक किया करती थी,
निज लहरों से खेल सदा।
उसके तट पर झूमा करती,
एक मनोहर कुसुम-लता।।

उसी लता पर पंछी आते,
कलरव गान सुनाते थे।
नदी अकेली जो थी बहती,
उसका मन बहलाते थे।।

पुष्प भेंट कर लता नदी को,
सदा सजाया करती थी।
देकर नदी उसे जल शीतल,
ताप सदा ही सहती थी।।

दोनों सखियाँ सदा प्रेम से,
समय बिताती जाती थीं।
स्नेह परस्पर जो था उनमें,
उससे वे सुख पाती थीं।।

एक दिवस वर्षा का जल पा,
नदी लगी थी इतराने।
धन के मद में भला लता को,
वह तो क्यों कर पहचाने?

उस नदिया ने सीमा तोड़ी,
दीन लता को मसल दिया।
उसके पत्तों को, फूलों को,
नदिया ने था निगल लिया।।

लता मरी, झड़ गए फूल सब,
वह शोभा थी कहाँ रही।
विहगों की भी कल-कल मृदु-ध्वनि,
सुनने को थी नहीं रही।।

वर्षा का सब सलिल बहा जब,
टूटा घंमड नदिया का।
जगी नम्रता फिर उसमें पर,
वहाँ नहीं थी सखी लता।।

नहीं लता थी, नहीं कुसुम थे,
न पंछी कल-कल करते।
नदिया बस थी, वहाँ अकेली,
हाय! हाय! जलकण करते।।

अहर-अहर कर नदिया रोती,
सखी नहीं पर मिल पाती।
अपनी ही करतूतों पर वह,
रात-दिवस है पछताती।।

पर जब है यह नशा उतरता,
हमें चेतना तब आती।
गए मित्र फिर पास न आते,
सदा उदासी छा जाती।।

सजा हुआ था तट जो पहले,
आज वही सुनसान हुआ।
भर घंमड में उस नदिया ने,
लता सखी को बहा दिया।।

जब हम पाते धन हैं या पद,
हम घंमड से भर जाते।
मित्रों को ठुकराते हैं तब,
होश में हम न आ पाते।।

कभी नहीं तुम मित्र जनों को,
भर घंमड में दुत्कारो।
सदा स्नेह ही उन्हें दिखाओ,
कभी नहीं तुम फटकारो।।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

कुसुम-लता = फूलों वाली बेल (a flower climber); ताप = गरमी (heat); स्नेह = प्रेम (love); इतराना = घंमड से चलना (boasting); मद = अभिमान (pride); सीमा = हद, मर्यादा (limit); विहग = पक्षी (bird); मृदु = मीठा (sweet), जलकण = पानी की बूँदे (water drops); अहर-अहर = हाय-हाय (Alas! Alas!); पद = दर्जा (post); चेतना = होश (consciousness)।

श्रुतलेख (Dictation)

मनोहर, कलरव, भेंट, शीतल, सखियाँ, परस्पर, सलिल, नम्रता, करतूतों, दुत्कारो

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) प्रस्तुत कविता में कवि ने किसके बारे में बताया है?

(ख) दोनों सखियाँ सदा प्रेम से क्या बिताती जाती थीं?

(ग) दोनों सखियों में से कौन क्या पाकर इतराने लगा था?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) इस कविता में किन दो सखियों का वर्णन किया गया है?

(ख) सखियाँ एक दूसरे के लिए क्या-क्या करती थीं?

(ग) नदी ने अपनी सखी के साथ क्या बुरा व्यवहार किया?

(घ) नदी को स्वयं पर पश्चाताप कब और कैसे हुआ?

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) लता नदी को कैसे सजाती थी?

मनोरंजक क्रीड़ाएँ करके ☐

शीतल छाया देकर ☐

पुष्प भेंट करके ☐

(ख) मित्रता में बाधक है-

सुख-दुख में साथ ☐ घमंड ☐ स्नेह ☐

3. **निम्नलिखित कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए—**

(क) पुष्प भेंट ______________ को,
______________ करती थी।
देकर ______________ शीतल,
ताप ______________ ॥

(ख) कभी नहीं ______________,
______________ दुत्कारो।
सदा स्नेह ______________,
______________ फटकारो।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. **पद, मन, स्नेह, पास -अनेकार्थक शब्द हैं, क्योंकि इनके एक से अधिक अर्थ हैं। इन शब्दों के दोनों अर्थों को दर्शाने वाला एक-एक वाक्य बनाइए।**
2. **इन संज्ञाओं के साथ उचित विशेषण लगाइए—**

	विशेषण	संज्ञा		विशेषण	संज्ञा
(क)	______________	कुसुम-लता	(ख)	______________	तट
(ग)	______________	जल	(घ)	______________	दिवस
(ङ)	______________	नदी	(च)	______________	फूल

3. **'है' और 'हैं' का प्रयोग करते हुए वाक्यों को पूरा कीजिए—**

(क) नदी के तट पर एक मनोहर कुसुम-लता ______________।
(ख) लता पर बैठे पक्षी कलरव कर रहे ______________।
(ग) बारिश जोर से हो रही ______________।
(घ) नदी के किनारे सुंदर फूल खिले ______________।

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- हमें इस कविता से क्या सीखने को मिलता है?

समूह कार्य (Group Discussion)

- क्या आप कभी अपने मित्र से बिछुड़कर मायूस हुए हैं। ऐसी स्थिति कब और क्यों आई? क्या आपने अपने मित्र से समझौता करने का प्रयत्न किया है? आपकी मित्रता पुन: कैसे हो पाई? यदि नहीं, तो उन दिनों आपकी मन की स्थिति कैसी थी? चर्चा कीजिए।

रचनात्मक गतिविधि

- बरसात के दिनों में नदी के किनारे जाकर देखें कि वह अपने प्रवाह में क्या-क्या चीजें बटोरे जा रही है? इस दृश्य का एक सुंदर चित्र भी बनाइए।

धर्मनिष्ठ ब्रह्मदत्त 15

(कहानी)

बहुत समय पहले की बात है। वाराणसी नगर में ब्रह्मदत्त नामक राजा थे। वे बड़े दूरदर्शी, सहृदय और न्यायप्रिय थे। अपनी प्रजा के सुख-दुख का पूरा ध्यान रखते थे। इसलिए सभी लोग उनके व्यवहार से बहुत खुश थे। वे राजा के गुणों का बखान करते थकते न थे। परंतु राजा को किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जो उन्हें उनके अवगुणों से परिचित करा सके।

एक दिन राजा ब्रह्मदत्त ऐसे ही किसी व्यक्ति की तलाश में वेश बदलकर निकल पड़े। प्रत्येक प्रांत में जाकर उन्होंने लोगों से पूछा। परंतु उन्हें हर बार यही उत्तर मिला कि राजा ब्रह्मदत्त जैसा दयालु, विवेकशील और न्यायप्रिय राजा दूसरा नहीं है।

अपनी प्रजा को खुश देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। परंतु अभी भी उन्हें अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिला था। पूरे राज्य में घूमते हुए वे हिमालय की ओर चल दिए। चलते-चलते वे महात्मा बोधिसत्त्व के आश्रम में पहुँचे। अंदर जाकर राजा ने महात्मा बोधिसत्त्व को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और चुपचाप एक ओर बैठ गए। उन्हें भूख-प्यास भी लगी थी। बोधिसत्त्व ने उन्हें खाने के लिए जंगल के पके फल दिए और कहा–''वत्स! ये फल खाकर जल पीओ।''

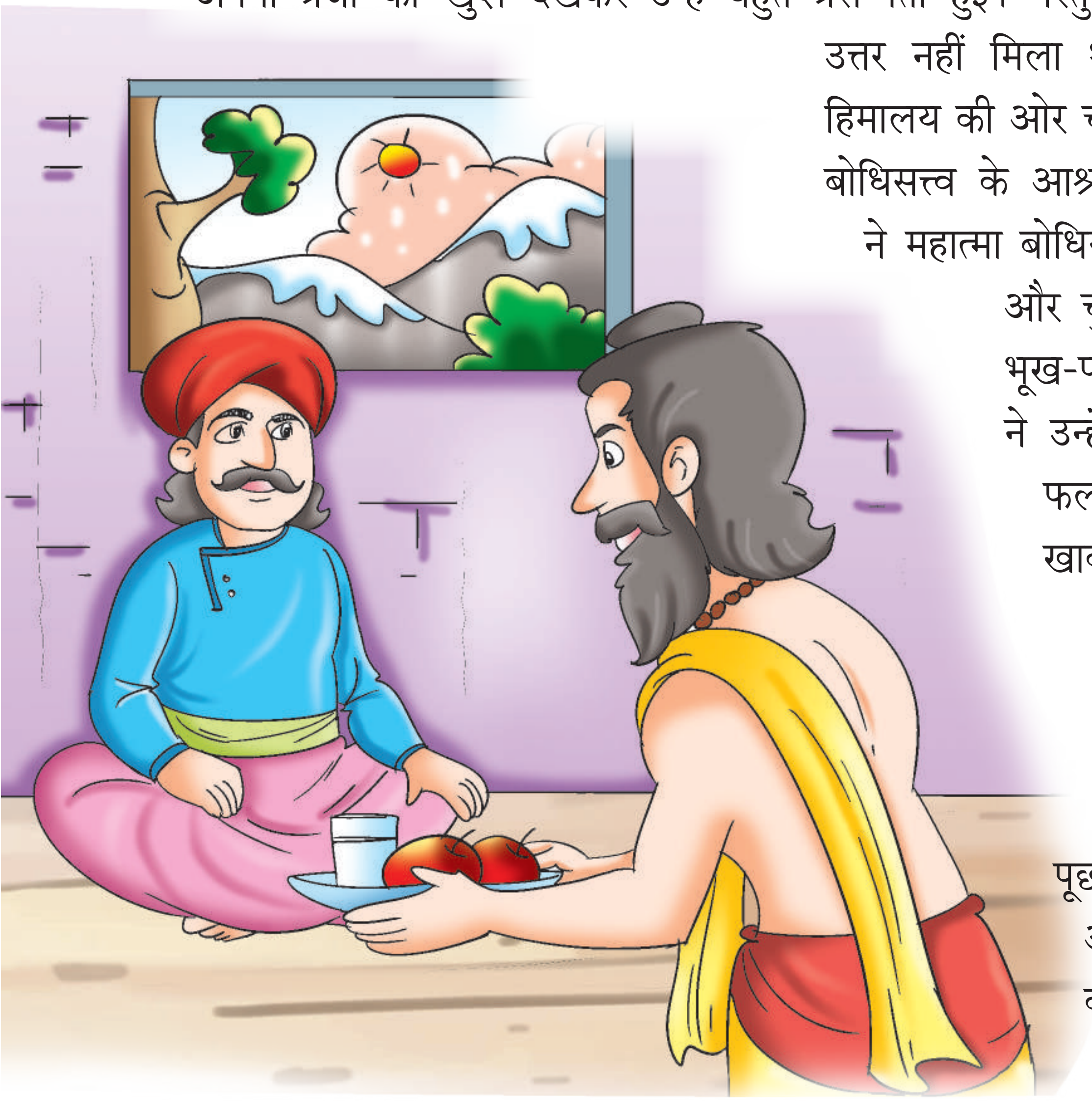

राजा ब्रह्मदत्त ने शौक से फल खाकर जल पिया। उन्हें फल बहुत ही स्वादिष्ट और मीठे लगे। उन्होंने बोधिसत्त्व से पूछा–''भगवन्! ये फल इतने मधुर और स्वादिष्ट कैसे हैं? इसका क्या कारण है?''

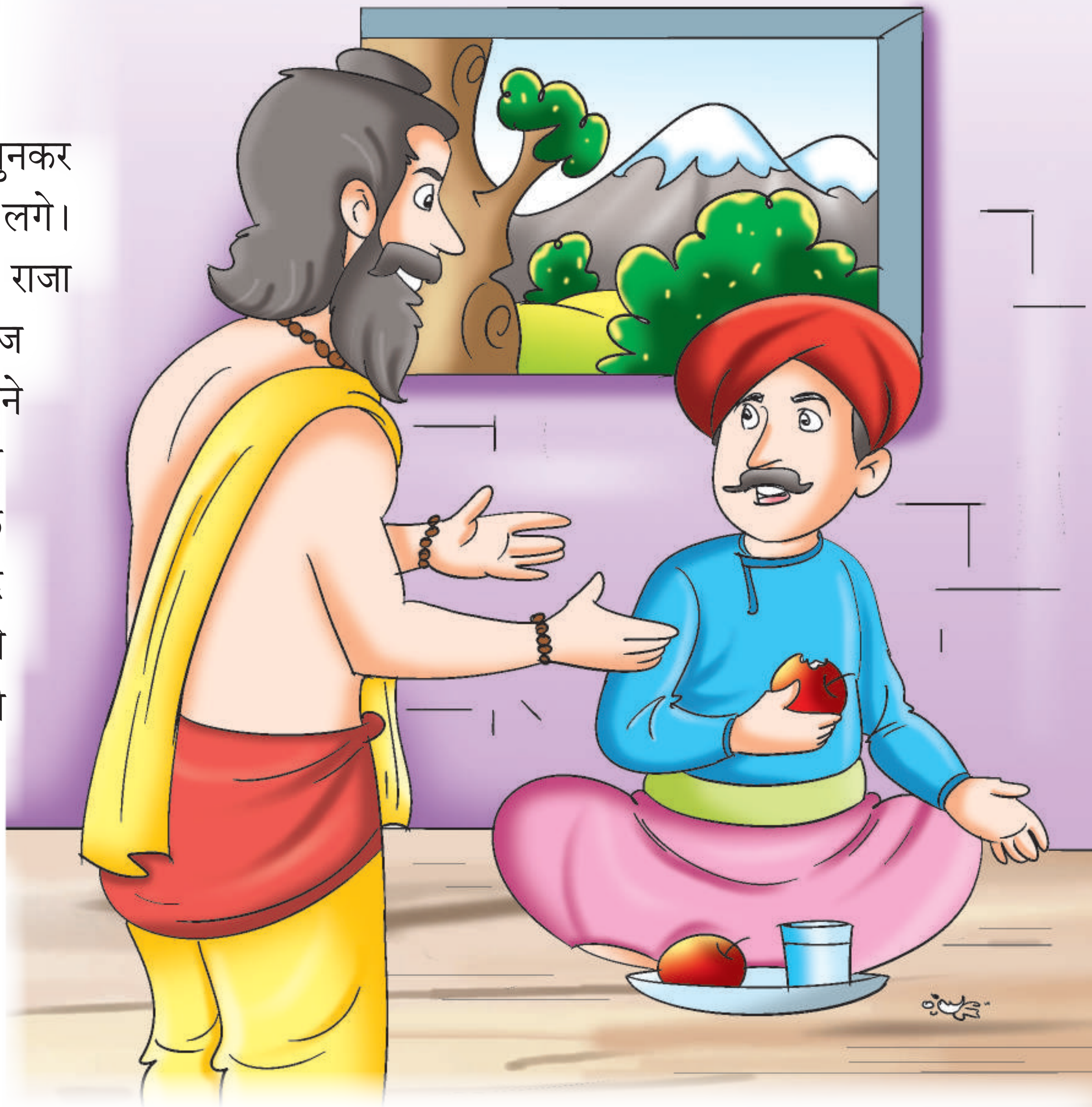

राजा ब्रह्मदत्त की बात सुनकर बोधिसत्व मंद-मंद मुसकराने लगे। बोले–"वत्स! इस राज्य का राजा धर्म और न्याय के अनुसार राज करता है, इसीलिए ये फल इतने मीठे हैं। यदि राजा अन्यायी तथा क्रूर हो तो जंगल के फल, मधु तथा शक्कर आदि सभी कड़वे तथा स्वादरहित हो जाएँगे। साथ ही संपूर्ण राष्ट्र भी कमज़ोर हो जाएगा।"

महात्मा बोधिसत्व की बात सुनकर राजा बिलकुल शांत हो गए। उन्होंने अपना परिचय भी नहीं दिया और वहाँ से वापस राजधानी आ गए। उन्हें बोधिसत्व की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने मन ही मन बोधिसत्व के कथनों को परखने का निश्चय किया।

अगले दिन से राजा ने जान-बूझकर अधर्म तथा अन्यायपूर्वक शासन करना प्रारंभ कर दिया। चारों ओर हाहाकर मच गया।

कुछ समय पश्चात् राजा फिर बोधिसत्व के आश्रम में गए और उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम करके एक ओर बैठ गए। बोधिसत्व ने उन्हें फिर पके फल खाने के लिए दिए। जैसे ही राजा ने फल खाए तो उन्हें वे फल कड़वे लगे। राजा ने फल थूकते हुए पूछा–"ऋषिवर! ये फल इतने कड़वे और स्वादहीन क्यों हैं?"

बोधित्सव ने कहा-"वत्स! जब राजा अत्याचारी तथा अन्यायी हो तो उसका प्रभाव जंगल के फल तथा कंद-मूल और सभी वस्तुओं पर पड़ता है।"

ब्रह्मदत्त बोले-"ऋषिवर! आपके कहने का क्या तात्पर्य है? कृपया विस्तार से बताइए।"

बोधिसत्व ने कहा-"वत्स! क्या आपने कभी गायों के झुंड को नदी पार करते समय देखा है? यदि सबसे आगे चलनेवाली गाय अपना मार्ग बदल ले तो पीछे चलने वाली गाएँ भी अपना मार्ग

बदल लेती हैं। इसी प्रकार राजा अपने राज्य का नेता होता है। यदि राजा गलत आचरण करे और अधर्म को अपनाए तो प्रजा भी उसी रास्ते पर चलने लगती है।''

बोधिसत्त्व से जवाब पाकर ब्रह्मदत्त की सारी जिज्ञासा शांत हो गई। फिर उन्होंने बोधिसत्त्व को अपने बारे में बताते हुए कहा-''हे महात्मन्! मैं ही इस नगर का राजा ब्रह्मदत्त हूँ। मेरे ही कारण फल मीठे और फिर कड़वे हो गए। परंतु अब मैं यह निश्चय करता हूँ कि कड़वे फलों को पुनः मीठा करूँगा और कभी उन्हें कड़वा नहीं होने दूँगा।''

यह कहकर राजा ने बोधिसत्त्व को आदरपूर्वक प्रणाम किया और राजधानी आकर न्यायपूर्वक राज करने लगे।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

तलाश = खोज (search); क्रूर = हिंसक कार्य करने वाला (cruel); अवगुण = दोष (fault); मधु = शहद, मीठे (honey, sweet); परिचित = जाना-पहचाना (acquainted); संपूर्ण = पूरा (whole); श्रद्धापूर्वक = आदर के साथ (with respect); विश्वास = भरोसा (faith); वत्स = बेटा (son); पश्चात् = बाद में (after); मधुर = मीठा (sweet); मार्ग = रास्ता (way); मंद-मंद = धीरे-धीरे (slowly-slowly); जिज्ञासा = जानने की इच्छा (desire to knowing); व्यवहार = बर्ताव (behave); पुनः = फिर (again)।

श्रुतलेख (Dictation)

दूरदर्शी, सहृदय, क्रूर, श्रद्धापूर्वक, जिज्ञासा, ऋषिवर, झुंड, व्यवहार

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) राजा किसका पूरा ध्यान रखते थे?

(ख) राजा किसी व्यक्ति की तलाश में क्या बदलकर निकल गए?

(ग) राजा राज्य में घूमते हुए किस ओर चल दिए?

(घ) प्रजा को खुश देखकर राजा को बहुत क्या हुई?

(ङ) राजा के क्रूर होने पर संपूर्ण राष्ट्र कैसा हो जाएगा?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) राजा ब्रह्मदत्त कहाँ के राजा थे?

(ख) चलते-चलते राजा किसके आश्रम में पहुँचे?

(ग) राजा को कैसे व्यक्ति की तलाश थी?

(घ) महात्मा का क्या नाम था?

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) महात्मा बोधिसत्व ने राजा ब्रह्मदत्त को खाने के लिए क्या दिया?

भोजन ☐ पके फल ☐ बादाम ☐

(ख) राजा के गलत आचरण करने से प्रजा कैसे रास्ते पर चलने लगती है?

धर्म के रास्ते पर ☐ अधर्म के रास्ते पर ☐ अलग रास्ते पर ☐

(ग) राजा की जिज्ञासा शांत करने के लिए बोधिसत्व ने किसका उदाहरण दिया?

हाथियों के झुंड का ☐ बकरियों के झुंड का ☐ गायों के झुंड का ☐

(घ) ब्रह्मदत्त नामक राजा किस नगर में निवास करते थे?

प्रयागराज ☐ वाराणसी ☐ उज्जैन ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) वाराणसी नगरी में ________ नामक राजा थे।

(ख) सभी लोग राजा के ________ से खुश थे।

(ग) चलते-चलते राजा महात्मा ________ के आश्रम में पहुँचे।

(घ) राजा ने महात्मा को ________ प्रणाम किया।

(ङ) ब्रह्मदत्त की सारी ________ शांत हो गई।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों के समान तीन-तीन शब्द और लिखिए—

(र) राजा — ________ ________ ________

(ʿ) मार्ग — ________ ________ ________

(ˏ) प्रांत — ________ ________ ________

(ˎ) अवगुण — ________ ________ ________

2. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए—

(क) जिसे न्याय प्रिय हो — ________

(ख) जानने की इच्छा — ________

(ग) जो दूर की सोचे — ________

(घ) जिसके हृदय में दया हो — ________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

समूह कार्य (Group Discussion)

- महात्मा बुद्ध के जीवन के बारे में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कर एक लेख लिखिए।

रचनात्मक गतिविधि

- इस कहानी का नाटक के रूप में अभिनय कीजिए।

विल्मा रूडोल्फ़ 16

(कहानी)

विलक्षण प्रतिभा से संपन्न ग्लोडियन रूडोल्फ एक ऐसा व्यक्तित्व है, जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि शारीरिक अपंगता उन्नति और विकास के मार्ग में बाधक नहीं है, बल्कि निराशा उन्नति के मार्ग बंद कर देती है। जब व्यक्ति साहस, परिश्रम, धैर्य तथा लगन से किसी कार्य को करने का संकल्प लेता है, तो सफलता उसके कदम अवश्य चूमती है।

विल्मा रूडोल्फ का जन्म 23 जून, 1940 को क्लार्कविले टेनीसी (अमेरिका) में हुआ था। वे बचपन से ही अपंग थी। इसी कारण सात वर्ष तक उनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। जब वे पहली बार विद्यालय गई तब साउथ स्टेट के विद्यालय श्वेत और श्याम-वर्णीय विद्यार्थियों के बीच बँटे हुए थे। दोनों प्रकार के विद्यालयों में समान शुल्क देना पड़ता था, परंतु श्याम-वर्णीय विद्यालयों में सुविधाओं का अभाव था।

विल्मा के माता-पिता बहुत ईमानदार तथा मेहनती, परंतु बहुत गरीब थे। विल्मा के पिता समान ढोने का काम करते थे तथा माँ गोरे लोगों के यहाँ खाना पकातीं, कपड़े धोतीं तथा सफाई आदि का कार्य करती थीं। विल्मा के जन्म के समय रंग-भेद की नीति बहुत ज़ोरों पर थी, इसलिए उनकी व उनकी माँ की उचित देखभाल न हो सकी। इसके परिणामस्वरूप विल्मा चेचक, गलगंड, निमोनिया तथा लाल बुखार जैसी भयंकर बीमारियों से ग्रस्त हो गई।

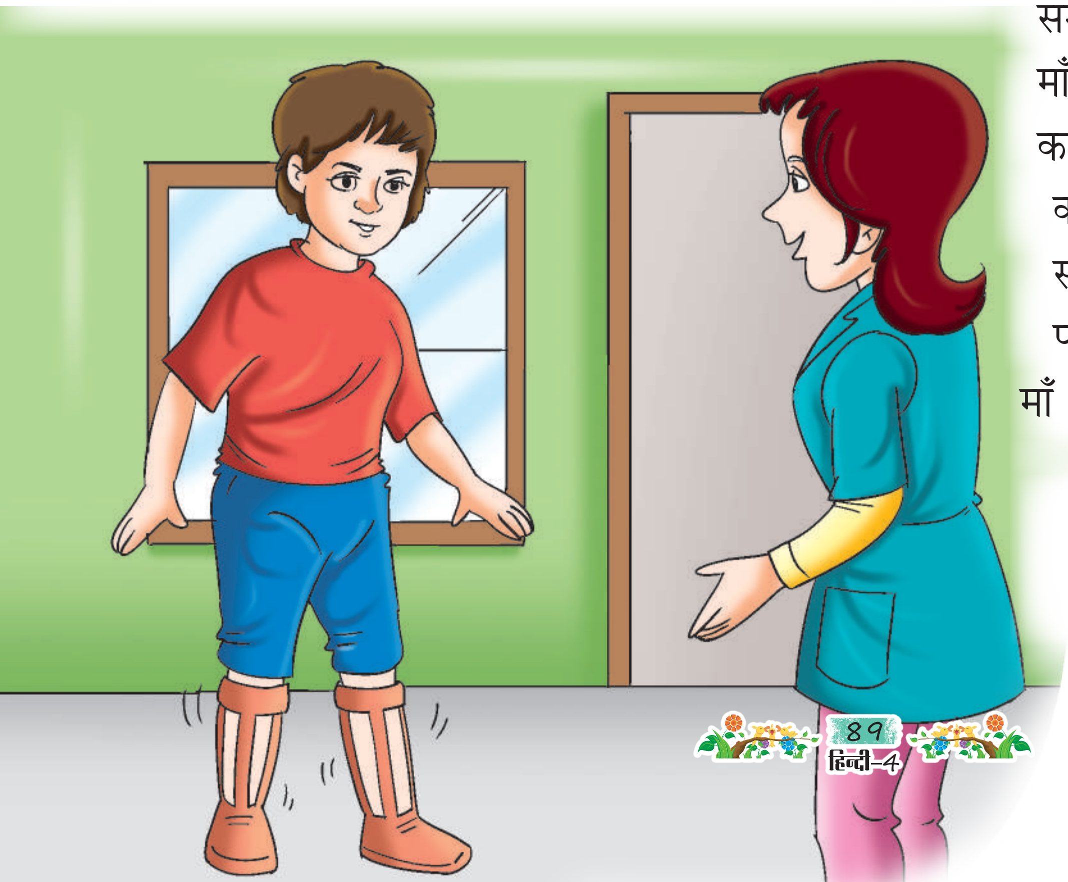

श्रीमती रूडोल्फ ने विल्मा को अनेक चिकित्सकों को दिखाया। उन्होंने बताया कि विल्मा को पोलियो हो गया है और अब वह कभी नहीं चल पाएगी। इससे विल्मा के माता-पिता को गहरा आघात लगा, परंतु उन्होंने हार न मानी और वे विल्मा को 50 मील दूर एक अस्पताल में लेकर गए। वहाँ उसे धातु से बनी टाँग के सहारे चलना सिखाया गया। डॉक्टर ने श्रीमती रूडोल्फ को उनकी देखभाल तथा मालिश करने के तरीके भी सिखाए। उन्होंने विल्मा को सिखाया कि मनुष्य जो पाना चाहता है, उसके लिए उसे सही तरह से परिश्रम करना पड़ता है।

कुछ ही दिनों में विल्मा के मन में कुछ करने की लगन और सीखने की ललक उत्पन्न होती चली गई और वह बारह वर्ष की अवस्था में बैसाखियों या धातु की टाँग के बिना सामान्य रूप से चलने लगी।

ऐसा संभव श्रीमती रूडोल्फ के अथक परिश्रम और विल्मा की प्रबल चेष्टा के कारण हो पाया। इसके बाद विल्मा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे अपनी बहन योलांडा की तरह बास्केटबॉल की टीम में शामिल हो गई। उसकी खेल प्रतिभा को देखकर हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के उपरांत उन्हें टेनिस स्टेट्स की ओर से छात्रवृत्ति प्रदान की गई। तत्पश्चात् विल्मा ने अपनी पढ़ाई को एक वर्ष के लिए रोक दिया और अपना पूरा ध्यान अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खेलों में लगा दिया।

सारी बाधाओं को पीछे छोड़ते हुए विल्मा ने अपनी टीम को स्टेट चैंपियन का दर्ज़ा दिलवाया। जब वे केवल सोलह वर्ष की थी, तो इन्हें ओलंपिक खेल (1956) में कांस्य पदक पुरस्कार प्राप्त हुआ। उसके बाद सन् 1960 में वह पहली अमेरिकन महिला बनीं, जिन्होंने ओलंपिक खेल में तीन स्वर्ण पदक जीते। इतना ही नहीं इन्होंने एक समारोह आयोजित करवाया जिसमें रंग-भेद के विरुद्ध लड़ने का निर्णय लिया। उनकी उपलब्धियों तथा योग्यता से प्रभावित होकर इन्हें विशेष अतिथि और कुशल वक्ता के रूप में विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में भी आमंत्रित किया जाता था।

सन् 1967 में अमेरिका के उपराष्ट्रपति ह्यूबर्ट हंफ़्री ने विल्मा को 'ऑपरेशन चैंप' में भाग लेने के लिए बुलाया। विल्मा ने 'विल्मा रूडोल्फ फाउंडेशन' नाम की एक संस्था भी खोली जिसमें विभिन्न प्रकार से खेलों का मुफ़्त प्रशिक्षण, पढ़ाई-लिखाई एवं अन्य सुविधाएँ दी जाती हैं। सन् 1977 में इन्होंने आत्मकथा लिखी, जिसका शीर्षक था– 'विल्मा'। इसी आत्मकथा पर एक फ़िल्म भी बनी।

विल्मा का जीवन अत्यंत प्रेरणादायक है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि प्रयत्न एवं परिश्रम के द्वारा अक्षम होते हुए भी व्यक्ति सक्षम बन सकता है।

54 वर्ष की आयु तक अपने जीवन को समृद्धि के शिखर पर पहुँचाकर यह विश्वप्रसिद्ध महिला 12 नवंबर, 1994 को सदा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गईं।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

विलक्षण = बहुत-से अच्छे गुणों वाला (extraordinary); आघात = चोट (shock); उन्नति = तरक्की (progress); अथक = जो कभी न थके (unwearied); मार्ग = रास्ता (path); प्रबल = तेज़, अधिक (mighty); अपंग = अंग से हीन (maimed); प्रतिभा = तेज़ बुद्धि (brilliance); श्यामवर्णीय = काले रंग वाला (blackish); बाधाओं = रुकावटें (obstacles); शुल्क = फ़ीस (fee); निर्णय = फ़ैसला (decision); अभाव = कमी (poverty); उपलब्धि = प्राप्ति (achievement); श्वेत = सफ़ेद, गोरा (white); अतिथि = मेहमान (guest); आत्मकथा = अपने बारे में लिखी गई गाथा (autobiography)।

श्रुतलेख (Dictation)

विलक्षण, आघात, श्यामवर्णीय, निर्णय, प्रशिक्षण, विश्वप्रसिद्ध पंचतत्व

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) विल्मा बचपन से ही कैसी थी?

(ख) विल्मा की शिक्षा-दीक्षा कितने वर्ष तक घर पर हुई?

(ग) किस स्टेट के विद्यालय श्वेत और श्यामवर्णीय कें बीच बँट गए थे?

(घ) दोनों प्रकार के विद्यालय में कितना शुल्क देना पड़ता था?

(ङ) क्लार्कविले टेनीसी विश्व के किस देश में स्थित है?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) विल्मा रूडोल्फ का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

____

(ख) विल्मा ने किस नाम से संस्था खोली?

____

(ग) विल्मा की माँ क्या काम करती थीं?

____

(घ) विल्मा के पिता क्या कार्य करते थे?

____

(ङ) विल्मा को किस स्टेट्स की ओर से छात्रवृत्ति प्रदान की गई?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) विल्मा रूडोल्फ ने ओलंपिक खेल में तीन स्वर्णपदक कब जीते?

1962 ई० में ☐ 1960 ई० में ☐ 1965 ई० में ☐

(ख) विल्मा रूडोल्फ़ ने किस सन् में आत्मकथा लिखी?

1977 ई० में ☐ 1972 ई० में ☐ 1976 ई० में ☐

(ग) विल्मा रूडोल्फ ने ओलंपिक खेल में कब कांस्य पदक जीता?

1956 ई० में ☐ 1957 ई० में ☐ 1958 ई० में ☐

3. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) 1940 ई०	(i) विल्मा की मृत्यु
(ख) 1956 ई०	(ii) विल्मा का जन्म
(ग) 1960 ई०	(iii) कांस्य पदक
(घ) 1967 ई०	(iv) तीन स्वर्ण पदक
(ङ) 1994 ई०	(v) ऑपरेशन चैंप

4. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) विल्मा व उसकी माँ की उचित ________ न हो सकी ।

(ख) विल्मा को ________ मील दूर एक अस्पताल में लेकर गए।

(ग) विल्मा रूडोल्फ का जन्म ________ (अमेरिका) में हुआ था।

(घ) ________ वर्ष तक इनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई।

(ङ) विल्मा के ________ बहुत ईमानदार तथा मेहनती थे।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए गद्यांश को पढ़कर सही उत्तर चुनकर उस पर (✓) लगाइए—

साहस वह विलक्षण गुण है जो मनुष्य को चुनौतियों का सामना करने की शक्ति और संघर्ष से जूझने की क्षमता प्रदान करता है। साहस वह उदात्त भावना है जो मनुष्य को उस ऊँचाई तक पहुँचाती है, जहाँ बाहरी शक्तियों की अपेक्षा आंतरिक शक्तियों का अधिक महत्त्व है। मन के साहस द्वारा ही व्यक्ति विपरित परिस्थितियों में लगातार संघर्ष करने की क्षमता और बिना निराश हुए हार को जीत में बदलने की इच्छा रखता है।

(क) मनुष्य को चुनौतियों का सामना करने की शक्ति कौन देता है?

संघर्ष ☐ हार ☐ साहस ☐

(ख) मनुष्य को ऊँचाई तक पहुँचाने में कौन-सी शक्तियों का अधिक महत्त्व है?

आंतरिक ☐ बाहरी ☐ दैवीय ☐

(ग) 'गुण' का विलोम शब्द क्या है?

गुणी ☐ दोषी ☐ अवगुण ☐

2. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए—

(क) जिसके किसी अंग में दोष हो — वि

(ख) जो कभी न थके — अ

(ग) जो परिश्रम करता हो — प

(घ) जिसके आने की तिथि न हो — अ

(ङ) अपने द्वारा लिखी गई जीवनी — आ

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **इस कहानी से आपकों क्या शिक्षा मिलती है?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **आप अपनी कौन सी कमी को हराना चाहते हैं? इसकी चर्चा आप अपने माता-पिता से करें।**

रचनात्मक गतिविधि

- **विल्मा की भाँति ऐसे अनेक व्यक्ति हैं, जिन्होंने शारीरिक कमी को अपने इरादों के बीच कभी बाधा नहीं बनने दिया। उनके विषय में लिखकर बताइए।**

खरगोश के मित्र 17

(कहानी)

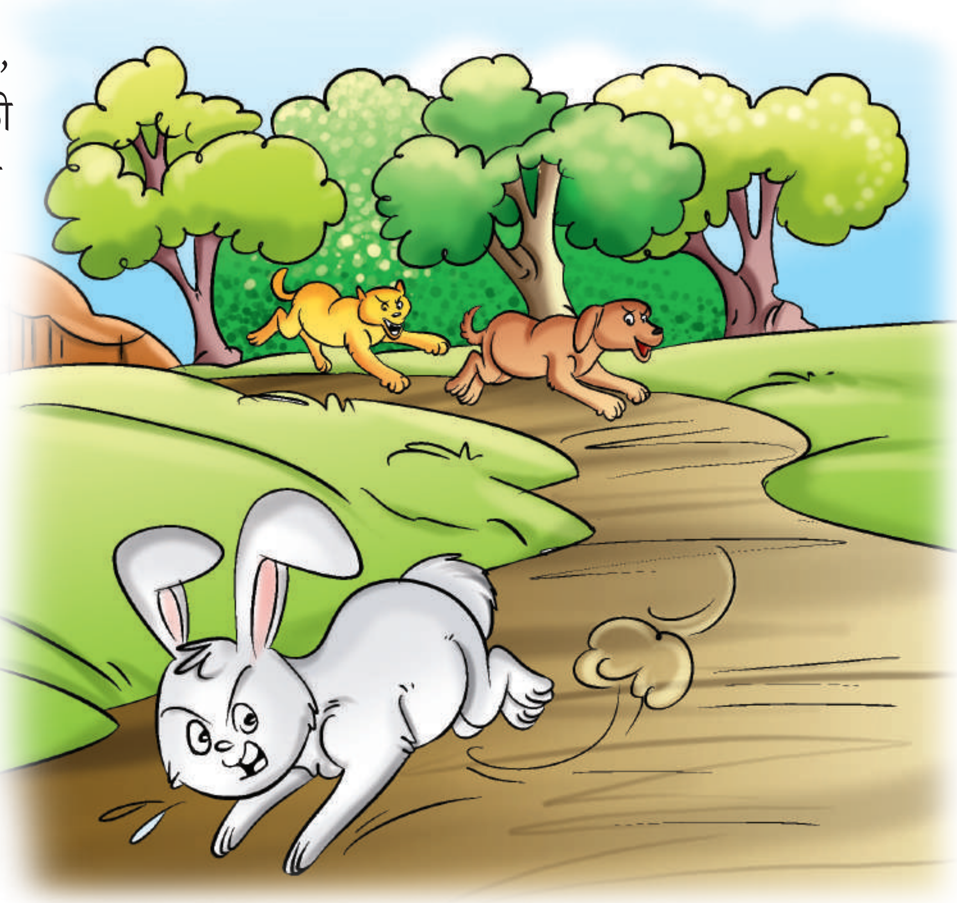

एक खरगोश के कई मित्र थे– घोड़ा, बैल, बकरा, भेड़ आदि। मगर उनकी दोस्ती कितनी सच्ची है, उसे यह परखने का मौका आज तक नहीं मिला था।

एक दिन उसे यह मौका तब मिला, जब वह खुद संकट में पड़ गया। उस दिन कुछ शिकारी कुत्ते उसके पीछे पड़ गए। यह देखकर खरगोश जान बचाने के लिए भागने लगा। भागते-भागते उसका दम फूलने लगा। वह थककर चूर हो गया। जब और अधिक नहीं भागा गया, तो कुत्तों को चकमा देकर वह एक घनी झाड़ी में घुस गया और वहीं छिपकर बैठ गया। पर उसे यह भय सता रहा था कि कुत्ते किसी भी पल वहाँ पहुँचेंगे और सूँघकर उसे खोज लेंगे।

वह समझ गया कि यदि उसका कोई दोस्त समय पर नहीं पहुँच सका, तो उसकी मृत्यु निश्चित है।

वह अपने मित्रों को याद करने लगा—यदि घोड़ा आ गया, तो वह मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर ले भागेगा। यदि बैल आ गया, तो वह अपने सींगों से इनका पेट फाड़ डालेगा। यदि भेड़ आ गई तो वह टक्कर मार-मारकर इनके होश ठिकाने लगा देगी।

तभी उसकी नजर अपने मित्र घोड़े पर पड़ी। वह उसी मार्ग पर तेजी से दौड़ता हुआ आ रहा था। खरगोश ने घोड़े को रोका और कहा, "घोड़े भाई! कुछ शिकारी कुत्ते मेरे पीछे पड़े हुए हैं। तुम मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर कहीं दूर ले चलो, वरना वे शिकारी कुत्ते मुझे मार डालेंगे।"

घोड़े ने कहा, ''प्यारे भाई! मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करता, पर इस समय मैं जल्दी में हूँ। वह देखो, तुम्हारा मित्र बैल इसी तरफ़ आ रहा है। वह तुम्हारी सहायता अवश्य करेगा।'' यह कहकर घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ चला गया।

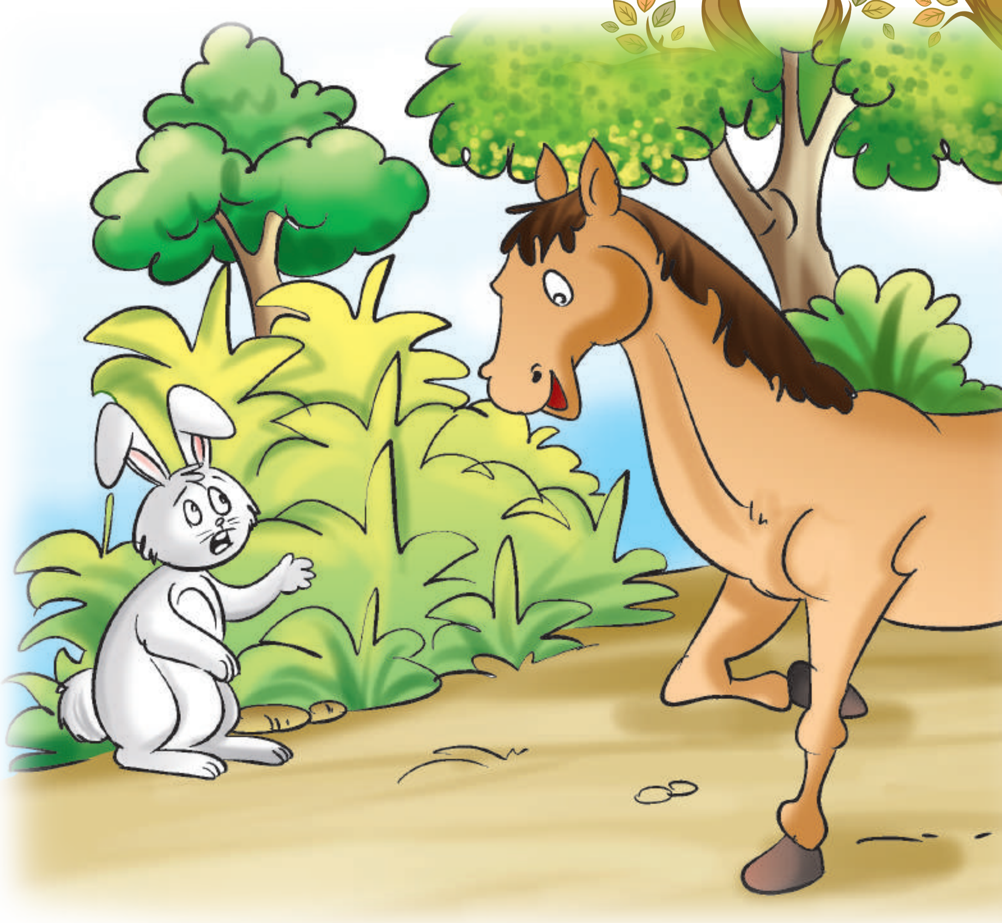

खरगोश ने बैल से प्रार्थना की, ''बैल दादा! कुछ शिकारी कुत्ते मेरा पीछा कर रहे हैं। कृपया आप मुझे अपनी पीठ पर बैठा लें और कहीं दूर ले चलें, नहीं तो ये कुत्ते मुझे मार डालेंगे।''

''भाई खरगोश! मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करता, मगर इस समय मेरे कुछ दोस्त बहुत बेचैनी से मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे, इसीलिए मुझे वहाँ जल्दी पहुँचना है। देखो, तुम्हारा दोस्त बकरा इधर ही आ रहा है। उससे कहो, वह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा।''

यह कहकर बैल भी चला गया।

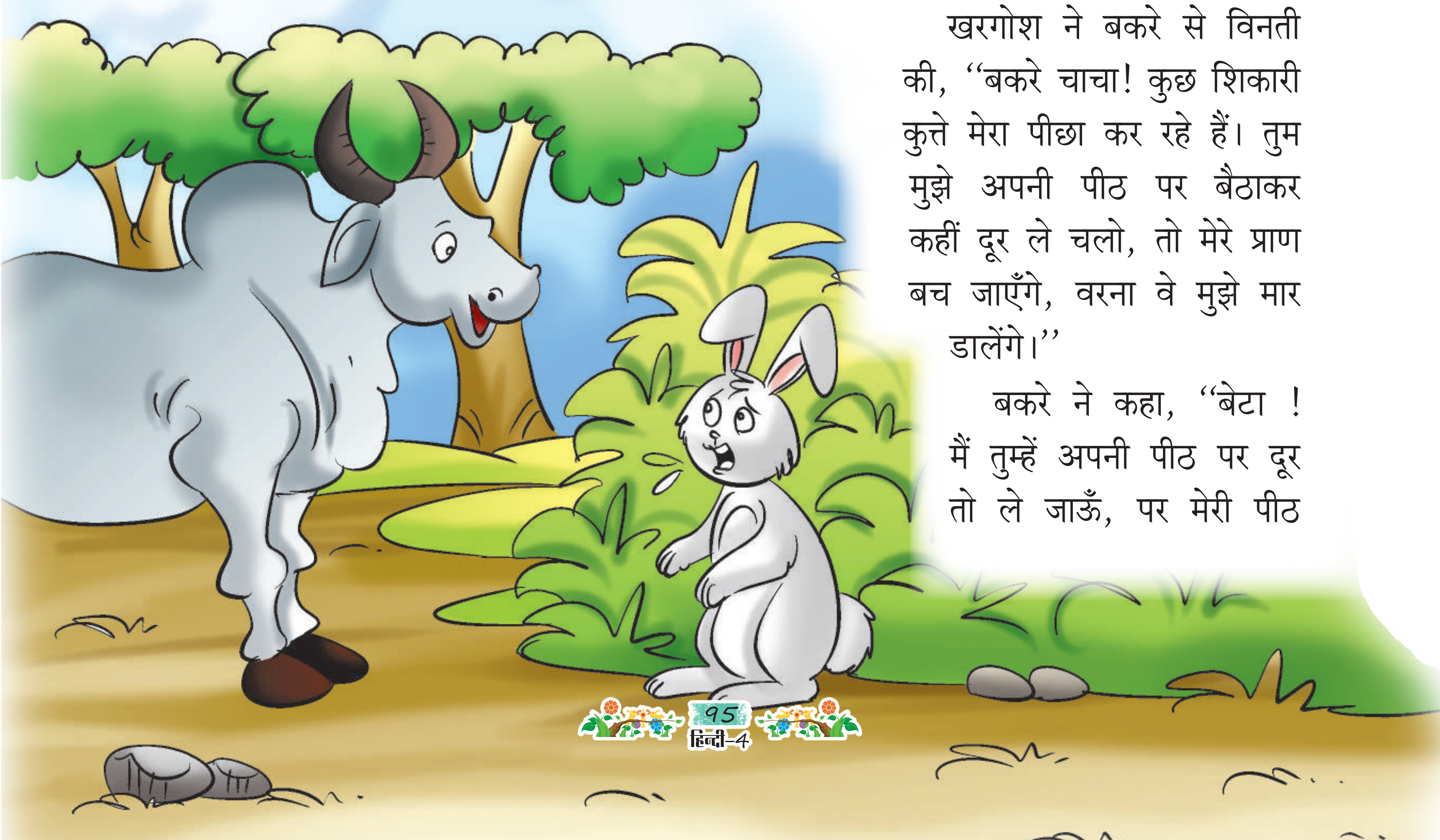

खरगोश ने बकरे से विनती की, ''बकरे चाचा! कुछ शिकारी कुत्ते मेरा पीछा कर रहे हैं। तुम मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर कहीं दूर ले चलो, तो मेरे प्राण बच जाएँगे, वरना वे मुझे मार डालेंगे।''

बकरे ने कहा, ''बेटा ! मैं तुम्हें अपनी पीठ पर दूर तो ले जाऊँ, पर मेरी पीठ

खुरदरी है। उस पर बैठने से तुम्हारे कोमल शरीर को कष्ट होगा। मगर चिन्ता न करो। देखो, तुम्हारी दोस्त भेड़ इधर ही आ रही है। उससे कहोगे तो वह अवश्य ही तुम्हारी मदद करेगी।'' यह कहकर बकरा भी चलता बना।

खरगोश ने भेड़ से भी मदद की प्रार्थना की, लेकिन उसने भी खरगोश से बहाना करके अपना पीछा छुड़ा लिया।

इस प्रकार, खरगोश के सभी दोस्त वहाँ से गुज़रे। खरगोश ने सभी से मदद करने की प्रार्थना की, पर किसी ने उसकी मदद नहीं की। सभी कोई-न-कोई बहाना करके चलते बने।

खरगोश ने मन-ही-मन कहा,''अच्छे समय में ये मेरे अपने दोस्त थे, पर आज संकट के समय कोई दोस्त काम नहीं आ रहा है। मेरे सभी दोस्त केवल अच्छे दिनों के ही साथी हैं।''

थोड़ी देर में उसे खोजते हुए शिकारी कुत्ते भी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने बेचारे खरगोश को मार डाला। आश्चर्य की बात है कि इतने सारे दोस्त होते हुए भी खरगोश बेमौत मारा गया।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

मित्र = दोस्त (friend); संकट = परेशानी (misfortune); दम फूलना = थक जाना (tired); भय = डर (fear); मार्ग = रास्ता (way); अवश्य = ज़रूर (certainly); प्रार्थना = विनती (prayer); खुरदरी = ऊबड़-खाबड़ (rough)।

श्रुतलेख (Dictation)

संकट, सूँघकर, टक्कर, इन्तजार, प्रार्थना, खुरदरी, कष्ट, छुड़ा

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) खरगोश के कितने मित्र थे?

(ख) एक दिन खरगोश के पीछे कौन पड़ गए?

(ग) घोड़ा खरगोश को कहाँ बैठाकर बचा सकता था?

(घ) बैल का इन्तज़ार कौन कर रहा था?

(ङ) शिकारी कुत्तों ने खरगोश का क्या किया?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) खरगोश के मित्र कौन-कौन थे?

____

(ख) खरगोश को अपने मित्रों को परखने का मौका कब मिला?

____

(ग) खरगोश मित्र उसे शिकारी कुत्तों से किस-किस प्रकार बचा सकते थे?

____

(घ) बैल ने खरगोश से क्या बहाना बनाया?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) भागते-भागते खरगोश का क्या फूलने लगा?

पेट ☐ दम ☐ मुँह ☐

(ख) बैल किससे शिकारी कुत्तों का पेट फाड़ डालेगा?

दाँतों से ☐ पैरों से ☐ सींगों से ☐

(ग) बकरे ने अपनी पीठ कैसी बताई?

खुरदरी ☐ कोमल ☐ सपाट ☐

3. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क) मित्र	(i)	रास्ता
(ख) संकट	(ii)	थक जाना
(ग) दम फूलना	(iii)	डर
(घ) भय	(iv)	परेशानी
(ङ) मार्ग	(v)	दोस्त

4. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) खरगोश के केवल दो मित्र थे। ☐

(ख) शिकारी कुत्तों के डर से खरगोश घनी झाड़ियों में छिपकर बैठ गया। ☐

(ग) घोड़े ने खरगोश को बैल से सहायता लेने के लिए कहा। ☐

(घ) उसके सभी मित्र कोई-न-कोई बहाना बनाकर चलते बने। ☐

(ङ) खरगोश ने शिकारी कुत्तों को मार डाला। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. अब आप नीचे दिए गए वाक्यों में से विशेषण छाँटकर अलग लिखिए—

(क) समुद्र का पानी तो बहुत खारा है। ______

(ख) तीनों में गहरी दोस्ती थी। ______

(ग) आँखों से तेज़ रोशनी निकल रही थी। ______

(घ) एक तालाब के किनारे दो हंस रहते थे। ______

(ङ) अचानक बिल्लू ने समुद्र में पानी का ऊँचा फ़व्वारा उठता देखा। ______

2. दिए गए शब्दों के वचन बदलकर लिखिए—

(क) मछली — ______ (ख) केकड़ा — ______

(ग) तितली — ______ (घ) पौधा — ______

(ङ) नदी — ______ (च) घोड़ा — ______

(छ) डाली — ______ (ज) झींगा — ______

3. उचित कारक- चिह्नों से खाली स्थान भरिए—

(क) वह तो एक-दूसरे ही संसार ______ आ गया था।

(ख) मैं दूर देश ______ सैर करने आया हूँ।

(ग) एक तालाब ______ किनारे दो हंस रहते थे।

(घ) कई मछलियों ______ आकृति साँप और घोड़े जैसी भी होती है।

(ङ) ______ ! ये कौन-सी मछलियाँ हैं?

(च) बिल्लू ______ बड़े-बड़े घोंघे, केकड़े, रंगीन मछलियाँ, झींगे, स्पंज आदि देखे।

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **आपके दोस्त किस प्रकार आपकी सहायता करते है?**

रचनात्मक गतिविधि

- **खरगोश को शिकारी कुत्तों से डर क्यों लग रहा था?**
- **उसे और किन-किन जानवरों से डर लगता है? किन्हीं तीन के नाम बताइए।**

केवल पठन हेतु

एकता में बल

अब पिताजी ने उन चारों को समझाया.....

प्रश्न-पत्र (Test-Paper) – I

समयः 1 घंटा **अंक-40**

1. सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

(क) मन में मीठी–मीठी मृदुल उमंग भरने को कौन कहता है?

सागर ☐ पर्वत ☐ तरल तरंग ☐

(ख) अंत में कौन श्रेष्ठ सिद्ध हुआ?

मन ☐ प्राण ☐ आँख ☐

(ग) केरल की राजधानी है—

दिल्ली ☐ प्रयागराज ☐ तिरुअनन्तपुरम ☐

(घ) हंस कछुए को लेकर कहाँ चले?

नदी में ☐ समुद्र में ☐ आसमान में ☐

(ङ) पहरेदार की हत्या का अपराधी कौन था?

न्यायमंत्री ☐ सेनापति ☐ राजा ☐

2. सही शब्द से खाली जगह भरो–

(क) अशोक चक्र में ____________ आरे हैं।

(ख) चारों तरफ न्यायमंत्री के ____________ की धूम मच गई।

(ग) चीकू को दूर तक फैला ____________ बहुत अच्छा लगा।

(घ) बसंत ऋतु में धरती ____________ हो जाती है।

(ङ) केरल की मातृभाषा ____________ है।

3. सही वाक्य के सामने (3) तथा गलत के समाने (7) का निशान लगाइए–

(क) तुम दोनों तो केवल साधन मात्र हो। ☐

(ख) केरल भारत के दक्षिण भाग में है। ☐

(ग) ऑक्टोपस के आठ हाथ होते हैं। ☐

(घ) सम्राट के स्थान पर इनकी मूर्ति को फाँसी पर लटका दिया जाए। ☐

(ङ) भारत एक बहुत छोटा देश है। ☐

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) श्रेष्ठता का निर्णय करवाने के लिए इंद्रियाँ किसके पास गईं?

(ख) सफ़ेद रंग क्या प्रकट करता है।

(ग) सम्राट अशोक ने अपने पहरेदार की हत्या क्यों कर दी?

(घ) चींकू ने समुद्र में और कौन-कौन से जीव देखे?

(ङ) कोयल कौन-सी ऋतु में मीठे गाने गाती है?

5. **दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए–**

मेहनत	– ____________	यात्रा	– ____________
नज़र	– ____________	ऋण	– ____________
संदेह	– ____________	सहायता	– ____________
मित्र	– ____________	अपराध	– ____________

6. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–**

माँ	– ____________	____________
पेड़	– ____________	____________
नदी	– ____________	____________
विनती	– ____________	____________
आँख	– ____________	____________
राजा	– ____________	____________

7. **नीचे दिए गए शब्दों के विलोम लिखिए–**

उत्तर	– ____________	देश	– ____________
शिक्षा	– ____________	समान	– ____________
अपना	– ____________	आशा	– ____________
अधिकार	– ____________	फ़ायदा	– ____________

प्रश्न-पत्र (Test-Paper) – II

समयः 1 घंटा | **अंक-40**

1. सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

(क) बैंक को क्षमादान किसने दिया?

निकोलस ने ☐ सेनानायक ने ☐ क्रॉमवेल ने ☐

(ख) जुम्मन की पत्नी का क्या नाम था?

करीमन ☐ नसीमन ☐ महरीना ☐

(ग) चाय की पत्तियाँ साल में कितनी बार तोड़ी जाती है?

तीन ☐ दो ☐ चार ☐

(घ) जाड़े की ऋतु में गुरूजी की देह से छूटने लगा?

पसीना ☐ खून ☐ पानी ☐

(ङ) तेनाली रामन क्या था—

अभिनेता ☐ सेनापति ☐ विदूषक ☐

2. सही शब्द से खाली जगह भरो–

(क) वेल्मा को ________ मील दूर एक अस्पताल में लेकर गए।

(ख) चलते-चलते राजा महात्मा ________ के आश्रम में पहुंचे।

(ग) इतने बड़े राजा के दरबार में प्रवेश पाना ________ न था।

(घ) मकान की छत सब जगह से ________ हो रही है।

(ङ) 'टाइगर हिल' से हिमालय की ________ दिखाई देती है।

3. सही वाक्य के सामने (3) तथा गलत के समाने (7) का निशान लगाइए–

(क) बातचीत में बहुत देर हो गई थी। ☐

(ख) राजीव 'टूर' पर दार्जिलिंग जाना चाहता था। ☐

(ग) बेटी, रात-भर बहुत अच्छी नींद आई। ☐

(घ) 'टाइगर हिल' जगह काजीरंगा में स्थित है। ☐

(ङ) गुरूजी छड़ी से मच्छरों को भगाते रहे। ☐

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) दोनों प्रकार के विद्यालय में कितना शुल्क देना पड़ता था?

(ख) राजा को कैसे व्यक्ति की तलाश थी?

(ग) नदी ने अपनी सखी के साथ क्या बुरा व्यवहार किया?

(घ) रामन ने कहाँ जाने का निश्चय किया?

(ङ) जाड़ों में भी गुरू जी महाराज को पसीना क्यों आ गया था?

5. **दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए–**

साधारण	– ______________	निर्णय	– ______________
संतुष्ट	– ______________	अँधेरा	– ______________
लाभ	– ______________	निराशा	– ______________
सहमत	– ______________	व्यर्थ	– ______________

6. **दिए गए वाक्यों को उचित मुहावरे लिखकर पूरा कीजिए–**

फूले न समाए, आनंद से फूल उठे, मैल धुल गया,
कलेजा धक–धक करने लगा, सिर–माथे चढ़ाऊँगी।

(क) खाला ने कहा – "मैं पंचों की बात ______________।"

(ख) अलगू चौधरी का नाम सुनकर जुम्मन ______________।

(ग) फ़ैसला सुनकर अलगू चौधरी ______________।

(घ) दोनों के दिलों का ______________।

(ङ) अलगू चौधरी का ______________।

7. **नीचे दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए–**

स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग
महिला	–	______________	सेठ	–	______________
लड़की	–	______________	युवक	–	______________
मालिन	–	______________	सम्राट	–	______________
अभिनेत्री	–	______________	विद्वान	–	______________
कवयित्री	–	______________	बादशाह	–	______________